'बणजारा' शब्द का गुरु ग्रंथ साहिब में उल्लेख



हरियाणा पंजाबी साहित्य अकादमी, पंचकूला

‘बणजारा’ शब्द का गुरु ग्रंथ साहिब में उल्लेख

अर्थकार

गगनदीप सिंह
हरियाणा सिविल सर्विसेज ऑफीसर

गुरविन्दर सिंह
उपाध्यक्ष हरियाणा पंजाबी साहित्य अकादमी, पंचकूला
चेयरमैन, लोहगढ़ ट्रस्ट
महासचिव, हरियाणा सिक्ख गुरद्वारा मैनेजमैंट कमेटी

जयराम पवार
डिप्टी कलेक्टर, महाराष्ट्र

प्रकाशकः हरियाणा पंजाबी साहित्य अकादमी, पंचकूला
आई.पी.-16 सैक्टर-14, पंचकूला (हरियाणा)

ISBN- 978-81-955000-7-9

पहला संस्करण : 2023

हरियाणा पंजाबी साहित्य अकादमी

आई.पी.-16, सैक्टर-14 पंचकूला

फोन: 0172-2972071, 2577798

Email: hpsaa55@gmail.com

haryanapunjabisahityaacademy.com

भारत में छपी

विशेष धन्यवाद

स. दलेर सिंह लुबाणा

प्रधान एंड मैनेजमैंट गुरुद्वारा बाबा मक्खण शाह लुबाणा, सिक्ख सैंटर, न्यूयार्क, यू.एस.ए

स. सुखजिंदर सिंह

प्रधान, गुरुद्वारा संत माझा सिंह कर्मजोत सिक्ख सैंटर, न्यूयार्क, यू.एस.ए

स. गुरमेज सिंह लुबाणा

पूर्व प्रधान, गुरुद्वारा बाबा मक्खण शाह न्यूयार्क, यू.एस.ए

अकाल गतका गुरमति ग्रुप, न्यूयार्क, यू.एस.ए

स. वरिंदरपाल सिंह, देहरादून

स. मलकीत सिंह, कैनेडा

स. अमरजीत सिंह, लोस एंजलस

सच्च खंड गुरु नानक दरबार न्यूयार्क, यू.एस.ए

श्री गुरु रविदास टैंपल जैकसन हाईटस, न्यूयार्क, यू.एस.ए

बेगोवाल वैलफेयर सोसाईटी लुबाणा, यू.एस.ए

मिआनी वैलफेयर सोसाईटी लुबाणा, यू.एस.ए

गुरु नानक दरबार आफ लोंग आईलैंड, न्यूयार्क, यू.एस.ए

गुरुद्वारा संत सागर न्यूयार्क, यू.एस.ए

गुरुद्वारा पलेनव्यू न्यूजर्सी, यू.एस.ए

गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज बाणी 31 रागों में है। इन रागों का विवरण इस प्रकार है।

1. सिरी रागु
2. रागु माझ
3. रागु गउड़ी
4. रागु आसा
5. रागु गूजरी
6. रागु देवगंधारी
7. रागु बिहागड़ा
8. रागु वडहंसु
9. रागु सोरठि
10. रागु धनासरी
11. रागु जैतसरी
12. रागु टोडी
13. रागु बैराड़ी
14. रागु तिलंग
15. रागु सूही
16. रागु बिलावलु
17. रागु गोंड
18. रागु रामकली
19. रागु नट नाराइन
20. रागु माली गउड़ा
21. रागु मारू
22. रागु तुखारी
23. रागु केदारा
24. रागु भैरउ
25. रागु बसंतु
26. रागु सारग
27. रागु मलार
28. रागु कानड़ा
29. रागु कलिआन
30. रागु प्रभाती
31. रागु जैजावंती

अनुक्रमिका

भूमिका

गुरु नानक साहिब सच्च की क्रांति को विश्व भर में लेकर आए और एक परम पिता परमात्मा से जुडने का सिद्दांत पुरी मानवता को दिया। गुरु नानक साहिब के द्वारा पुरे विश्व का भ्रमण बंजारों के टांडों के साथ किया और जगह-जगह पर बंजारों को मसंद (सिक्ख प्रचारक) नियुक्त किया गया और धर्मशाल (प्रचार केंदर) स्थापित किए गए। इस मुहिम के चलते हुए विश्व भर के धारमिक नेता, आर्थिक नेता और राजनीतिक व्यक्ति गुरु नानक साहिब की विचारधारा के साथ जुड गए। गुरु नानक साहिब ने बाणी को पोथी साहिब में लिखने का कार्य आरंभ किया। इस विचारधारा में एक परम पिता प्रमात्मा के सिद्धांत को मानने के साथ-साथ राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, समाजिक, लैंगिक बराबरी का सिद्धांत भी दिया। गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज अनेकों सलोकों में वणजारों का जिकर आता है। बंजारे सिक्खों ने गुरु नानक साहिब के हलीमी राज की स्थापना के लिए तन, मन, धन से योगदान दिया और मुगल राज की जडें उखाड फैंकी।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में जिन 35 महांपुरुषों की बाणी दर्ज है, उन महांपुरुषों के नाम :- 1. गुरु नानक साहिब 2. गुरु अंगद साहिब 3. गुरु अमर दास साहिब 4. गुरु राम दास साहिब 5. गुरु अर्जन साहिब 6. गुरु तेग बहादुर साहिब 7. भगत कबीर साहिब 8. भगत जयदेव साहिब 9. भगत त्रिलोचन साहिब 10. भगत धन्ना साहिब 11. भगत नामदेव साहिब 12. भगत परमानंद साहिब 13. भगत पीपा साहिब 14. भगत बेणी साहिब 15. भगत भीखन साहिब 16. भगत रविदास साहिब 17. भगत रामानंद साहिब 18. भगत सधना साहिब 19. भगत सूरदास साहिब 20. शेख फरीद साहिब 21. भगत सैण साहिब 22. भाई सुंदर साहिब 23. राए बलवंड साहिब 24. भाई सता साहिब 25. भट्ट कल सहार साहिब 26. भट्ट जालप साहिब 27. भट्ट कीरत साहिब 28. भट्ट भीखा साहिब 29. भट्ट सल साहिब 30. भट्ट भल साहिब 31. भट्ट नल साहिब 32. भट्ट बल साहिब 33. भट्ट गयंद साहिब 34. भट्ट हरिबंस साहिब 35. भट्ट मथरा साहिब।

गुरु ग्रंथ साहिब मैँ अंकित भगत रविदास जी के श्लोक ....**को बंजारो राम को मेरा टांडा लादिया जाए रे॥**' गुरबाणी में बंजारों और टाडों का जिक्र साफ तौर पर आता हैं। चौथे नानक गुरु रामदास साहिब की जो बाणी गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज है उसका सिरलेख श्री राग महल्ला 4 वणजारा है।

पांचवे नानक गुरु अरजन साहिब ने अपनी बाणी के साथ-साथ पूर्व गुरुओं की बाणी, भक्तों, संतों और सूफियों की बाणी को भाई गुरदास जी से लिखवाया। यह कार्य 1604 ई. में समपन्न हुआ और दरबार साहिब अमृतसर में इस ग्रंथ को **पोथी परमेशर का थान** कह कर प्रकाशित किया गया। नौवें गुरु तेग बहादुर साहिब द्वारा रचित 59 शब्द और 57 श्लोक दमदमा साहिब में दसवें नानक गुरु गोबिंद सिंह जी द्वारा दरज किए गए। गुरु ग्रंथ साहिब की कई प्रतिलिपियां गुरु गोबिंद सिंह जी की अगुवाई में भाई मनी सिंह बंजारा द्वारा तैयार की गई।

गुरु नानक साहिब

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-22

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥

sireeraag mehlaa 1.

सिरीरागु महला १ ॥

ਵਣਜੁ ਕਰਹੁ ਵਣਜਾਰਿਹੋ ਵਖਰੁ ਲੇਹੁ ਸਮਾਲਿ ॥

vanaj karahu vanjaariho vakhar layho samaal.

वणजु करहु वणजारिहो वखरु लेहु समालि ॥

अर्थ : हे जीव वणजारो ! नाम रूपी वणज करो और सौदा सम्भाल कर रख लो।

ਤੈਸੀ ਵਸਤੁ ਵਿਸਾਹੀਐ ਜੈਸੀ ਨਿਬਹੈ ਨਾਲਿ ॥

taisee vasat visaahee-ai jaisee nibhai naal.

तैसी वसतु विसाहीऐ जैसी निबहै नालि ॥

अर्थ : ऐसी वस्तु का क्रय करो जो सदा तुम्हारे साथ रहे।

ਅਗੈ ਸਾਹੁ ਸੁਜਾਣੁ ਹੈ ਲੈਸੀ ਵਸਤੁ ਸਮਾਲਿ ॥੧॥

agai saahu sujaan hai laisee vasat samaal.||1||

अगै साहु सुजाणु है लैसी वसतु समालि ॥१॥

अर्थ : आगे परलोक में परमात्मा रूपी सौदागर बहुत सूझवान बैठा है, वह तुम्हारी वस्तु की सम्भाल कर लेगा। अर्थात्-तुम्हारे सौदे को वह जांच-परख कर ही ग्रहण करेगा॥१॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-56

सिरीरागु महला ॥१॥

ਲਾਹਾ ਅਹਿਨਿਸਿ ਨਉਤਨਾ ਪਰਖੇ ਰਤਨੁ ਵੀਚਾਰਿ ॥

laahaa ahinis na-o<u>t</u>anaa par<u>kh</u>ay ra<u>t</u>an veechaar.

लाहा अहिनिसि नउतना परखे रतनु वीचारि ॥

अर्थ : जो नाम-रत्न का ध्यान से सिमरन करता है, उसे नित्य अधिक लाभ मिलता है।

ਵਸਤੁ ਲਹੈ ਘਰਿ ਆਪਣੈ ਚਲੈ ਕਾਰਜੁ ਸਾਰਿ ॥

vasa<u>t</u> lahai <u>gh</u>ar aap<u>n</u>ai chalai kaaraj saar.

वसतु लहै घरि आपणै चलै कारजु सारि ॥

अर्थ : वह नाम रूपी वस्तु को अपने हृदय गृह में ही पा लेता है और अपने कार्य को संवार गमन करता है अर्थात् जीवन में शुभ कर्म करके अपने जीवन को सफल करके परमात्मा में विलीन हो जाता है।

ਵਣਜਾਰਿਆ ਸਿਉ ਵਣਜੁ ਕਰਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਬੀਚਾਰਿ ॥੩॥

va<u>n</u>jaari-aa si-o va<u>n</u>aj kar gurmu<u>kh</u> barahm beechaar. ||3||

वणजारिआ सिउ वणजु करि गुरमुखि ब्रहमु बीचारि॥३॥

अर्थ : ईश्वर के वणजारे (भक्तों) के साथ वणज (भक्ति) करो और अपने गुरु से मिलकर परमेश्वर का चिंतन करो ॥३॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-59

सिरीरागु महला ॥१॥

ਵਾਪਾਰੀ ਵਣਜਾਰਿਆ ਆਏ ਵਜਹੁ ਲਿਖਾਇ ॥

vaapaaree van̲jaari-aa aa-ay vajahu likh̲aa-ay.

वापारी वणजारिआ आए वजहु लिखाइ ॥

अर्थ : जीव वणजारे हैं। वह जगत् में नाम का वणज करने आते हैं। वह प्रभु के दरबार में अपना लेखा लिखवाकर लाते हैं।

ਕਾਰ ਕਮਾਵਹਿ ਸਚ ਕੀ ਲਾਹਾ ਮਿਲੈ ਰਜਾਇ ॥

kaar kamaaveh sach kee laahaa milai rajaa-ay.

कार कमावहि सच की लाहा मिलै रजाइ ॥

अर्थ : जो सत्य की कमाई करते हैं और ईश्वर की इच्छा को स्वीकार करते हैं। वह कर्म का लाभ कमाते हैं।

ਪੂੰਜੀ ਸਾਚੀ ਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਨਾ ਤਿਸੁ ਤਿਲੁ ਨ ਤਮਾਇ ॥੬॥

poonjee saachee gur milai naa t̲is t̲il na t̲amaa-ay. ||6||

पूंजी साची गुरु मिलै ना तिसु तिलु न तमाइ ॥६॥ सिरीरागु महला १ ॥

अर्थ : सत्य की पूँजी द्वारा वही गुरु प्राप्त करते हैं, जिनको तुल्य मात्र भी लोभ-लालच नहीं ॥ ६॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-74

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ॥

ik-oaNkaar satgur parsaad.

ੴ सतिगुर प्रसादि॥

अर्थ : ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ਪਹਰੇ ਘਰੁ ੧ ॥

sireeraag mehlaa 1 pahray ghar 1.

सिरीरागु महला १ पहरे घरु १ ॥

ਪਹਿਲੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣਿ ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਹੁਕਮਿ ਪਇਆ ਗਰਭਾਸਿ ॥

pahilai pahrai rain kai vanjaari-aa mitraa hukam pa-i-aa garbhaas.

पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा हुकमि पइआ गरभासि ॥

अर्थ : हे मेरे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के प्रथम प्रहर में ईश्वर के आदेशानुसार प्राणी माता के गर्भ में आता है।

ਉਰਧ ਤਪੁ ਅੰਤਰਿ ਕਰੇ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਖਸਮ ਸੇਤੀ ਅਰਦਾਸਿ ॥

uraDh tap antar karay vanjaari-aa mitraa khasam saytee ardaas.

उरध तपु अंतरि करे वणजारिआ मित्रा खसम सेती अरदासि ॥

अर्थ : हे मेरे वणजारे मित्र ! वह गर्भ में उल्टा लटका हुआ तपस्या करता है और भगवान के समक्ष प्रार्थना करता रहता है।

ਖਸਮ ਸੇਤੀ ਅਰਦਾਸਿ ਵਖਾਣੈ ਉਰਧ ਧਿਆਨਿ ਲਿਵ ਲਾਗਾ ॥

khasam saytee ardaas vakhaanai uraDh Dhi-aan liv laagaa.

खसम सेती अरदासि वखाणै उरध धिआनि लिव लागा ॥

अर्थ : वह उलटा लटका हुआ भगवान के ध्यान में सुरति लगाता है।

ਨਾ ਮਰਜਾਦੁ ਆਇਆ ਕਲਿ ਭੀਤਰਿ ਬਾਹੁੜਿ ਜਾਸੀ ਨਾਗਾ ॥

naa marjaa<u>d</u> aa-i-aa kal <u>bh</u>ee<u>t</u>ar baahu<u>rh</u> jaasee naagaa.

ना मरजादु आइआ कलि भीतरि बाहुड़ि जासी नागा ॥

अर्थ : वह रस्मों की मर्यादा के बिना दुनिया में नग्न आता है और मरणोपरांत नग्न ही जाता है।

ਜੈਸੀ ਕਲਮ ਵੁੜੀ ਹੈ ਮਸਤਕਿ ਤੈਸੀ ਜੀਅੜੇ ਪਾਸਿ ॥

jaisee kalam vu<u>rh</u>ee hai mas<u>t</u>ak <u>t</u>aisee jee-a<u>rh</u>ay paas.

जैसी कलम वुड़ी है मसतकि तैसी जीअड़े पासि ॥

अर्थ : विधाता ने प्राणी के कर्मानुसार उसके मस्तक पर जो भाग्य रेखाएँ खींच दी हैं, उसी के अनुसार उसे सुख-दुख उपलब्ध होते हैं।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਣੀ ਪਹਿਲੈ ਪਹਰੈ ਹੁਕਮਿ ਪਇਆ ਗਰਭਾਸਿ ॥੧॥

kaho naanak paraa<u>n</u>ee pahilai pahrai hukam pa-i-aa gar<u>bh</u>aas. ||1||

कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै हुकमि पइआ गरभासि ॥१॥

अर्थ : गुरु नानक देव जी कहते हैं कि रात्रि के प्रथम-प्रहर में ईश्वर की इच्छानुसार प्राणी गर्भ में प्रवेश करता है।॥१॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-75

ਦੂਜੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣਿ ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਵਿਸਰਿ ਗਇਆ ਧਿਆਨੁ ॥
doojai pahrai rain kai vanjaari-aa mitraa visar ga-i-aa Dhi-aan.
दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा विसरि गइआ धिआनु ॥
अर्थ : हे मेरे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के द्वितीय प्रहर में मनुष्य परमेश्वर के सिमरन को विस्मृत कर देता है। अर्थात्-जब प्राणी गर्भ से बाहर आता और जन्म लेता है तो गर्भ में की गई प्रार्थना को भूल जाता है।

ਹਥੋ ਹਥਿ ਨਚਾਈਐ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਜਿਉ ਜਸੁਦਾ ਘਰਿ ਕਾਨੁ ॥
hatho hath nachaa-ee-ai vanjaari-aa mitraa ji-o jasudaa ghar kaan.
हथो हथि नचाईऐ वणजारिआ मित्रा जिउ जसुदा घरि कानु ॥
अर्थ : उसके परिजन, भाई-बन्धु सब उसे ऐसे नचाते हैं, हर्षित होते हैं, जैसे यशोदा के घर कानह को नचाया जाता था।

ਹਥੋ ਹਥਿ ਨਚਾਈਐ ਪ੍ਰਾਣੀ ਮਾਤ ਕਹੈ ਸੁਤੁ ਮੇਰਾ ॥
hatho hath nachaa-ee-ai paraanee maat kahai sut mayraa.
हथो हथि नचाईऐ प्राणी मात कहै सुतु मेरा ॥
अर्थ : हे मेरे वणजारे मित्र ! परिवार के समस्त लोग नश्वर प्राणी उस बच्चे को उछालते-खेलाते हैं और माता मोह-वश उसे अपना पुत्र कहकर बड़ा मान करती है।

ਚੇਤਿ ਅਚੇਤ ਮੂੜ ਮਨ ਮੇਰੇ ਅੰਤਿ ਨਹੀ ਕਛੁ ਤੇਰਾ ॥
chayt achayt moorh man mayray ant nahee kachh tayraa.
चेति अचेत मूड़ मन मेरे अंति नही कछु तेरा ॥
अर्थ : हे मेरे अज्ञानी एवं मूर्ख मन ! परमात्मा को स्मरण कर। अंतकाल तेरा कोई साथी नहीं होना।

ਜਿਨਿ ਰਚਿ ਰਚਿਆ ਤਿਸਹਿ ਨ ਜਾਣੈ ਮਨ ਭੀਤਰਿ ਧਰਿ ਗਿਆਨੁ ॥
jin rach rachi-aa tiseh na jaanai man bheetar Dhar gi-aan.
जिनि रचि रचिआ तिसहि न जाणै मन भीतरि धरि गिआनु ॥
अर्थ : तू उसको नहीं समझता जिसने रचना रची है। अब तू अपने मन में ज्ञान प्राप्त कर ले।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਣੀ ਦੂਜੈ ਪਹਰੈ ਵਿਸਰਿ ਗਇਆ ਧਿਆਨੁ ॥੨॥
kaho naanak paraanee doojai pahrai visar ga-i-aa Dhi-aan. ||2||
कहु नानक प्राणी दूजै पहरै विसरि गइआ धिआनु ॥२॥
अर्थ : गुरु जी कहते हैं कि रात्रि के द्वितीय प्रहर में प्राणी परमेश्वर का ध्यान भुला देता है ॥२॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-75

ਤੀਜੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣਿ ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਧਨ ਜੋਬਨ ਸਿਉ ਚਿਤੁ ॥
teejai pahrai rain kai vanjaari-aa mitraa Dhan joban si-o chit.
तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा धन जोबन सिउ चितु ॥
अर्थ : हे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के तृतीय प्रहर में प्राणी का मन, धन-यौवन (स्त्री-यौवन) में रम जाता है।

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਨ ਚੇਤਹੀ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਬਧਾ ਛੁਟਹਿ ਜਿਤੁ ॥

har kaa naam na chaythee vanjaari-aa mitraa baDhaa chhuteh jit.

हरि का नामु न चेतही वणजारिआ मित्रा बधा छुटहि जितु ॥

अर्थ : वह हरि-नाम का चिंतन नहीं करता, जिसके द्वारा वह संसार-बंधन से मुक्ति पा सकता है।

ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਨ ਚੇਤੈ ਪ੍ਰਾਣੀ ਬਿਕਲੁ ਭਇਆ ਸੰਗਿ ਮਾਇਆ ॥

har kaa naam na chaytai paraanee bikal bha-i-aa sang maa-i-aa.

हरि का नामु न चेतै प्राणी बिकलु भइआ संगि माइआ ॥

अर्थ : नश्वर प्राणी प्रभु के नाम का सुमिरन नहीं करता और सांसारिक पदार्थों के साथ व्याकुल रहता है।

ਧਨ ਸਿਉ ਰਤਾ ਜੋਬਨਿ ਮਤਾ ਅਹਿਲਾ ਜਨਮੁ ਗਵਾਇਆ ॥

Dhan si-o rataa joban mataa ahilaa janam gavaa-i-aa.

धन सिउ रता जोबनि मता अहिला जनमु गवाइआ ॥

अर्थ : वह भार्या-प्रेम की आसक्ति और यौवन की मस्ती में ऐसा लीन हो जाता है कि इस अमूल्य जीवन को व्यर्थ ही गंवा देता है।

ਧਰਮ ਸੇਤੀ ਵਾਪਾਰੁ ਨ ਕੀਤੋ ਕਰਮੁ ਨ ਕੀਤੋ ਮਿਤੁ ॥

Dharam saytee vaapaar na keeto karam na keeto mit.

धरम सेती वापारु न कीतो करमु न कीतो मितु ॥

अर्थ : वह न तो धर्मानुसार आचरण करता है और न ही शुभ कर्मों के साथ मैत्री बनाता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤੀਜੈ ਪਹਰੈ ਪ੍ਰਾਣੀ ਧਨ ਜੋਬਨ ਸਿਉ ਚਿਤੁ ॥੩॥

kaho naanak teejai pahrai paraanee Dhan joban si-o chit. ||3||

कहु नानक तीजै पहरै प्राणी धन जोबन सिउ चितु ॥३॥

अर्थ : गुरु जी कहते हैं कि हे नानक ! मनुष्य का जीवन रूपी तृतीय प्रहर भी धन-यौवन की तृष्णा में नष्ट हो जाता है॥३॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-75

ਚਉਥੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣਿ ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਲਾਵੀ ਆਇਆ ਖੇਤੁ ॥

cha-uthai pahrai rain kai vanjaari-aa mitraa laavee aa-i-aa khayt.

चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा लावी आइआ खेतु ॥

अर्थ : हे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के चौथे प्रहर (वृद्धावस्था) में जीवन-रूपी कृषि को काटने के लिए यमदूत उपस्थित हो जाते हैं अर्थात् देहि की कृषि तब तक पककर कटने को तैयार हो जाती है।

ਜਾ ਜਮਿ ਪਕੜਿ ਚਲਾਇਆ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਕਿਸੈ ਨ ਮਿਲਿਆ ਭੇਤੁ ॥

jaa jam pakarh chalaa-i-aa vanjaari-aa mitraa kisai na mili-aa bhayt.

जा जमि पकड़ि चलाइआ वणजारिआ मित्रा किसै न मिलिआ भेतु ॥

अर्थ : हे वणजारे मित्र ! जब यमदूत उसको पकड़कर चल देते हैं तो प्राणों के अलग होने का रहस्य किसी को भी पता नहीं चलता।

ਭੇਤੁ ਚੇਤੁ ਹਰਿ ਕਿਸੈ ਨ ਮਿਲਿਓ ਜਾ ਜਮਿ ਪਕੜਿ ਚਲਾਇਆ ॥

bhayt chayt har kisai na mili-o jaa jam pakarh chalaa-i-aa.

भेतु चेतु हरि किसै न मिलिओ जा जमि पकड़ि चलाइआ ॥

अर्थ : इस रहस्य बारे कि कब यमदूतों ने प्राणी को पकड़कर आगे ले जाना है, किसी को भी पता नहीं लगा।

ਝੂਠਾ ਰੁਦਨੁ ਹੋਆ ਦੋੁਆਲੈ ਖਿਨ ਮਹਿ ਭਇਆ ਪਰਾਇਆ ॥

jhoothaa rudan ho-aa do-aalai khin meh bha-i-aa paraa-i-aa.

झूठा रुदनु होआ दोआलै खिन महि भइआ पराइआ ॥

अर्थ : सो हरि का चिन्तन कर, हे मनुष्य ! झूठा है रुदन उसके आसपास। एक क्षण में ही प्राणी परदेसी हो जाता है।

ਸਾਈ ਵਸਤੁ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਈ ਜਿਸੁ ਸਿਉ ਲਾਇਆ ਹੇਤੁ ॥

saa-ee vasat paraapat ho-ee jis si-o laa-i-aa hayt.

साई वसतु परापति होई जिसु सिउ लाइआ हेतु ॥

अर्थ : आगामी लोक में प्राणी को वही उपलब्धि होती है, जिसमें उसने चित्त एकाग्र किया होता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਣੀ ਚਉਥੈ ਪਹਰੈ ਲਾਵੀ ਲੁਣਿਆ ਖੇਤੁ ॥੪॥੧॥

kaho naanak paraanee ha-uthai pahrai laavee luni-aa khayt. ||4||1||

कहु नानक प्राणी चउथै पहरै लावी लुणिआ खेतु ॥४॥१॥

अर्थ : गुरु नानक देव जी कहते हैं कि हे नानक ! जीवन रूपी चौथे प्रहर में मानव जीवन पक्की खेती लावी द्वारा काट ली जाती है। अर्थात् वृद्धावस्था में देहि का अन्त निकट आ जाता है और समय पर यमदूत प्राणी को पकड़ कर ले जाते हैं ॥४॥१॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-75

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ॥

sireeraag mehlaa 1.

सिरीरागु महला १ ॥

ਪਹਿਲੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣਿ ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਬਾਲਕ ਬੁਧਿ ਅਚੇਤੁ ॥

pahilai pahrai rain kai vanjaari-aa mitraa baalak buDh achayt.

पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा बालक बुधि अचेतु ॥

अर्थ :हे मेरे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के प्रथम प्रहर में जीव बालक बुद्धि वाला एवं ज्ञानहीन होता है।

ਖੀਰੁ ਪੀਐ ਖੇਲਾਈਐ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਸੁਤ ਹੇਤੁ ॥

kheer pee-ai khaylaa-ee-ai vanjaari-aa mitraa maat pitaa sut hayt.

खीरु पीऐ खेलाईऐ वणजारिआ मित्रा मात पिता सुत हेतु ॥

अर्थ :बालक माता का दूध पीता है और उससे बड़ा लाड-प्यार किया जाता है। हे मेरे वणजारे मित्र ! माता-पिता अपने बालक से बड़ा अनुराग करते हैं।

ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਸੁਤ ਨੇਹੁ ਘਨੇਰਾ ਮਾਇਆ ਮੋਹੁ ਸਬਾਈ ॥

maat pitaa sut nayhu ghanayraa maa-i-aa moh sabaa-ee.

मात पिता सुत नेहु घनेरा माइआ मोहु सबाई ॥

अर्थ : संसार में व्याप्त मोह-माया के कारण माता-पिता स्नेह में उसके पोषण में उठाए कष्टों की भी उपेक्षा कर देते हैं।

ਸੰਜੋਗੀ ਆਇਆ ਕਿਰਤੁ ਕਮਾਇਆ ਕਰਣੀ ਕਾਰ ਕਰਾਈ ॥
sanjogee aa-i-aa kirat kamaa-i-aa karnee kaar karaa-ee.
संजोगी आइआ किरतु कमाइआ करणी कार कराई ॥
अर्थ : संयोग और पूर्व जन्मों के कर्मों की बदौलत प्राणी संसार में आता है और अब अपनी अगली जीवन मर्यादा के लिए कर्म कर रहा है।

ਰਾਮ ਨਾਮ ਬਿਨੁ ਮੁਕਤਿ ਨ ਹੋਈ ਬੂਡੀ ਦੂਜੈ ਹੇਤਿ ॥
raam naam bin mukat na ho-ee boodee doojai hayt.
राम नाम बिनु मुकति न होई बूडी दूजै हेति ॥
अर्थ : राम नाम के बिना मुक्ति नहीं हो सकती और द्वैत भाव में लीन रहने के कारण समूची सृष्टि का विनाश हो जाता है।
ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਣੀ ਪਹਿਲੈ ਪਹਰੈ ਛੂਟਹਿਗਾ ਹਰਿ ਚੇਤਿ ॥੧॥
kaho naanak paraanee pahilai pahrai chhootahigaa har chayt. ||1||
कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै छूटहिगा हरि चेति ॥१॥
अर्थ : हे नानक ! प्राणी जीवन रूपी रात्रि के प्रथम प्रहर में भगवान का नाम-सिमरन करके ही जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो सकता है।॥१॥

ਦੂਜੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣਿ ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਭਰਿ ਜੋਬਨਿ ਮੈ ਮਤਿ ॥
doojai pahrai rain kai vanjaari-aa mitraa bhar joban mai mat.
दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा भरि जोबनि मै मति ॥
अर्थ : हे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के द्वितीय प्रहर में प्राणी यौवन की भरपूर मस्ती में मस्त रहता है।

ਅਹਿਨਿਸਿ ਕਾਮਿ ਵਿਆਪਿਆ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਅੰਧੁਲੇ ਨਾਮੁ ਨ ਚਿਤਿ ॥
ahinis kaam vi-aapi-aa vanjaari-aa mitraa anDhulay naam na chit.

अहिनिसि कामि विआपिआ वणजारिआ मित्रा अंधुले नामु न चिति

अर्थ : हे वणजारे मित्र ! दिन-रात वह भोग-विलास में आसक्त रहता है और उस अज्ञानी को भगवान का नाम याद ही नहीं आता।

ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਘਟ ਅੰਤਰਿ ਨਾਹੀ ਹੋਰਿ ਜਾਣੈ ਰਸ ਕਸ ਮੀਠੇ ॥

raam naam ghat antar naahee hor jaanai ras kas meethay.

राम नामु घट अंतरि नाही होरि जाणै रस कस मीठे ॥

अर्थ : राम नाम उसके हृदय में नहीं बसता। वह अन्यों रसों को ही मीठा समझता है।

ਗਿਆਨੁ ਧਿਆਨੁ ਗੁਣ ਸੰਜਮੁ ਨਾਹੀ ਜਨਮਿ ਮਰਹੁਗੇ ਝੂਠੇ ॥

gi-aan Dhi-aan gun sanjam naahee janam marhugay jhoothay.

गिआनु धिआनु गुण संजमु नाही जनमि मरहुगे झूठे ॥

अर्थ : जिन्हें प्रभु बारे कोई ज्ञान नहीं, जो भगवान का ध्यान नहीं करते, जो प्रभु की महिमा को स्मरण नहीं करते, जो संयम नहीं करते, ऐसे झूठे प्राणी जन्मते-मरते रहेंगे।

ਤੀਰਥ ਵਰਤ ਸੁਚਿ ਸੰਜਮੁ ਨਾਹੀ ਕਰਮੁ ਧਰਮੁ ਨਹੀ ਪੂਜਾ ॥

tirath varat such sanjam naahee karam Dharam nahee poojaa.

तीरथ वरत सुचि संजमु नाही करमु धरमु नही पूजा ॥

अर्थ : जिन्हें प्रभु बारे कोई ज्ञान नहीं, जो भगवान का ध्यान नहीं करते, जो प्रभु की महिमा को स्मरण नहीं करते, जो संयम नहीं करते, ऐसे झूठे प्राणी जन्मते-मरते रहेंगे।

ਨਾਨਕ ਭਾਇ ਭਗਤਿ ਨਿਸਤਾਰਾ ਦੁਬਿਧਾ ਵਿਆਪੈ ਦੂਜਾ ॥੨॥

naanak bhaa-ay bhagat nistaaraa dubiDhaa vi-aapai doojaa. ||2||

नानक भाइ भगति निसतारा दुबिधा विआपै दूजा ॥२॥

अर्थ : ऐसे प्राणियों का प्रेमपूर्वक भगवान की भक्ति करने से उद्धार हो जाता है। दुविधा में फँसे हुए जीवों को माया का मोह लगा रहता है। ॥२॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-75

ਤੀਜੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣਿ ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਸਰਿ ਹੰਸ ਉਲਥੜੇ ਆਇ ॥

teejai pahrai rain kai vanjaari-aa mitraa sar hans ultharhay aa-ay.

तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा सरि हंस उलथड़े आइ ॥

अर्थ : हे मेरे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के तृतीय प्रहर में शरीर-सरोवर पर हंस आ बैठते हैं अर्थात् प्राणी के सिर पर सफेद बाल पकने लगते हैं।

ਜੋਬਨੁ ਘਟੈ ਜਰੂਆ ਜਿਣੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਆਵ ਘਟੈ ਦਿਨੁ ਜਾਇ ॥

joban ghatai jaroo-aa jinai vanjaari-aa mitraa aav ghatai din jaa-ay.

जोबनु घटै जरूआ जिणै वणजारिआ मित्रा आव घटै दिनु जाइ ॥

अर्थ : हे वणजारे मित्र ! जीवन बीतने पर शरीर की शक्ति क्षीण हो जाती है और धीरे-धीरे शरीर पर प्रौढ़ावस्था हावी होने लगती है।

ਅੰਤਿ ਕਾਲਿ ਪਛੁਤਾਸੀ ਅੰਧੁਲੇ ਜਾ ਜਮਿ ਪਕੜਿ ਚਲਾਇਆ ॥

ant kaal pachhutaasee anDhulay jaa jam pakarh chalaa-i-aa.

अंति कालि पछुतासी अंधुले जा जमि पकड़ि चलाइआ

अर्थ : अज्ञानी प्राणी, अन्तकाल पश्चाताप करता है, जब यमदूत इसे आ पकड़ते हैं अर्थात् काल आने पर प्राणी पछतावा करने लगता है।

ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਅਪੁਨਾ ਕਰਿ ਕਰਿ ਰਾਖਿਆ ਖਿਨ ਮਹਿ ਭਇਆ ਪਰਾਇਆ ॥

sa<u>bh</u> ki<u>chh</u> apunaa kar kar raa<u>kh</u>i-aa <u>kh</u>in meh <u>bh</u>a-i-aa paraa-i-aa.

सभु किछु अपुना करि करि राखिआ खिन महि भइआ पराइआ ॥

अर्थ : वह सब कुछ जिसे प्रतिदिन वह अपना कहता था, क्षण में ही उससे पराया हो जाता है।

ਬੁਧਿ ਵਿਸਰਜੀ ਗਈ ਸਿਆਣਪ ਕਰਿ ਅਵਗਣ ਪਛੁਤਾਇ ॥

bu<u>Dh</u> visarjee ga-ee si-aa<u>n</u>ap kar avga<u>n</u> pa<u>chh</u>u<u>t</u>aa-ay.

बुधि विसरजी गई सिआणप करि अवगण पछुताइ ॥

अर्थ : यमदूतों के वश पड़ते ही प्राणी का विवेक कुष्ठित हो जाता है। सारी चतुराई धरी रह जाती है और वह अपने अवगुणों को याद कर-करके पछताने लगता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਣੀ ਤੀਜੈ ਪਹਰੈ ਪ੍ਰਭੁ ਚੇਤਹੁ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥੩॥

kaho naanak paraa<u>n</u>ee <u>t</u>eejai pahrai para<u>bh</u> chay<u>t</u>ahu liv laa-ay. ||3||

कहु नानक प्राणी तीजै पहरै प्रभु चेतहु लिव लाइ ॥३॥

अर्थ : नानक ! जीवन रूपी रात्रि के तृतीय प्रहर में चित्त लगाकर भगवान का सिमरन करो ॥३॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-76

ਚਉਥੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣਿ ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਬਿਰਧਿ ਭਇਆ ਤਨੁ ਖੀਣੁ ॥

cha-uthai pahrai rain kai vanjaari-aa mitraa biraDh bha-i-aa tan kheen.

चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा बिरधि भइआ तनु खीणु ॥

अर्थ : हे मेरे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के चतुर्थ प्रहर में शरीर वृद्ध होकर क्षीण हो जाता है। तन में कमजोरी आ जाती है।

ਅਖੀ ਅੰਧੁ ਨ ਦੀਸਈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਕੰਨੀ ਸੁਣੈ ਨ ਵੈਣ ॥

akhee anDh na dees-ee vanjaari-aa mitraa kannee sunai na vain.

अखी अंधु न दीसई वणजारिआ मित्रा कंनी सुणै न वैण ॥

अर्थ : हे मेरे वणजारे मित्र ! आंखों-कानों की शक्ति भी चली जाती है, उसे आंखों से दिखाई नहीं देता और कानों से वह सुन नहीं पाता।

ਅਖੀ ਅੰਧੁ ਜੀਭ ਰਸੁ ਨਾਹੀ ਰਹੇ ਪਰਾਕਉ ਤਾਣਾ ॥

akhee anDh jeebh ras naahee rahay paraaka-o taanaa.

अखी अंधु जीभ रसु नाही रहे पराकउ ताणा ॥

अर्थ : दाँतों की असमर्थता के कारण जिव्हा का रस भी जाता रहता है और वह पराए सहारे की आशा में जीवनयापन करने लगता है।

ਗੁਣ ਅੰਤਰਿ ਨਾਹੀ ਕਿਉ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈ ਮਨਮੁਖ ਆਵਣ ਜਾਣਾ ॥

gun antar naahee ki-o sukh paavai manmukh aavan jaanaa.

गुण अंतरि नाही किउ सुखु पावै मनमुख आवण जाणा ॥

अर्थ :उस मनमुख के भीतर कोई आध्यात्मिक गुण कभी नहीं पनपता, इसलिए उसे सुख कैसे प्राप्त हो। बेचारा यूं ही जीवन-मरण के चक्र में पड़ा रहता है।

ਖੜੁ ਪਕੀ ਕੁੜਿ ਭਜੈ ਬਿਨਸੈ ਆਇ ਚਲੈ ਕਿਆ ਮਾਣੁ ॥

kharh pakee kurh bhajai binsai aa-ay chalai ki-aa maan.

खड़ु पकी कुड़ि भजै बिनसै आइ चलै किआ माणु ॥

अर्थ :शरीर-रूपी खेती पककर झुक जाती है। कभी अपने आप अंग टूटते लगते हैं, शरीर नष्ट हो जाता है। प्राणी के जीवन-मरण की इस लोक में कोई प्रतिष्ठा नहीं रह जाती।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਣੀ ਚਉਥੈ ਪਹਰੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਬਦੁ ਪਛਾਣੁ ॥੪॥

kaho naanak paraanee cha-uthai pahrai gurmukh sabad pachhaan. ||4||

कहु नानक प्राणी चउथै पहरै गुरमुखि सबदु पछाणु ॥४॥

अर्थ : हे नानक ! प्राणी को अपनी जीवन रूपी रात्रि के चतुर्थ प्रहर में गुरु के माध्यम से नाम की पहचान करनी चाहिए ॥४॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-76

ਓੜਕੁ ਆਇਆ ਤਿਨ ਸਾਹਿਆ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਜਰੁ ਜਰਵਾਣਾ ਕੰਨਿ ॥

orhak aa-i-aa tin saahi-aa vanjaari-aa mitraa jar jarvaanaa kann.

ओड़कु आइआ तिन साहिआ वणजारिआ मित्रा जरु जरवाणा कंनि ॥

अर्थ : हे मेरे वणजारे मित्र ! जब जीव को मिले श्वासों का अन्तिम समय निकट आ जाता है तो जालिम बुढापा उसके कंधों पर आ चढ़ता है।

ਇਕ ਰਤੀ ਗੁਣ ਨ ਸਮਾਣਿਆ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਅਵਗਣ ਖੜਸਨਿ ਬੰਨਿ ॥

ik ratee gun na samaani-aa vanjaari-aa mitraa avgan kharhsan bann.

इक रती गुण न समाणिआ वणजारिआ मित्रा अवगण खड़सनि बंनि ॥

अर्थ : हे मेरे वणजारे मित्र ! जिस जीव ने अपने हृदय में कोई गुण संचित नहीं किए उसके अवगुण ही उसे बांधकर ले जाते हैं।

ਗੁਣ ਸੰਜਮਿ ਜਾਵੈ ਚੋਟ ਨ ਖਾਵੈ ਨਾ ਤਿਸੁ ਜੰਮਣੁ ਮਰਣਾ ॥

gun sanjam jaavai chot na khaavai naa tis jaman marnaa.

गुण संजमि जावै चोट न खावै ना तिसु जमणु मर

अर्थ : जो जीव संयम, ध्यान एवं समाधि द्वारा अपने भीतर गुण पैदा करके दुनिया से जाता है, वह यमों की मार नहीं खाता और उसका जन्म-मरण मिट जाता है।णा ॥

ਕਾਲੁ ਜਾਲੁ ਜਮੁ ਜੋਹਿ ਨ ਸਾਕੈ ਭਾਇ ਭਗਤਿ ਭੈ ਤਰਣਾ ॥

kaal jaal jam johi na saakai bhaa-ay bhagat bhai tarnaa.

कालु जालु जमु जोहि न साकै भाइ भगति भै तरणा ॥

अर्थ : वह यम के जाल में नहीं फंसता और यम उसकी तरफ दृष्टि नहीं करता। वह प्रेमपूर्वक भगवान की भक्ति करके भवसागर से पार हो जाता है।

ਪਤਿ ਸੇਤੀ ਜਾਵੈ ਸਹਜਿ ਸਮਾਵੈ ਸਗਲੇ ਦੂਖ ਮਿਟਾਵੈ ॥

pat saytee jaavai sahj samaavai saglay dookh mitaavai.

पति सेती जावै सहजि समावै सगले दूख मिटावै ॥

अर्थ : फिर प्रभु के दरबार में उसे बड़ी शोभा प्राप्त होती है। वह सहज ही भगवान में समा जाता है और उसके सभी दुःख मिट जाते हैं।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਣੀ ਗੁਰਮੁਖਿ ਛੂਟੈ ਸਾਚੇ ਤੇ ਪਤਿ ਪਾਵੈ ॥੫॥੨॥

kaho naanak paraanee gurmukh chhootai saachay tay pat paavai. ||5||2||

कहु नानक प्राणी गुरमुखि छूटै साचे ते पति पावै ॥५॥२॥

अर्थ : हे नानक ! गुरु के माध्यम से ही प्राणी की जीवन-मृत्यु से मुक्ति होती है और वह सत्य प्रभु से सम्मान प्राप्त करता हे ॥५॥२॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-140

ਪਉੜੀ ॥ pa-orhee. पउड़ी ॥

ਮਾਹਾ ਰੁਤੀ ਸਭ ਤੂੰ ਘੜੀ ਮੂਰਤ ਵੀਚਾਰਾ ॥
maahaa rutee sabh tooN gharhee moorat veechaaraa.
माहा रुती सभ तूं घड़ी मूरत वीचारा ॥

अर्थ : हे अकालपुरुष ! समस्त महीनों, ऋतुओं, घड़ी, मुहूर्त में मैं तेरी वन्दना करता हूँ।

ਤੂੰ ਗਣਤੈ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਓ ਸਚੇ ਅਲਖ ਅਪਾਰਾ ॥
tooN gantai kinai na paa-i-o sachay alakh apaaraa.
तूं गणतै किनै न पाइओ सचे अलख अपारा ॥

अर्थ : हे सच्चे अलख, अपार प्रभु ! कर्मों की गणना करके तुझे किसी ने भी नहीं पाया।

ਪੜਿਆ ਮੂਰਖੁ ਆਖੀਐ ਜਿਸੁ ਲਬੁ ਲੋਭੁ ਅਹੰਕਾਰਾ ॥
parhi-aa moorakh aakhee-ai jis lab lobh ahaNkaaraa.
पड़िआ मूरखु आखीऐ जिसु लबु लोभु अहंकारा ॥

अर्थ : उस पढ़े हुए विद्वान व्यक्ति को महामूर्ख ही समझो, जिसके अन्तर्मन में लोभ, लालच एवं अहंकार है।

ਨਾਉ ਪੜੀਐ ਨਾਉ ਬੁਝੀਐ ਗੁਰਮਤੀ ਵੀਚਾਰਾ ॥

naa-o parhee-ai naa-o bujhee-ai gurmatee veechaaraa.

नाउ पड़ीऐ नाउ बुझीऐ गुरमती वीचारा ॥

अर्थ : गुरु की मति द्वारा हमें विचार करके नाम को पढ़ना एवं समझना चाहिए।

ਗੁਰਮਤੀ ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਖਟਿਆ ਭਗਤੀ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰਾ ॥

gurmatee naam Dhan khati-aa bhagtee bharay bhandaaraa.

गुरमती नामु धनु खटिआ भगती भरे भंडारा ॥

अर्थ : जिस व्यक्ति ने गुरु की मति द्वारा नाम रूपी धन की कमाई की है, उसके भण्डार भक्ति से भर गए हैं।

ਨਿਰਮਲੁ ਨਾਮੁ ਮੰਨਿਆ ਦਰਿ ਸਚੈ ਸਚਿਆਰਾ ॥

nirmal naam mani-aa dar sachai sachi-aaraa.

निरमलु नामु मंनिआ दरि सचै सचिआरा ॥

अर्थ : जिस व्यक्ति ने निर्मल नाम का मन से सिमरन किया है, वह सत्य के दरबार में सत्यवादी स्वीकृत हो जाता है।

ਜਿਸ ਦਾ ਜੀਉ ਪਰਾਣੁ ਹੈ ਅੰਤਰਿ ਜੋਤਿ ਅਪਾਰਾ ॥

jis daa jee-o paraan hai antar jot apaaraa.

जिस दा जीउ पराणु है अंतरि जोति अपारा ॥

अर्थ : जिसने प्रत्येक जीव को आत्मा एवं प्राण दिए हैं, वह प्रभु अनंत है और उसकी ज्योति प्रत्येक जीव के हृदय में विद्यमान है।

ਸਚਾ ਸਾਹੁ ਇਕੁ ਤੂੰ ਹੋਰੁ ਜਗਤੁ ਵਣਜਾਰਾ ॥੬॥

sachaa saahu ik tooN hor jagat vanjaaraa. ||6||

सचा साहु इकु तूं होरु जगतु वणजारा ॥६॥

अर्थ : हे प्रभु ! एक तू ही सच्चा शाह है और शेष सारा जगत् वणजारा है॥ ६॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-141

ਪਉੜੀ ॥ pa-orhee. पउड़ी ॥

ਇਕਿ ਰਤਨ ਪਦਾਰਥ ਵਣਜਦੇ ਇਕਿ ਕਚੈ ਦੇ ਵਾਪਾਰਾ ॥
ik ratan padaarath vanjaday ik kachai day vaapaaraa.
इकि रतन पदारथ वणजदे इकि कचै दे वापारा ॥

अर्थ : जीव जगत् में वणज करने आते हैं। कई जीव नाम रूपी रत्न पदार्थों का वणज करते हैं और कई जीव क्षणभंगुर सुखों का वणज करते हैं।

ਸਤਿਗੁਰਿ ਤੁਠੈ ਪਾਈਅਨਿ ਅੰਦਰਿ ਰਤਨ ਭੰਡਾਰਾ ॥
satgur tuthai paa-ee-an andar ratan bhandaaraa.
सतिगुरि तुठै पाईअनि अंदरि रतन भंडारा ॥

अर्थ : यदि सतिगुरु प्रसन्न हो जाए तो यह नाम रूपी रत्न-पदार्थों का अक्षय भण्डार मिल जाता है।

ਵਿਣੁ ਗੁਰ ਕਿਨੈ ਨ ਲਧਿਆ ਅੰਧੇ ਭਉਕਿ ਮੁਏ ਕੂੜਿਆਰਾ ॥
vin gur kinai na laDhi-aa anDhay bha-uk mu-ay koorhi-aaraa.
विणु गुर किनै न लधिआ अंधे भउकि मुए कूड़िआरा ॥

अर्थ : जीव के हृदय में ही नाम रूपी रत्न पदार्थों का भण्डार है परन्तु यह भण्डार गुरु के बिना किसी को भी नहीं मिला। अर्थात् परमेश्वर प्राप्त नहीं होता। झूठे एवं अज्ञानी लोग टक्करें मार-मारकर प्राण त्याग गए हैं।

ਮਨਮੁਖ ਦੂਜੈ ਪਚਿ ਮੁਏ ਨਾ ਬੂਝਹਿ ਵੀਚਾਰਾ ॥
manmukh doojai pach mu-ay naa boojheh veechaaraa.
मनमुख दूजै पचि मुए ना बूझहि वीचारा ॥

अर्थ : मनमुख लोग द्वैत भाव में पड़कर गल सड़कर मर जाते हैं और ज्ञान को नहीं समझते।

ਇਕਸੁ ਬਾਝਹੁ ਦੂਜਾ ਕੋ ਨਹੀ ਕਿਸੁ ਅਗੈ ਕਰਹਿ ਪੁਕਾਰਾ ॥
ikas baajhahu doojaa ko nahee kis agai karahi pukaaraa.
इकसु बाझहु दूजा को नही किसु अगै करहि पुकारा ॥

अर्थ : एक ईश्वर के अलावा संसार में दूसरा कोई भी नहीं। वह किसके समक्ष जाकर फरियाद करें?

ਇਕਿ ਨਿਰਧਨ ਸਦਾ ਭਉਕਦੇ ਇਕਨਾ ਭਰੇ ਤੁਜਾਰਾ ॥
ik nirDhan sadaa bha-ukday iknaa bharay tujaaraa.
इकि निरधन सदा भउकदे इकना भरे तुजारा ॥

अर्थ : कई धनहीन निर्धन हैं और हमेशा भटकते फिरते हैं और कईओं के खजाने दौलत से परिपूर्ण हैं।

ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਹੋਰੁ ਧਨੁ ਨਾਹੀ ਹੋਰੁ ਬਿਖਿਆ ਸਭੁ ਛਾਰਾ ॥
vin naavai hor Dhan naahee hor bikhi-aa sabh chhaaraa.
विणु नावै होरु धनु नाही होरु बिखिआ सभु छारा ॥

अर्थ : लेकिन इस संसार में प्रभु नाम के अलावा शेष कोई भी धन जीव के साथ जाने वाला नहीं। अन्य सब कुछ विष रूपी माया-धन धूलि के तुल्य है।

ਨਾਨਕ ਆਪਿ ਕਰਾਏ ਕਰੇ ਆਪਿ ਹੁਕਮਿ ਸਵਾਰਣਹਾਰਾ ॥੭॥
naanak aap karaa-ay karay aap hukam savaaranhaaraa. ||7||
नानक आपि कराए करे आपि हुकमि सवारणहारा ॥७॥

अर्थ : हे नानक ! ईश्वर स्वयं ही सब कुछ करता है और स्वयं ही जीवों से करवाता है। अपने आदेश द्वारा वह प्रभु स्वयं ही प्राणियों को संवारने वाला है॥ ७॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-152

ਖੇਤੀ ਵਣਜੁ ਨਾਵੈ ਕੀ ਓਟ ॥ ਪਾਪੁ ਪੁੰਨੁ ਬੀਜ ਕੀ ਪੋਟ ॥

khaytee vanaj naavai kee ot. paap punn beej kee pot.

खेती वणजु नावै की ओट ॥ पापु पुंनु बीज की पोट ॥

अर्थ : मेरी खेती एवं वणज प्रभु के नाम के आश्रय में ही है। मनुष्य ने अपने सिर पर पाप एवं पुण्य रूपी कर्मों के बीज की पोटली उठाई हुई है।

ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਜੀਅ ਮਹਿ ਚੋਟ ॥ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿ ਚਲੇ ਮਨਿ ਖੋਟ ॥੨॥

kaam kroDh jee-a meh chot. naam visaar chalay man khot. ||2||

कामु क्रोधु जीअ महि चोट ॥ नामु विसारि चले मनि खोट ॥२॥ गउड़ी महला १ दखणी

अर्थ : काम, क्रोध प्राणी के अन्तर्मन में घाव हैं। खोटे मन वाले प्रभु नाम को विस्मृत करके संसार से चले जाते हैं।॥ २॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-152

.ਹੁਕਮਿ ਸੰਜੋਗੀ ਗੜਿ ਦਸ ਦੁਆਰ ॥ ਪੰਚ ਵਸਹਿ ਮਿਲਿ ਜੋਤਿ ਅਪਾਰ ॥

hukam sanjogee garh das du-aar. panch vaseh mil jot apaar.

हुकमि संजोगी गड़ि दस दुआर ॥ पंच वसहि मिलि जोति अपार ॥

अर्थ : यह दस द्वारों वाला शरीर रूपी किला परमात्मा के हुक्म में बनाया गया है। इसमें अपार प्रभु की ज्योति के साथ मिलकर पाँच ज्ञान-इन्द्रियाँ रहती हैं।

ਆਪਿ ਤੁਲੈ ਆਪੇ ਵਣਜਾਰ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਸਵਾਰਣਹਾਰ ॥੪॥੫॥

aap tulai aapay vanjaar. naanak naam savaaranhaar. ||4||5||

आपि तुलै आपे वणजार ॥ नानक नामि सवारणहार ॥४॥५॥

अर्थ : परमात्मा स्वयं ही वणजारा है और स्वयं ही तुलने वाला सौदा है। हे नानक ! परमात्मा का नाम ही जीवन सुन्दर बनाने वाला है॥४॥५॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-154-55

ਸਾਹੁ ਹਮਾਰਾ ਠਾਕੁਰੁ ਭਾਰਾ ਹਮ ਤਿਸ ਕੇ ਵਣਜਾਰੇ ॥

saahu hamaaraa <u>th</u>aakur <u>bh</u>aaraa ham <u>t</u>is kay va<u>n</u>jaaray.

साहु हमारा ठाकुरु भारा हम तिस के वणजारे ॥

अर्थ : मेरा ठाकुर-प्रभु बहुत बड़ा साहूकार है और मैं उसका एक वणजारा हूँ।

ਜੀਉ ਪਿੰਡੁ ਸਭ ਰਾਸਿ ਤਿਸੈ ਕੀ ਮਾਰਿ ਆਪੇ ਜੀਵਾਲੇ ॥੬॥੧॥੧੩॥

jee-o pind sa<u>bh</u> raas <u>t</u>isai kee maar aapay jeevaalay. ||6||1||13||

जीउ पिंडु सभ रासि तिसै की मारि आपे जीवाले ॥६॥१॥१३॥ गउड़ी चेती महला १

अर्थ : मेरी आत्मा एवं शरीर यह सब उसकी दी हुई पूंजी है। वह स्वयं ही जीवों को मार कर पुनः जीवित कर देता है॥ ६॥ १॥ १३ ॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-156

ਤਟ ਤੀਰਥ ਹਮ ਨਵ ਖੰਡ ਦੇਖੇ ਹਟ ਪਟਣ ਬਾਜਾਰਾ ॥

<u>t</u>at <u>t</u>irath ham nav <u>kh</u>and <u>d</u>ay<u>kh</u>ay hat pata<u>n</u> baajaaraa.

तट तीरथ हम नव खंड देखे हट पटण बाजारा ॥

अर्थ : मैंने पावन तीर्थ-स्थलों के तट, नवखण्ड, नगर की दुकानें एवं वणज के केन्द्र देखे हैं।

ਲੈ ਕੈ ਤਕੜੀ ਤੋਲਣਿ ਲਾਗਾ ਘਟ ਹੀ ਮਹਿ ਵਣਜਾਰਾ ॥੪॥

lai kai takrhee tolan laagaa ghat hee meh vanjaaraa. ||4||

लै कै तकड़ी तोलणि लागा घट ही महि वणजारा ॥४॥ गउड़ी चेती महला १

अर्थ : जीव रूपी वणजारे अपने हृदय में तराजू लेकर अपने कमाए नाम रूपी धन को तोलता है॥४॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-157

ਮੈ ਬਨਜਾਰਨਿ ਰਾਮ ਕੀ ॥ ਤੇਰਾ ਨਾਮੁ ਵਖਰੁ ਵਾਪਾਰੁ ਜੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

mai banjaaran raam kee. tayraa naam vakhar vaapaar jee. ||1|| rahaa-o.

मै बनजारनि राम की ॥ तेरा नामु वखरु वापारु जी ॥१॥ रहाउ ॥गउड़ी बैरागणि महला १ ॥

अर्थ : मैं राम की वनजारिन (व्यापारी) हूँ। हे प्रभु ! तेरा नाम ही वणज करने के लिए मेरा सौदा है॥ १॥ रहाउ॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-418

ਜਾਗਹੁ ਜਾਗਹੁ ਸੂਤਿਹੋ ਚਲਿਆ ਵਣਜਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

jaagahu jaagahu sootiho chali-aa vanjaaraa. ||1|| rahaa-o.

जागहु जागहु सूतिहो चलिआ वणजारा ॥१॥ रहाउ ॥ आसा काफी महला १

अर्थ : हे अज्ञानता की निद्रा में सोए हुए जीवो ! जागो, देखो कि वणजारा जीव दुनिया में से जा रहा है॥ १॥ रहाउ ॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-418

ਵਣਜੁ ਕਰਹੁ ਮਖਸੂਦੁ ਲੈਹੁ ਮਤ ਪਛੋਤਾਵਹੁ ॥ ਅਉਗਣ ਛੋਡਹੁ ਗੁਣ ਕਰਹੁ ਐਸੇ ਤਤੁ ਪਰਾਵਹੁ ॥੭॥

vanaj karahu makhsood laihu mat pachhotaavahu. a-ugan chhodahu gun karahu aisay tat paraavahu. ||7||

वणजु करहु मखसूदु लैहु मत पछोतावहु ॥ अउगण छोडहु गुण करहु ऐसे ततु परावहु ॥७॥

अर्थ : ऐसा नाम का वणज कर जिससे जीवन-मनोरथ का लाभ प्राप्त हो सके, अन्यथा पछताना पड़ेगा। अवगुण छोड़कर गुण ग्रहण करो, इस तरह तुझे सच्ची कमाई प्राप्त होगी॥ ७॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-436

ਸਖੀਹੋ ਸਹੇਲੜੀਹੋ ਮੇਰਾ ਪਿਰੁ ਵਣਜਾਰਾ ਰਾਮ ॥

sakheeho sahaylrheeho mayraa pir vanjaaraa raam.

सखीहो सहेलड़ीहो मेरा पिरु वणजारा राम ॥

अर्थ : हे मेरी सखियों एवं सहेलियों ! मेरा पिया राम नाम का वणजारा है।

ਹਰਿ ਨਾਮੋ ਵਣੰਜੜਿਆ ਰਸਿ ਮੋਲਿ ਅਪਾਰਾ ਰਾਮ ॥

har naamo vananjrhi-aa ras mol apaaraa raam.

हरि नामो वणंजड़िआ रसि मोलि अपारा राम ॥

अर्थ : हरिप्रभु का नाम मैंने उससे खरीदा है अर्थात् उसके साथ नाम का वणज किया है। उस राम की मिठास अमूल्य है।

ਮੋਲਿ ਅਮੋਲੋ ਸਚ ਘਰਿ ਢੋਲੋ ਪ੍ਰਭ ਭਾਵੈ ਤਾ ਮੁੰਧ ਭਲੀ ॥

mol amolo sach ghar dholo parabh bhaavai taa munDh bhalee.

मोलि अमोलो सच घरि ढोलो प्रभ भावै ता मुंध भली ॥

अर्थ : वह नाम प्राप्त करके मूल्य में अमूल्य बन गई है। वह अपने प्रभु के घर में रहती है और अगर प्रभु को अच्छी लगने लग जाए तो वह प्रिय बन जाती है।

ਇਕਿ ਸੰਗਿ ਹਰਿ ਕੈ ਕਰਹਿ ਰਲੀਆ ਹਉ ਪੁਕਾਰੀ ਦਰਿ ਖਲੀ ॥

ik sang har kai karahi ralee-aa ha-o pukaaree dar khalee.

इकि संगि हरि कै करहि रलीआ हउ पुकारी दरि खली ॥

अर्थ : कई तो प्रभु के साथ आनंदपूर्वक रमण करती रहती हैं जबकि मैं उसके द्वार पर खड़ी पुकार करती रहती हूँ।

ਕਰਣ ਕਾਰਣ ਸਮਰਥ ਸ੍ਰੀਧਰ ਆਪਿ ਕਾਰਜੁ ਸਾਰਏ ॥

karan kaaran samrath sareeDhar aap kaaraj saar-ay.

करण कारण समरथ स्रीधर आपि कारजु सारए ॥

अर्थ : परमात्मा प्रभु सब कुछ करने एवं करवाने में समर्थ है। वह स्वयं ही सभी कार्य सिद्ध कर देता है।

ਨਾਨਕ ਨਦਰੀ ਧਨ ਸੋਹਾਗਣਿ ਸਬਦੁ ਅਭ ਸਾਧਾਰਏ ॥੩॥

naanak nadree Dhan sohagan sabad abh saaDhaar-ay. ||3||

नानक नदरी धन सोहागणि सबदु अभ साधारए ॥३॥ रागु आसा महला १ छंत घरु १

अर्थ : हे नानक ! अपने पति-प्रभु की कृपा-दृष्टि से जीव रूपी नारी सुहागिन बन गई है। शब्द ने उसके हृदय को सहारा दिया है॥३॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-470

ਪਉੜੀ ॥ pa-orhee. पउड़ी ॥

ਸਤਿਗੁਰ ਵਿਟਹੁ ਵਾਰਿਆ ਜਿਤੁ ਮਿਲਿਐ ਖਸਮੁ ਸਮਾਲਿਆ ॥

satgur vitahu vaari-aa jit mili-ai khasam samaali-aa.

सतिगुर विटहु वारिआ जितु मिलिऐ खसमु समालिआ ॥

अर्थ : मैं अपने सतिगुरु पर बलिहारी जाता हूँ, जिनके मिलन से भगवान का सिमरन किया है।

ਜਿਨਿ ਕਰਿ ਉਪਦੇਸੁ ਗਿਆਨ ਅੰਜਨੁ ਦੀਆ ਇਨ੍ਹੀ ਨੇਤ੍ਰੀ ਜਗਤੁ ਨਿਹਾਲਿਆ ॥

jin kar updays gi-aan anjan dee-aa in[H]ee naytree jagat nihaali-aa.

जिनि करि उपदेसु गिआन अंजनु दीआ इन्ही नेत्री जगतु निहालिआ ॥

अर्थ : जिसने मुझे उपदेश देकर ज्ञान का सुरमा प्रदान किया है और इन नेत्रों से मैंने जगत के सत्य को देख लिया है।

ਖਸਮੁ ਛੋਡਿ ਦੂਜੈ ਲਗੇ ਡੁਬੇ ਸੇ ਵਣਜਾਰਿਆ ॥

khasam chhod doojai lagay dubay say vanjaari-aa.

खसमु छोडि दूजै लगे डुबे से वणजारिआ ॥

अर्थ : जो व्यापारी (प्राणी) अपने प्रभु-पति को त्यागकर द्वैतवाद में लीन हुए, वे डूब गए हैं।

ਸਤਿਗੁਰੂ ਹੈ ਬੋਹਿਥਾ ਵਿਰਲੈ ਕਿਨੈ ਵੀਚਾਰਿਆ ॥ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰਿਆ ॥੧੩॥

satguroo hai bohithaa virlai kinai veechaari-aa. kar kirpaa paar utaari-aa. ||13||

सतिगुरू है बोहिथा विरलै किनै वीचारिआ ॥ करि किरपा पारि उतारिआ ॥१३॥

अर्थ : सतिगुरु संसार-सागर में से पार करवाने वाला एक जहाज है, कुछ विरले पुरुष ही इसे अनुभव करते है। अपनी कृपा करके वह उनको संसार-सागर से पार कर देता है।॥ १३॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-580

ਆਵਾ ਗਵਣੁ ਸਿਰਜਿਆ ਤੂ ਥਿਰੁ ਕਰਣੈਹਾਰੋ ॥
aavaa gavan sirji-aa too thir karnaihaaro.
आवा गवणु सिरजिआ तू थिरु करणैहारो ॥

अर्थ : हे विश्व के रचयिता ! जीवों का आवागमन अर्थात् जन्म-मृत्यु का चक्र तूने ही बनाया है और तुम सदा अमर हो।

ਜੰਮਣੁ ਮਰਣਾ ਆਇ ਗਇਆ ਬਧਿਕੁ ਜੀਉ ਬਿਕਾਰੋ ॥
jaman marnaa aa-ay ga-i-aa baDhik jee-o bikaaro.
जमणु मरणा आइ गइआ बधिकु जीउ बिकारो ॥

अर्थ : जीवात्मा विकारों में ग्रस्त होकर जन्म-मरण, आवागमन के चक्र में फंसी हुई है।

ਭੂਡੜੈ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ਬੂਡੜੈ ਕਿਆ ਤਿਸੁ ਚਾਰੋ ॥
bhoodrhai naam visaari-aa boodrhai ki-aa tis chaaro.
भूडड़ै नामु विसारिआ बूडड़ै किआ तिसु चारो ॥

अर्थ : दुष्टात्मा वाले जीव ने भगवान के नाम को विस्मृत कर दिया है, जिसके फलस्वरूप वह मोह-माया में प्रवृत्त है और इसका अब क्या उपचार है ?

ਗੁਣ ਛੋਡਿ ਬਿਖੁ ਲਦਿਆ ਅਵਗੁਣ ਕਾ ਵਣਜਾਰੋ ॥੩॥
gun chhod bikh ladi-aa avgun kaa vanjaaro. ||3||
गुण छोडि बिखु लदिआ अवगुण का वणजारो ॥३॥

अर्थ : गुणों को त्यागकर इसने बुराइयों को लाद लिया है और वह अवगुणों का वणजारा बन बैठा है॥३॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-595

ਹਾਣੁ ਹਟੁ ਕਰਿ ਆਰਜਾ ਸਚੁ ਨਾਮੁ ਕਰਿ ਵਥੁ ॥
haan hat kar aarjaa sach naam kar vath.
हाणु हटु करि आरजा सचु नामु करि वथु ॥

अर्थ : नित्य क्षीण होने वाली आयु को अपनी दुकान बना और उसमें सत्य-नाम को अपना सौदा बना।

ਸੁਰਤਿ ਸੋਚ ਕਰਿ ਭਾਂਡਸਾਲ ਤਿਸੁ ਵਿਚਿ ਤਿਸ ਨੋ ਰਖੁ ॥
surat soch kar bhaa^N dsaal tis vich tis no rakh.
सुरति सोच करि भांडसाल तिसु विचि तिस नो रखु ॥

अर्थ : सुरति एवं चिंतन को अपना माल-गोदाम बना और उस माल-गोदाम में तू उस सत्य नाम को रख।

ਵਣਜਾਰਿਆ ਸਿਉ ਵਣਜੁ ਕਰਿ ਲੈ ਲਾਹਾ ਮਨ ਹਸੁ ॥੨॥
vanjaari-aa si-o vanaj kar lai laahaa man has. ||2||
वणजारिआ सिउ वणजु करि लै लाहा मन हसु ॥२॥

अर्थ : प्रभु नाम के वणजारो से वणज कर और लाभ प्राप्त करके अपने मन में सुप्रसन्न हो ॥२॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-731

ਆਪੇ ਕੰਡਾ ਤੋਲੁ ਤਰਾਜੀ ਆਪੇ ਤੋਲਣਹਾਰਾ ॥

aapay kandaa tol taraajee aapay tolanhaaraa.

आपे कंडा तोलु तराजी आपे तोलणहारा ॥

अर्थ : परमात्मा स्वयं ही कांटा, स्वयं ही तौल, स्वयं ही तराजू है और वह स्वयं ही तोलने वाला है।

ਆਪੇ ਦੇਖੈ ਆਪੇ ਬੂਝੈ ਆਪੇ ਹੈ ਵਣਜਾਰਾ ॥੩॥

aapay daykhai aapay boojhai aapay hai vanjaaraa. ||3||

आपे देखै आपे बूझै आपे है वणजारा ॥३॥

अर्थ : वह स्वयं ही देखता है, स्वयं ही समझता है और स्वयं ही वणजारा है॥३॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-789

ਸਲੋਕ ਮਃ ੧ ॥

salok mehlaa 1.

सलोक मः १ ॥

ਦੁਇ ਦੀਵੇ ਚਉਦਹ ਹਟਨਾਲੇ ॥ ਜੇਤੇ ਜੀਅ ਤੇਤੇ ਵਣਜਾਰੇ ॥

du-ay deevay cha-odah hatnaalay. jaytay jee-a taytay vanjaaray.

दुइ दीवे चउदह हटनाले ॥ जेते जीअ तेते वणजारे ॥

अर्थ : दुनिया में उजाला करने के लिए परमात्मा ने सूर्य एवं चन्द्रमा दो दीपक बनाए हैं और साथ ही चौदह लोक रूपी दुकानें बनाई हैं। दुनिया में जितने भी जीव हैं, वे सभी वणजारे हैं।

ਖੁਲ੍ਹੇ ਹਟ ਹੋਆ ਵਾਪਾਰੁ ॥ ਜੋ ਪਹੁਚੈ ਸੋ ਚਲਣਹਾਰੁ ॥

khul^H^ay hat ho-aa vaapaar. jo pahuchai so chalanhaar.

खुल्हे हट होआ वापारु ॥ जो पहुचै सो चलणहारु ॥

अर्थ : जब दुकानें खुल गई तो वणज होने लग गया। जो भी जन्म लेकर आता है, उसने यहाँ से चले जाना है।

ਧਰਮੁ ਦਲਾਲੁ ਪਾਏ ਨੀਸਾਣੁ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਲਾਹਾ ਪਰਵਾਣੁ ॥

Dharam dalaal paa-ay neesaan. naanak naam laahaa parvaan.

धरमु दलालु पाए नीसाणु ॥ नानक नामु लाहा परवाणु ॥

अर्थ : यमराज रुपी दलाल जीवों के शुभ-अशुभ कर्मों पर मोहर लगाता जाता है। हे नानक ! जीवों का अर्जित नाम रूपी लाभ ही मंजूर होता है।

ਘਰਿ ਆਏ ਵਜੀ ਵਾਧਾਈ ॥ ਸਚ ਨਾਮ ਕੀ ਮਿਲੀ ਵਡਿਆਈ ॥੧॥

ghar aa-ay vajee vaaDhaa-ee. sach naam kee milee vadi-aa-ee. ||1||

घरि आए वजी वाधाई ॥ सच नाम की मिली वडिआई ॥१॥

अर्थ : जो जीव नाम रूपी लाभ अर्जित करके अपने घर आए हैं, उन्हें शुभकामनाएँ मिली हैं और उन्हें ही सत्य-नाम की बड़ाई मिली है।१॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-931

ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਵੇਰੋਧੁ ਸਰੀਰ ॥ ਕਿਉ ਨ ਮਿਲਹਿ ਕਾਟਹਿ ਮਨ ਪੀਰ ॥

vin naavai vayroDh sareer. ki-o na mileh kaateh man peer.

विणु नावै वेरोधु सरीर ॥ किउ न मिलहि काटहि मन पीर ॥

अर्थ : नाम के बिना जीना अपने शरीर से विरोध करने की तरह है। तू प्रभु से क्यों नहीं मिलता ? वह तेरे मन की पीड़ा को दूर कर देगा।

ਵਾਟ ਵਟਾਊ ਆਵੈ ਜਾਇ ॥ ਕਿਆ ਲੇ ਆਇਆ ਕਿਆ ਪਲੈ ਪਾਇ ॥

vaat vataa-oo aavai jaa-ay. ki-aa lay aa-i-aa ki-aa palai paa-ay.

वाट वटाऊ आवै जाइ ॥ किआ ले आइआ किआ पलै पाइ ॥

अर्थ : जीव रूपी पथिक बार-बार जग रूपी पथ पर आता जाता रहता है। यह क्या लेकर जगत् में आया है और क्या लाभ प्राप्त करके जा रहा है।

ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਤੋਟਾ ਸਭ ਥਾਇ ॥ ਲਾਹਾ ਮਿਲੈ ਜਾ ਦੇਇ ਬੁਝਾਇ ॥

vin naavai totaa sabh thaa-ay. laahaa milai jaa day-ay bujhaa-ay.

विणु नावै तोटा सभ थाइ ॥ लाहा मिलै जा देइ बुझाइ ॥

अर्थ : नाम के बिना हर स्थान में नुक्सान ही होता है। उसे नाम रूपी लाभ तभी हासिल होता है, जब परमात्मा उसे सूझ प्रदान करता है।

ਵਣਜੁ ਵਾਪਾਰੁ ਵਣਜੈ ਵਾਪਾਰੀ ॥ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਕੈਸੀ ਪਤਿ ਸਾਰੀ ॥੧੬॥

vanaj vaapaar vanjai vaapaaree. vin naavai kaisee pat saaree. ||16||

वणजु वापारु वणजै वापारी ॥ विणु नावै कैसी पति सारी ॥१६॥

अर्थ : सच्चा वणजारा तो प्रभु के नाम का ही वाणिज्य करता है, फिर नाम के बिना जीव कैसे शोभा प्राप्त कर सकता है?॥१६॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-939

ਕਿਸੁ ਕਾਰਣਿ ਗ੍ਰਿਹੁ ਤਜਿਓ ਉਦਾਸੀ ॥ ਕਿਸੁ ਕਾਰਣਿ ਇਹੁ ਭੇਖੁ ਨਿਵਾਸੀ ॥

kis kaaran garihu taji-o udaasee. Kis kaaran ih bhaykh nivaasee.

किसु कारणि ग्रिहु तजिओ उदासी ॥ किसु कारणि इहु भेखु निवासी ॥

अर्थ : (सिद्ध गुरु जी से प्रश्न करते हैं कि) हे उदासी संत ! तूने अपना घर किस कारण त्याग दिया है ? तूने किस कारण यह उदासियों वाला भेष

धारण किया है ?

ਕਿਸੁ ਵਖਰ ਕੇ ਤੁਮ ਵਣਜਾਰੇ ॥ ਕਿਉ ਕਰਿ ਸਾਥੁ ਲੰਘਾਵਹੁ ਪਾਰੇ ॥੧੭॥

kis vakhar kay tum vanjaaray. ki-o kar saath langhaavahu paaray. ||17||

किसु वखर के तुम वणजारे ॥ कितु करि साथु लंघावहु पारे ॥१७॥

अर्थ : तुम किस वणज के वणजारे हो ? तुम अपने साथियों को कैसे भवसागर से पार करवा सकते हो ?॥ १७॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-992

ਜਿਹਵਾ ਡੰਡੀ ਇਹੁ ਘਟੁ ਛਾਬਾ ਤੋਲਉ ਨਾਮੁ ਅਜਾਚੀ ॥

jihvaa dandee ih ghat chhaabaa tola-o naam ajaachee.

जिहवा डंडी इहु घटु छाबा तोलउ नामु अजाची ॥

अर्थ : यह जिव्हा तराजू की डण्डी है, यह हृदय तराजू का तुला है, इसमें अतुल नाम को तोलो अर्थात् हृदय में भगवान का भजन करो।

ਏਕੋ ਹਾਟੁ ਸਾਹੁ ਸਭਨਾ ਸਿਰਿ ਵਣਜਾਰੇ ਇਕ ਭਾਤੀ ॥੩॥

ayko haat saahu sabhnaa sir vanjaaray ik bhaatee. ||3||

एको हाटु साहु सभना सिरि वणजारे इक भाती ॥३॥

अर्थ : एक परमेश्वर सबका मालिक है, जिसका संसार रूपी हाट है, जिसमे जीव नाम के वणजारे हैं। ३॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-1035

ਭਾਉ ਨ ਭਗਤੀ ਨਾ ਸਿਵ ਸਕਤੀ ॥ ਸਾਜਨੁ ਮੀਤੁ ਬਿੰਦੁ ਨਹੀ ਰਕਤੀ ॥

bhaa-o na bhagtee naa siv saktee. saajan meet bind nahee

raktee.

भाउ न भगती ना सिव सकती ॥ साजनु मीतु बिंदु नही रकती ॥

अर्थ : आस्था, प्रेम, भक्ति, शिव-शक्ति, साजन, मित्र, वीर्य-रक्त कुछ भी नहीं था।

ਆਪੇ ਸਾਹੁ ਆਪੇ ਵਣਜਾਰਾ ਸਾਚੇ ਏਹੋ ਭਾਇਦਾ ॥੧੨॥

aapay saahu aapay vanjaaraa saachay ayho bhaa-idaa. ||12||

आपे साहु आपे वणजारा साचे एहो भाइदा ॥१२॥

अर्थ : तब परमात्मा स्वयं ही साहूकार एवं वणजारा था और सत्यस्वरूप को यही स्वीकार था॥ १२॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-1036

ਗੜ੍ਹ ਮਹਿ ਹਾਟ ਪਟਣ ਵਾਪਾਰਾ ॥ ਪੂਰੈ ਤੋਲਿ ਤੋਲੈ ਵਣਜਾਰਾ ॥

garh meh haat patan vaapaaraa. poorai tol tolai vanjaaraa.

गड़ महि हाट पटण वापारा ॥ पूरै तोलि तोलै वणजारा ॥

अर्थ : शरीर रूपी किले में नगर एवं बाजार हैं, जिसमें नाम का वणज होता है। ईश्वर रूपी वणजारा पूर्ण तौल से नाम रूपी वस्तु को तौलता है।

ਆਪੇ ਰਤਨੁ ਵਿਸਾਹੇ ਲੇਵੈ ਆਪੇ ਕੀਮਤਿ ਪਾਇਦਾ ॥੪॥

aapay ratan visaahay layvai aapay keemat paa-idaa. ||4||

आपे रतनु विसाहे लेवै आपे कीमति पाइदा ॥४॥

अर्थ : वह स्वयं ही नाम-रत्नों को खरीदता है और स्वयं ही उसकी सही कीमत आंकता है॥ ४॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-1040

ਆਪੇ ਸਾਹੁ ਆਪੇ ਵਣਜਾਰਾ ॥ ਆਪੇ ਪਰਖੇ ਪਰਖਣਹਾਰਾ ॥

aapay saahu aapay vanjaaraa. aapay parkhay parkhanhaaraa.

आपे साहु आपे वणजारा ॥ आपे परखे परखणहारा ॥

अर्थ : साहूकार एवं वणजारा वह स्वयं ही है। परख करने वाला वह स्वयं ही परख करता है।

ਆਪੇ ਕਸਿ ਕਸਵਟੀ ਲਾਏ ਆਪੇ ਕੀਮਤਿ ਪਾਇਆ ॥੧੨॥

aapay kas kasvatee laa-ay aapay keemat paa-i-aa. ||12||

आपे कसि कसवटी लाए आपे कीमति पाइआ ॥१२॥

अर्थ : वह स्वयं ही कसौटी-परख करके कीमत लगाता है॥ १२॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-1091

ਪਉੜੀ ॥ pa-orhee. पउड़ी ॥

ਇਸੁ ਜੁਗ ਮਹਿ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹੈ ਨਾਮੋ ਨਾਲਿ ਚਲੈ ॥

is jug meh naam niDhaan hai naamo naal chalai.

इसु जुग महि नामु निधानु है नामो नालि चलै ॥

अर्थ : इस जग में परमात्मा का नाम ही सुखों का भण्डार है और केवल नाम ही साथ जाता है।

ਏਹੁ ਅਖੁਟੁ ਕਦੇ ਨ ਨਿਖੁਟਈ ਖਾਇ ਖਰਚਿਉ ਪਲੈ ॥

ayhu akhut kaday na nikhuta-ee khaa-ay kharchi-o palai.

एहु अखुटु कदे न निखुटई खाइ खरचिउ पलै ॥

अर्थ : यह नाम-भण्डार अटूट है और कभी समाप्त नहीं होता, खाने एवं खर्च करने पर भी इसमें वृद्धि ही होती है।

ਹਰਿ ਜਨ ਨੇੜਿ ਨ ਆਵਈ ਜਮਕੰਕਰ ਜਮਕਲੈ ॥

har jan nayrh na aavee jamkankar jamkalai.

हरि जन नेड़ि न आवई जमकंकर जमकलै ॥

अर्थ : यमराज के यमदूत भी भक्तजनों के निकट नहीं आते।

ਸੇ ਸਾਹ ਸਚੇ ਵਣਜਾਰਿਆ ਜਿਨ ਹਰਿ ਧਨੁ ਪਲੈ ॥

say saah sachay vanjaari-aa jin har Dhan palai.

से साह सचे वणजारिआ जिन हरि धनु पलै ॥

अर्थ : जिनके पास हरि-नाम रूपी धन है, वही सच्चे शाह एवं वणजारे हैं।

ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਤੇ ਹਰਿ ਪਾਈਐ ਜਾ ਆਪਿ ਹਰਿ ਘਲੈ ॥੧੫॥

har kirpaa tay har paa-ee-ai jaa aap har ghalai. ||15||

हरि किरपा ते हरि पाईऐ जा आपि हरि घलै ॥१५॥

अर्थ : परमात्मा को उसकी कृपा से ही पाया जा सकता है, यदि वह स्वयं प्रदान कर दे॥१५॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-939

ਗੁਰਮੁਖਿ ਖੋਜਤ ਭਏ ਉਦਾਸੀ ॥ ਦਰਸਨ ਕੈ ਤਾਈ ਭੇਖ ਨਿਵਾਸੀ ॥

gurmukh khojat bha-ay udaasee. darsan kai taaee bhaykh nivaasee.

गुरमुखि खोजत भए उदासी ॥ दरसन कै ताई भेख निवासी ॥

अर्थ : गुरु नानक देव जी उत्तर देते हैं कि हम गुरुमुख की खोज में उदासी बने हैं और प्रभु के भगतजनो के दर्शन करने के लिए यह भेष धारण किया हुआ है।

ਸਾਚ ਵਖਰ ਕੇ ਹਮ ਵਣਜਾਰੇ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਉਤਰਸਿ ਪਾਰੇ ॥੧੮॥

saach vakhar kay ham vanjaaray. naanak gurmukh utras paaray. ||18||

साच वखर के हम वणजारे ॥ नानक गुरमुखि उतरसि पारे ॥१८॥

अर्थ : हम सत्य-नाम रूपी सौदे के वणजारे हैं और गुरुमुख जीव भवसागर से पार हो जाते हैं।॥१८॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-942

ਜਿਸੁ ਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਤਿਸੁ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰੈ ॥ ਅਵਗਣ ਮੇਟੈ ਗੁਣਿ ਨਿਸਤਾਰੈ ॥

jis gur milai tis paar utaarai. avgan maytai gun nistaarai.

जिसु गुरु मिलै तिसु पारि उतारै ॥ अवगण मेटै गुणि निसतारै ॥

अर्थ : जिस व्यक्ति को गुरु मिल जाता है, वह उसे संसार-सागर से पार उतार देता है। वह उसके अवगुण मिटाकर उसे गुण प्रदान कर देता है।

ਮੁਕਤਿ ਮਹਾ ਸੁਖ ਗੁਰ ਸਬਦੁ ਬੀਚਾਰਿ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕਦੇ ਨ ਆਵੈ ਹਾਰਿ ॥

mukat mahaa sukh gur sabad beechaar. gurmukh kaday na aavai haar.

मुकति महा सुख गुर सबदु बीचारि ॥ गुरमुखि कदे न आवै हारि ॥

अर्थ : गुरु-शब्द का चिंतन करने से मुक्ति एवं परम सुख प्राप्त हो जाता है। गुरुमुख जीव जीवन में कभी पराजित नहीं होता।

ਤਨੁ ਹਟੜੀ ਇਹੁ ਮਨੁ ਵਣਜਾਰਾ ॥ ਨਾਨਕ ਸਹਜੇ ਸਚੁ ਵਾਪਾਰਾ ॥੩੯॥

tan hatrhee ih man vanjaaraa. naanak sehjay sach vaapaaraa. ||39||

तनु हटड़ी इहु मनु वणजारा ॥ नानक सहजे सचु वापारा ॥३९॥

अर्थ : मनुष्य का यह तन एक दुकान है और इसमें मन एक वणजारा बैठा है। नानक कहते हैं कि यह मन सहज ही सत्य का वणज करता रहता है॥ ३९ ॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-954

ਮਃ ੨ ॥ mehlaa 2. मः २ ॥

ਰਤਨਾ ਕੇਰੀ ਗੁਥਲੀ ਰਤਨੀ ਖੋਲੀ ਆਇ ॥ ਵਖਰ ਤੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਦੁਹਾ ਰਹੀ ਸਮਾਇ ॥

ratnaa kayree guthlee ratnee kholee aa-ay. vakhar tai vanjaari-aa duhaa rahee samaa-ay.

रतना केरी गुथली रतनी खोली आइ ॥ वखर तै वणजारिआ दुहा रही समाइ ॥

अर्थ : जौहरी ने आकर अपने रत्नों की पोटली खोल दी है और वह रत्न रूपी वस्तु जौहरी और वणजारो दोनों के मन को बहुत अच्छी लग रही है।

ਜਿਨ ਗੁਣੁ ਪਲੈ ਨਾਨਕਾ ਮਾਣਕ ਵਣਜਹਿ ਸੇਇ ॥ ਰਤਨਾ ਸਾਰ ਨ ਜਾਣਨੀ ਅੰਧੇ ਵਤਹਿ ਲੋਇ ॥੨॥

jin gun palai naankaa maanak vanjahi say-ay. ratnaa saar na jaannee anDhay vateh lo-ay. ||2||

जिन गुणु पलै नानका माणक वणजहि सेइ ॥ रतना सार न जाणनी अंधे वतहि लोइ ॥२॥

अर्थ : हे नानक ! जिन व्यापारियों के पास परखने का गुण है, वही रत्नों का वणज करते हैं। जो वणजारे रत्नों के महत्व को नहीं जानते, वे जगत् में अन्धों की तरह भटकते रहते हैं।॥2॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-1238

ਸਲੋਕ ਮਹਲਾ ੨ ॥

salok mehlaa 2.

सलोक महला २ ॥

ਸਾਹ ਚਲੇ ਵਣਜਾਰਿਆ ਲਿਖਿਆ ਦੇਵੈ ਨਾਲਿ ॥

saah chalay vanjaari-aa likhi-aa dayvai naal.

साह चले वणजारिआ लिखिआ देवै नालि ॥

अर्थ : परमात्मा रूपी शाह से जीव वणजारे चल पड़ते हैं और वह उनका कर्म- लेख साथ दे देता है।

ਲਿਖੇ ਉਪਰਿ ਹੁਕਮੁ ਹੋਇ ਲਈਐ ਵਸਤੁ ਸਮ੍ਹਾਲਿ ॥

likhay upar hukam ho-ay la-ee-ai vasat samHaal.

लिखे उपरि हुकमु होइ लईऐ वसतु सम्हालि ॥

अर्थ : परमात्मा के लिखे हुक्म अनुसार वस्तु मिलती है।

ਵਸਤੁ ਲਈ ਵਣਜਾਰਈ ਵਖਰੁ ਬਧਾ ਪਾਇ ॥

vasat la-ee vanjaara-ee vakhar baDhaa paa-ay.

वसतु लई वणजारई वखरु बधा पाइ ॥

अर्थ : इस तरह जीव वणजारे वस्तुएँ खरीदते हैं और सामान लाद लेते हैं।

ਕੇਈ ਲਾਹਾ ਲੈ ਚਲੇ ਇਕਿ ਚਲੇ ਮੂਲੁ ਗਵਾਇ ॥

kay-ee laahaa lai chalay ik chalay mool gavaa-ay.

केई लाहा लै चले इकि चले मूलु गवाइ ॥

अर्थ : कोई लाभ कमा लेता है परन्तु कोई मूलधन भी गंवा देता है।

ਥੋੜਾ ਕਿਨੈ ਨ ਮੰਗਿਓ ਕਿਸੁ ਕਹੀਐ ਸਾਬਾਸਿ ॥

thorhaa kinai na mangi-o kis kahee-ai saabaas.

थोड़ा किनै न मंगिओ किसु कहीऐ साबासि ॥

अर्थ : इन दोनों में से किसी ने थोड़ा नहीं माँगा, फिर किसको शाबाशी दी जाए।

ਨਦਰਿ ਤਿਨਾ ਕਉ ਨਾਨਕਾ ਜਿ ਸਾਬਤੁ ਲਾਏ ਰਾਸਿ ॥੧॥

nadar tinaa ka-o naankaa je saabat laa-ay raas. ||1||

नदरि तिना कउ नानका जि साबतु लाए रासि ॥१॥

अर्थ : नानक फुरमाते हैं कि कृपा-दृष्टि उन पर ही हुई जो अपने जीवन की राशि पूर्णतया बचाकर लाते हैं।॥१॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-115

ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਸੁ ਇਕਸੁ ਸਿਉ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥ ਦੂਜਾ ਭਰਮੁ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਜਲਾਏ ॥

gurmukh hovai so ikas si-o liv laa-ay. doojaa bharam gur sabad jalaa-ay.

गुरमुखि होवै सु इकसु सिउ लिव लाए ॥ दूजा भरमु गुर सबदि जलाए ॥

अर्थ : जो व्यक्ति गुरमुख बन जाता है, वह एक ईश्वर के साथ स्नेह करता है। गुरु के शब्द द्वारा वह मोह माया रूपी भ्रम को जला फेंकता है।

ਕਾਇਆ ਅੰਦਰਿ ਵਣਜੁ ਕਰੇ ਵਾਪਾਰਾ ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਸਚੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੬॥

kaa-i-aa andar vanaj karay vaapaaraa naam niDhaan sach paavni-aa. ||6||

काइआ अंदरि वणजु करे वापारा नामु निधानु सचु पावणिआ॥६॥ माझ महला ३॥

अर्थ : अपनी देहि में ही वह नाम रूपी वणज करता है और सत्यनाम की निधि पा लेता है॥६॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-117

ਸਚਾ ਸਾਹੁ ਸਚੇ ਵਣਜਾਰੇ ॥ ਸਚੁ ਵਣੰਜਹਿ ਗੁਰ ਹੇਤਿ ਅਪਾਰੇ ॥

sachaa saahu sachay vanjaaray. sach vana^N^jahi gur hayt apaaray.

सचा साहु सचे वणजारे ॥ सचु वणंजहि गुर हेति अपारे ॥

अर्थ : वह परमात्मा ही सच्चा साहूकार है और जीव सच्चे व्यापारी हैं। जीव अनंत प्रभु के रूप गुरु से प्रेम करके सत्य नाम का वणज करते हैं।

ਸਚੁ ਵਿਹਾਝਹਿ ਸਚੁ ਕਮਾਵਹਿ ਸਚੋ ਸਚੁ ਕਮਾਵਣਿਆ ॥੪॥

sach vihaajheh sach kamaaveh sacho sach kamaavani-aa. ||4||

सचु विहाझहि सचु कमावहि सचो सचु कमावणिआ ॥४॥ माझ महला ३॥

अर्थ : वे सत्य को खरीदते हैं और सत्य नाम की ही कमाई करते रहते हैं। वह सत्य द्वारा सत्य नाम ही कमाते हैं।॥४॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-117

ਇਕਿ ਸਚੁ ਵਣੰਜਹਿ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਪਿਆਰੇ ॥ ਆਪਿ ਤਰਹਿ ਸਗਲੇ ਕੁਲ ਤਾਰੇ ॥

ik sach vanaNjahi gur sabad pi-aaray. aap tareh saglay kul taaray.

इकि सचु वणंजहि गुर सबदि पिआरे ॥ आपि तरहि सगले कुल तारे ॥

अर्थ : जो व्यक्ति गुरु के शब्द द्वारा सत्य नाम का व्यापार करते हैं, वह भवसागर से पार हो जाते हैं और अपनी वंशावलि के समस्त सदस्यों को भी पार करवा देते हैं।

ਆਏ ਸੇ ਪਰਵਾਣੁ ਹੋਏ ਮਿਲਿ ਪ੍ਰੀਤਮ ਸੁਖੁ ਪਾਵਣਿਆ ॥੬॥

aa-ay say parvaan ho-ay mil pareetam sukh paavni-aa. ||6||

आए से परवाणु होए मिलि प्रीतम सुखु पावणिआ ॥६॥ माझ महला ३॥

अर्थ : ऐसे लोगों का ही जन्म लेकर दुनिया में आगमन सफल होता है और वे अपने प्रिय प्रभु से मिलकर सुखी रहते हैं।॥६॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-126

ਅੰਦਰਿ ਮਹਲ ਰਤਨੀ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰਾ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪਾਏ ਨਾਮੁ ਅਪਾਰਾ ॥

andar mahal ratnee bharay bhandaaraa. gurmukh paa-ay naam apaaraa.

अंदरि महल रतनी भरे भंडारा ॥ गुरमुखि पाए नामु अपारा ॥

अर्थ : भगवान के आत्म-स्वरूप रूपी महल में नाम रूपी रत्न के भण्डार भरे हुए हैं परन्तु मनुष्य अनंत प्रभु के नाम को गुरु के माध्यम से ही प्राप्त करता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਣਜੇ ਸਦਾ ਵਾਪਾਰੀ ਲਾਹਾ ਨਾਮੁ ਸਦ ਪਾਵਣਿਆ ॥੭॥

gurmukh vanjay sadaa vaapaaree laahaa naam sad paavni-aa. ||7||

गुरमुखि वणजे सदा वापारी लाहा नामु सद पावणिआ ॥७॥

अर्थ : जीव वणजारे हमेशा ही गुरु के माध्यम से नाम का व्यापार करता है और हमेशा ही नाम रूपी लाभ प्राप्त करता है ॥७॥

ਆਪੇ ਵਥੁ ਰਾਖੈ ਆਪੇ ਦੇਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਣਜਹਿ ਕੇਈ ਕੇਇ ॥

aapay vath raakhai aapay day-ay. gurmukh vanjahi kay-ee kay-ay.

आपे वथु राखै आपे देइ ॥ गुरमुखि वणजहि केई केइ ॥

अर्थ : भगवान स्वयं ही अपने आत्म-स्वरूप महल में नाम-वस्तु को रखता है और स्वयं यह नाम-वस्तु गुरु के माध्यम से जीवों को देता है। कोई विरला पुरुष गुरु के माध्यम से ही यह वणज करता है।

ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਸੋ ਪਾਏ ਕਰਿ ਕਿਰਪਾ ਮੰਨਿ ਵਸਾਵਣਿਆ ॥੮॥੨੭॥੨੮॥

naanak jis nadar karay so paa-ay kar kirpaa man vasaavani-aa. ||8||27||28||

नानक जिसु नदरि करे सो पाए करि किरपा मंनि वसावणिआ ॥८॥२७॥२८॥

माझ महला ३॥

अर्थ : हे नानक ! परमेश्वर जिस पर अपनी कृपा-दृष्टि करता है, वहीं नाम को प्राप्त करता है। परमेश्वर अपनी कृपा करके नाम को उसके हृदय में बसा देता है॥८ ॥२७॥२८॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-308

ਹਰਿ ਮੰਦਰ ਮਹਿ ਹਰਿ ਵਸੈ ਸਰਬ ਨਿਰੰਤਰਿ ਸੋਇ ॥

ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਣਜੀਐ ਸਚਾ ਸਉਦਾ ਹੋਇ ॥੧੧॥੧॥

har man<u>d</u>ar meh har vasai sarab niran<u>t</u>ar so-ay.
naanak gurmu<u>kh</u> va<u>n</u>jee-ai sachaa sa-u<u>d</u>aa ho-ay. ||11||1||

हरि मंदर महि हरि वसै सरब निरंतरि सोइ ॥

नानक गुरमुखि वणजीऐ सचा सउदा होइ ॥११॥१॥प्रभाती महला 3 बिभास

अर्थ : शरीर हरिमन्दिर में परमात्मा ही बसता है, वही सर्वव्याप्त है। नानक जी फुरमान करते हैं कि यदि गुरमुख बनकर हरिनाम का वणज करें तभी सच्चा सौदा हो सकता है॥11॥1॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-517

ਪਉੜੀ ॥ pa-o<u>rh</u>ee. पउड़ी ॥

ਆਪੇ ਜਗਤੁ ਉਪਾਇਓਨੁ ਕਰਿ ਪੂਰਾ ਥਾਟੁ ॥

aapay jaga<u>t</u> upaa-i-on kar pooraa thaat.

आपे जगतु उपाइओनु करि पूरा थाटु ॥

अर्थ : भगवान ने स्वयं ही पूर्ण ढांचा बनाकर जगत की रचना की है।

ਆਪੇ ਸਾਹੁ ਆਪੇ ਵਣਜਾਰਾ ਆਪੇ ਹੀ ਹਰਿ ਹਾਟੁ ॥

aapay saahu aapay va<u>n</u>jaaraa aapay hee har haat.

आपे साहु आपे वणजारा आपे ही हरि हाटु ॥

अर्थ : वह स्वयं ही साहूकार है, स्वयं ही वणजारा एवं स्वयं ही हाट बाजार है।

ਆਪੇ ਸਾਗਰੁ ਆਪੇ ਬੋਹਿਥਾ ਆਪੇ ਹੀ ਖੇਵਾਟੁ ॥

aapay saagar aapay bohithaa aapay hee <u>kh</u>ayvaat.

आपे सागरु आपे बोहिथा आपे ही खेवाटु ॥

अर्थ : वह आप ही सागर, आप ही जहाज और आप ही खेवट है।

ਆਪੇ ਗੁਰੁ ਚੇਲਾ ਹੈ ਆਪੇ ਆਪੇ ਦਸੇ ਘਾਟੁ ॥

aapay gur chaylaa hai aapay aapay dasay ghaat.

आपे गुरु चेला है आपे आपे दसे घाटु ॥

अर्थ : वह आप ही गुरु एवं आप ही चेला है और आप ही घाट दिखाता है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ਤੂ ਸਭਿ ਕਿਲਵਿਖ ਕਾਟੁ ॥੨੨॥੧॥ ਸੁਧੁ

jan naanak naam Dhi-aa-ay too sabh kilvikh kaat. ||22||1|| suDhu

जन नानक नामु धिआइ तू सभि किलविख काटु ॥२२॥१॥ सुधु

अर्थ : हे नानक ! तू उस परमात्मा का नाम-स्मरण कर और अपने सारे पाप दूर कर ले ॥२२॥१॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-554-55

ਪਉੜੀ ॥ pa-orhee. पउड़ी ॥

ਜਿਸ ਦਾ ਕੀਤਾ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਹੋਵੈ ਤਿਸ ਨੋ ਪਰਵਾਹ ਨਾਹੀ ਕਿਸੈ ਕੇਰੀ ॥

jis daa keetaa sabh kichh hovai tis no parvaah naahee kisai kayree.

जिस दा कीता सभु किछु होवै तिस नो परवाह नाही किसै केरी ॥

अर्थ : जिस परमात्मा का किया सब कुछ होता है, उसे किसी की कोई परवाह नहीं।

ਹਰਿ ਜੀਉ ਤੇਰਾ ਦਿਤਾ ਸਭੁ ਕੋ ਖਾਵੈ ਸਭ ਮੁਹਤਾਜੀ ਕਢੈ ਤੇਰੀ ॥

har jee-o tayraa ditaa sabh ko khaavai sabh muhtaajee kadhai tayree.

हरि जीउ तेरा दिता सभु को खावै सभ मुहताजी कढै तेरी ॥

अर्थ : हे हरिप्रभु ! जीव तेरा दिया हुआ ही सब कुछ खाते हैं और सभी तेरी ही अनुसेवा करते हैं।

ਜਿ ਤੁਧ ਨੋ ਸਾਲਾਹੇ ਸੁ ਸਭੁ ਕਿਛੁ ਪਾਵੈ ਜਿਸ ਨੋ ਕਿਰਪਾ ਨਿਰੰਜਨ ਕੇਰੀ ॥

je tuDh no saalaahay so sabh kichh paavai jis no kirpaa niranjan kayree.

जि तुध नो सालाहे सु सभु किछु पावै जिस नो किरपा निरंजन केरी ॥

अर्थ : हे निरंजन परमेश्वर ! जो भी तेरी महिमा-स्तुति करता है एवं जिस पर तू कृपा के घर में आता है, वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है।

ਸੋਈ ਸਾਹੁ ਸਚਾ ਵਣਜਾਰਾ ਜਿਨਿ ਵਖਰੁ ਲਦਿਆ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਤੇਰੀ ॥

so-ee saahu sachaa vanjaaraa jin vakhar ladi-aa har naam Dhan tayree.

सोई साहु सचा वणजारा जिनि वखरु लदिआ हरि नामु धनु तेरी ॥

अर्थ : हे भगवान! वास्तव में वही साहूकार और सत्य का वणजारा है, जो तेरे नाम-धन का सौदा लाद लेता है।

ਸਭਿ ਤਿਸੈ ਨੋ ਸਾਲਾਹਿਹੁ ਸੰਤਹੁ ਜਿਨਿ ਦੂਜੇ ਭਾਵ ਕੀ ਮਾਰਿ ਵਿਡਾਰੀ ਢੇਰੀ ॥੧੬॥

sabh tisai no saalaahihu santahu jin doojay bhaav kee maar vidaaree dhayree. ||16||

सभि तिसै नो सालाहिहु संतहु जिनि दूजे भाव की मारि विडारी ढेरी ॥१६॥

अर्थ : हे संतजनो ! उस परमात्मा का स्तुति गान करो, जिसने द्वैत भावना की ढ़ेरी को ध्वस्त कर दिया है ॥१६॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-568

ਗੁਰਮੁਖਿ ਖੇਤੀ ਹਰਿ ਅੰਤਰਿ ਬੀਜੀਐ ਹਰਿ ਲੀਜੈ ਸਰੀਰਿ ਜਮਾਏ ਰਾਮ ॥

gurmukh khaytee har antar beejee-ai har leejai sareer jamaa-ay raam.

गुरमुखि खेती हरि अंतरि बीजीऐ हरि लीजै सरीरि जमाए राम ॥

अर्थ : गुरुमुख बनकर अपने अन्तर्मन में परमेश्वर रूपी खेती बोनी चाहिए और अपने शरीर में नाम रूपी बीज उगाना चाहिए।

ਆਪਣੇ ਘਰ ਅੰਦਰਿ ਰਸੁ ਭੁੰਚੁ ਤੂ ਲਾਹਾ ਲੈ ਪਰਥਾਏ ਰਾਮ ॥

aapnay ghar andar ras bhunch too laahaa lai parthaa-ay raam.

आपणे घर अंदरि रसु भुंचु तू लाहा लै परथाए राम ॥

अर्थ : इस तरह तुम अपने हृदय-घर में ही हरि के नाम रस को चख कर लोक और परलोक में भी इसका लाभ प्राप्त करोगे।

ਲਾਹਾ ਪਰਥਾਏ ਹਰਿ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ਧਨੁ ਖੇਤੀ ਵਾਪਾਰਾ ॥

laahaa parthaa-ay har man vasaa-ay Dhan khaytee vaapaaraa.

लाहा परथाए हरि मंनि वसाए धनु खेती वापारा ॥

अर्थ : हरि-परमेश्वर को अपने अन्तर्मन में बसाने की खेती एवं वणज धन्य है, जिसके द्वारा परलोक में लाभ होता है।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਿਆਏ ਮੰਨਿ ਵਸਾਏ ਬੂਝੈ ਗੁਰ ਬੀਚਾਰਾ ॥

har naam Dhi-aa-ay man vasaa-ay boojhai gur beechaaraa.

हरि नामु धिआए मंनि वसाए बूझै गुर बीचारा ॥

अर्थ : जो व्यक्ति हरि-नाम का ध्यान करता है और इसे अपने मन में बसाता है, वह गुरु के उपदेश को समझ लेता है।

ਮਨਮੁਖ ਖੇਤੀ ਵਣਜੁ ਕਰਿ ਥਾਕੇ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਭੁਖ ਨ ਜਾਏ ॥

manmukh khaytee vanaj kar thaakay tarisnaa bhukh na jaa-ay.

मनमुख खेती वणजु करि थाके त्रिसना भुख न जाए ॥

अर्थ : मनमुख प्राणी सांसारिक मोह-माया की खेती एवं वणज करके थक गए हैं और उनकी तृष्णा एवं भूख दूर नहीं होती।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਬੀਜਿ ਮਨ ਅੰਦਰਿ ਸਚੈ ਸਬਦਿ ਸੁਭਾਏ ॥੨॥

naanak naam beej man andar sachai sabad subhaa-ay. ||2||

नानक नामु बीजि मन अंदरि सचै सबदि सुभाए ॥२॥ वडहंसु महला ३ ॥

अर्थ : हे नानक ! अपने मन के भीतर परमात्मा के नाम का बीज बोया कर और सच्चे शब्द द्वारा शोभायमान हो॥२॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-569

ਖੇਤੀ ਵਣਜੁ ਸਭੁ ਹੁਕਮੁ ਹੈ ਹੁਕਮੇ ਮੰਨਿ ਵਡਿਆਈ ਰਾਮ ॥

khaytee vanaj sabh hukam hai hukmay man vadi-aa-ee raam.

खेती वणजु सभु हुकमु है हुकमे मंनि वडिआई राम ॥

अर्थ : भगवान के हुक्म को स्वीकार करना उत्तम खेती एवं सर्वोत्तम वणज है, हुक्म को स्वीकार करने से मान-सम्मान मिलता है।

ਗੁਰਮਤੀ ਹੁਕਮੁ ਬੁਝੀਐ ਹੁਕਮੇ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਈ ਰਾਮ ॥

gurmatee hukam boojhee-ai hukmay mayl milaa-ee raam.

गुरमती हुकमु बूझीऐ हुकमे मेलि मिलाई राम ॥

अर्थ : गुरु की मति द्वारा ही परमात्मा के हुक्म को समझा जाता है और उसके हुक्म द्वारा ही प्रभु से मिलन होता है।

ਹੁਕਮਿ ਮਿਲਾਈ ਸਹਜਿ ਸਮਾਈ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਅਪਾਰਾ ॥

hukam milaa-ee sahj samaa-ee gur kaa sabad apaaraa.

हुकमि मिलाई सहजि समाई गुर का सबदु अपारा ॥

अर्थ : परमात्मा के हुक्म में ही जीव सहजता से उसमें विलीन हो जाता है। गुरु का शब्द अपरम्पार है, (क्योंकि)"

ਸਚੀ ਵਡਿਆਈ ਗੁਰ ਤੇ ਪਾਈ ਸਚੁ ਸਵਾਰਣਹਾਰਾ ॥

sachee vadi-aa-ee gur tay paa-ee sach savaaranhaaraa.

सची वडिआई गुर ते पाई सचु सवारणहारा ॥

अर्थ : गुरु के द्वारा ही सच्ची वड़ाई प्राप्त होती है और मनुष्य सत्य से सुशोभित हो जाता है।

ਭਉ ਭੰਜਨੁ ਪਾਇਆ ਆਪੁ ਗਵਾਇਆ ਗੁਰਮੁਖਿ ਮੇਲਿ ਮਿਲਾਈ ॥

bha-o bhanjan paa-i-aa aap gavaa-i-aa gurmukh mayl milaa-ee.

भउ भंजनु पाइआ आपु गवाइआ गुरमुखि मेलि मिलाई ॥

अर्थ : जीव अपना अहंत्व मिटाकर भय नाशक परमात्मा को प्राप्त कर लेता है और गुरु के माध्यम से ही उसका मिलन होता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਅਗਮੁ ਅਗੋਚਰੁ ਹੁਕਮੇ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥੪॥੨॥

kaho naanak naam niranjan agam agochar hukmay rahi-aa samaa-ee. ||4||2||

कहु नानक नामु निरंजनु अगमु अगोचरु हुकमे रहिआ समाई ॥४॥२॥

वडहंसु महला ३ ॥

अर्थ : नानक का कथन है कि परमात्मा का पावन नाम अगम्य एवं अगोचर है और यह उसके हुक्म में ही समा रहा है ॥४॥२॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-569-70

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥

vad-hans mehlaa 3.

वडहंसु महला ३ ॥

ਰਤਨ ਪਦਾਰਥ ਵਣਜੀਅਹਿ ਸਤਿਗੁਰਿ ਦੀਆ ਬੁਝਾਈ ਰਾਮ ॥

ratan padaarath vanjee-ah satgur dee-aa bujhaa-ee raam.

रतन पदारथ वणजीअहि सतिगुरि दीआ बुझाई राम ॥

अर्थ : हे जीव ! सतिगुरु ने यही सूझ दी है कि परमात्मा के नाम रूपी रत्न पदार्थों का ही वणज करना चाहिए।

ਲਾਹਾ ਲਾਭੁ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਹੈ ਗੁਣ ਮਹਿ ਗੁਣੀ ਸਮਾਈ ਰਾਮ ॥

laahaa laabh har bhagat hai gun meh gunee samaa-ee raam.

लाहा लाभु हरि भगति है गुण महि गुणी समाई राम ॥

अर्थ : हरि की भक्ति ही सर्वोत्तम लाभ है और गुणवान प्राणी गुणों के स्वामी परमात्मा में ही समाया रहता है।

ਗੁਣ ਮਹਿ ਗੁਣੀ ਸਮਾਏ ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਬੁਝਾਏ ਲਾਹਾ ਭਗਤਿ ਸੈਸਾਰੇ ॥

gun meh gunee samaa-ay jis aap bujhaa-ay laahaa bhagat saisaaray.

गुण महि गुणी समाए जिसु आपि बुझाए लाहा भगति सैसारे ॥

अर्थ : जिसे वह स्वयं सूझ प्रदान करता है, वही गुणवान प्राणी गुणों के मालिक में लीन रहता है और इस नश्वर दुनिया में परमात्मा की भक्ति का ही वह लाभ प्राप्त करता है।

ਬਿਨੁ ਭਗਤੀ ਸੁਖੁ ਨ ਹੋਈ ਦੂਜੈ ਪਤਿ ਖੋਈ ਗੁਰਮਤਿ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੇ ॥

bin bhagtee sukh na ho-ee doojai pat kho-ee gurmat naam aDhaaray.

बिनु भगती सुखु न होई दूजै पति खोई गुरमति नामु अधारे ॥

अर्थ : परमात्मा की भक्ति के बिना कहीं सुख प्राप्त नहीं होता, द्वैतभाव में फँसकर वह अपनी प्रतिष्ठा गंवा देता है और गुरु की मति द्वारा नाम ही आधार बनता है।

ਵਖਰੁ ਨਾਮੁ ਸਦਾ ਲਾਭੁ ਹੈ ਜਿਸ ਨੋ ਏਤੁ ਵਾਪਾਰਿ ਲਾਏ ॥

vakhar naam sadaa laabh hai jis no ayt vaapaar laa-ay.

वखरु नामु सदा लाभु है जिस नो एतु वापारि लाए ॥

अर्थ : ईश्वर जिसे इस नाम-वणज में लगाता है, वह नाम के सौदे का सर्वदा लाभ प्राप्त करता है।

ਰਤਨ ਪਦਾਰਥ ਵਣਜੀਅਹਿ ਜਾਂ ਸਤਿਗੁਰੁ ਦੇਇ ਬੁਝਾਏ ॥੧॥

ratan padaarath vanjee-ah jaa^N satgur day-ay bujhaa-ay. ||1||

रतन पदारथ वणजीअहि जां सतिगुरु देइ बुझाए ॥१॥

अर्थ : जब सतिगुरु सूझ प्रदान करता है तो ही जीव नाम रूपी रत्न पदार्थ का वणज करता है॥१॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-570

ਵਡਹੰਸੁ ਮਹਲਾ ੩ ॥

vad-hans mehlaa 3.

वडहंसु महला ३ ॥

ਸਚਾ ਸਉਦਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹੈ ਸਚਾ ਵਾਪਾਰਾ ਰਾਮ ॥
sachaa sa-udaa har naam hai sachaa vaapaaraa raam.
सचा सउदा हरि नामु है सचा वापारा राम ॥
अर्थ : हरि का नाम ही सच्चा सौदा है और यही सच्चा वणज है।

ਗੁਰਮਤੀ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵਣਜੀਐ ਅਤਿ ਮੋਲੁ ਅਫਾਰਾ ਰਾਮ ॥
gurmatee har naam vanjee-ai at mol afaaraa raam.
गुरमती हरि नामु वणजीऐ अति मोलु अफारा राम ॥
अर्थ : गुरु के उपदेश द्वारा ही हरि के नाम का वणज करना चाहिए और इस सच्चे नाम का वणज अत्यंत मूल्यवान एवं महान् है।

ਅਤਿ ਮੋਲੁ ਅਫਾਰਾ ਸਚ ਵਾਪਾਰਾ ਸਚਿ ਵਾਪਾਰਿ ਲਗੇ ਵਡਭਾਗੀ ॥
at mol afaaraa sach vaapaaraa sach vaapaar lagay vadbhaagee.
अति मोलु अफारा सच वापारा सचि वापारि लगे वडभागी ॥
अर्थ : इस सच्चे वणज का मूल्य अनन्त एवं बहुमूल्य है, जो लोग इस सच्चे वणज में क्रियाशील हैं, वे बड़े भाग्यशाली हैं।

ਅੰਤਰਿ ਬਾਹਰਿ ਭਗਤੀ ਰਾਤੇ ਸਚਿ ਨਾਮਿ ਲਿਵ ਲਾਗੀ ॥
antar baahar bhagtee raatay sach naam liv laagee.
अंतरि बाहरि भगती राते सचि नामि लिव लागी ॥
अर्थ : भीतर एवं बाहर से ऐसे प्राणी परमात्मा की भक्ति में लीन रहते हैं और सच्चे नाम में उनकी सुरति लगी रहती है।

ਨਦਰਿ ਕਰੇ ਸੋਈ ਸਚੁ ਪਾਏ ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਵੀਚਾਰਾ ॥
nadar karay so-ee sach paa-ay gur kai sabad veechaaraa.
नदरि करे सोई सचु पाए गुर कै सबदि वीचारा ॥

अर्थ : जो गुरु के शब्द का चिंतन करता है और जिस पर परमात्मा कृपा-दृष्टि करता है, उसे ही सत्य की प्राप्ति होती है।

ਨਾਨਕ ਨਾਮਿ ਰਤੇ ਤਿਨ ਹੀ ਸੁਖੁ ਪਾਇਆ ਸਾਚੈ ਕੇ ਵਾਪਾਰਾ ॥੧॥

naanak naam ratay tin hee sukh paa-i-aa saachai kay vaapaaraa. ||1||

नानक नामि रते तिन ही सुखु पाइआ साचै के वापारा ॥१॥

अर्थ : हे नानक ! जो सत्यनाम में लीन रहते हैं, उन्हें ही सुख प्राप्त होता है और वही सच्चे परमेश्वर के नाम के सच्चे वणजारे हैं।॥१॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-593

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਹਮਾਰਾ ਵਣਜੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵਾਪਾਰੁ ਹਰਿ ਨਾਮੈ ਕੀ ਹਮ ਕੰਉ ਸਤਿਗੁਰਿ ਕਾਰਕੁਨੀ ਦੀਈ ॥

har naam hamaaraa vanaj har naam vaapaar har naamai kee ham ka^N-u satgur kaarkunee dee-ee.

हरि नामु हमारा वणजु हरि नामु वापारु हरि नामै की हम कंउ सतिगुरि कारकुनी दीई ॥

अर्थ : हरि का नाम ही हमारा वाणिज्य है, हरि का नाम ही वणज है और हरि के नाम का ही कारोबार सतिगुरु ने हमें दिया है।

ਹਰਿ ਨਾਮੈ ਕਾ ਹਮ ਲੇਖਾ ਲਿਖਿਆ ਸਭ ਜਮ ਕੀ ਅਗਲੀ ਕਾਣਿ ਗਈ ॥

har naamai kaa ham laykhaa likhi-aa sabh jam kee aglee kaan ga-ee.

हरि नामै का हम लेखा लिखिआ सभ जम की अगली काणि गई ॥

अर्थ : हरि-नाम का ही हमने लेखा लिख दिया है और यम की अगली सारी मुहताजी खत्म हो गई है।

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-756

ਸਚਾ ਸਾਹੁ ਸਚੇ ਵਣਜਾਰੇ ਓਥੈ ਕੂੜੇ ਨਾ ਟਿਕੰਨਿ ॥

sachaa saahu sachay vanjaaray othai koorhay na tikann.

सचा साहु सचे वणजारे ओथै कूड़े ना टिकंनि ॥

अर्थ : परमात्मा सच्चा साहूकार है और उसके संत सच्चे वणजारे हैं। झूठ के वणजारे सत्य के द्वार पर टिक ही नहीं सकते।

ਓਨਾ ਸਚੁ ਨ ਭਾਵਈ ਦੁਖ ਹੀ ਮਾਹਿ ਪਚੰਨਿ ॥੧੮॥

onaa sach na bhaav-ee dukh hee maahi pachann. ||18||

ओना सचु न भावई दुख ही माहि पचंनि ॥१८॥

अर्थ : चूंकि उन्हें सत्य अच्छा नहीं लगता और वह दुखों में ही बर्बाद हो जाते हैं। ॥१८॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-919

ਜੀਅਹੁ ਨਿਰਮਲ ਬਾਹਰਹੁ ਨਿਰਮਲ ॥

jee-ahu nirmal baahrahu nirmal.

जीअहु निरमल बाहरहु निरमल ॥

अर्थ : कुछ व्यक्ति दिल से भी निर्मल होते हैं और बाहर से भी निर्मल होते हैं।

ਬਾਹਰਹੁ ਤ ਨਿਰਮਲ ਜੀਅਹੁ ਨਿਰਮਲ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਕਰਣੀ ਕਮਾਣੀ ॥

baahrahu ta nirmal jee-ahu nirmal satgur tay karnee kamaanee.

बाहरहु त निरमल जीअहु निरमल सतिगुर ते करणी कमाणी ॥

अर्थ : ऐसे दिल से एवं बाहर से निर्मल व्यक्ति सतगुरु के उपदेशानुसार शुभ करनी की कमाई करते हैं।

ਕੂੜ ਕੀ ਸੋਇ ਪਹੁਚੈ ਨਾਹੀ ਮਨਸਾ ਸਚਿ ਸਮਾਣੀ ॥

koorh kee so-ay pahuchai naahee mansaa sach samaanee.

कूड़ की सोइ पहुचै नाही मनसा सचि समाणी ॥

अर्थ : उन्हें झूठ स्पर्श भी नहीं करता और उनका मन सत्य में ही विलीन रहता है।

ਜਨਮੁ ਰਤਨੁ ਜਿਨੀ ਖਟਿਆ ਭਲੇ ਸੇ ਵਣਜਾਰੇ ॥

janam ratan jinee khati-aa bhalay say vanjaaray.

जनमु रतनु जिनी खटिआ भले से वणजारे ॥

अर्थ : वही वणजारे उतम हैं, जिन्होंने रत्न जैसे अमूल्य जन्म का लाभ हासिल कर लिया है।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਜਿਨ ਮੰਨੁ ਨਿਰਮਲੁ ਸਦਾ ਰਹਹਿ ਗੁਰ ਨਾਲੇ ॥੨੦॥

kahai naanak jin man nirmal sadaa raheh gur naalay. ||20||

कहै नानकु जिन मंनु निरमलु सदा रहहि गुर नाले ॥२०॥

अर्थ : नानक कहते हैं कि जिन का मन निर्मल है, वे सदा ही गुरु के साथ रहते हैं। ॥२०॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-921

ਹਰਿ ਰਾਸਿ ਮੇਰੀ ਮਨੁ ਵਣਜਾਰਾ ॥

har raas mayree man vanjaaraa.

हरि रासि मेरी मनु वणजारा ॥

अर्थ : हरिप्रभु का नाम ही मेरा राशन है और मेरा मन वणजारा हैं।

ਹਰਿ ਰਾਸਿ ਮੇਰੀ ਮਨੁ ਵਣਜਾਰਾ ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਰਾਸਿ ਜਾਣੀ ॥

har raas mayree man vanjaaraa satgur tay raas jaanee.

हरि रासि मेरी मनु वणजारा सतिगुर ते रासि जाणी ॥

अर्थ : मेरा मन वणजारा है और प्रभु-नाम मेरी जीवन का राशन है, इस राशन का ज्ञान मुझे सतगुरु से मिला है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਿਤ ਜਪਿਹੁ ਜੀਅਹੁ ਲਾਹਾ ਖਟਿਹੁ ਦਿਹਾੜੀ ॥
har har nit japihu jee-ahu laahaa khatihu dihaarhee.
हरि हरि नित जपिहु जीअहु लाहा खटिहु दिहाड़ी ॥

अर्थ : दिल से नित्य हरिप्रभु के नाम को जपते रहो और प्रतिदिन नाम-रूपी लाभ प्राप्त करो।

ਏਹੁ ਧਨੁ ਤਿਨਾ ਮਿਲਿਆ ਜਿਨ ਹਰਿ ਆਪੇ ਭਾਣਾ ॥
ayhu Dhan tinaa mili-aa jin har aapay bhaanaa.
एहु धनु तिना मिलिआ जिन हरि आपे भाणा ॥

अर्थ : यह नाम-धन उन्हें ही मिला है, जिन्हें परमात्मा ने स्वयं अपनी इच्छा से दिया है।

ਕਹੈ ਨਾਨਕੁ ਹਰਿ ਰਾਸਿ ਮੇਰੀ ਮਨੁ ਹੋਆ ਵਣਜਾਰਾ ॥੩੧॥
kahai naanak har raas mayree man ho-aa vanjaaraa. ||31||
कहै नानकु हरि रासि मेरी मनु होआ वणजारा ॥३१॥

अर्थ : नानक कहते हैं कि हरि-नाम मेरी जीवन की राशि है और मन वणजारा बन गया है॥ ३१ ॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-1053

ਗੁਰਮੁਖਿ ਵਣਜੁ ਕਰਹਿ ਪਰੁ ਆਪੁ ਪਛਾਣਹਿ ॥ ਏਕਸ ਬਿਨੁ ਕੋ ਅਵਰੁ ਨ ਜਾਣਹਿ ॥
gurmukh vanaj karahi par aap pachhaaneh. aykas bin ko avar na jaaneh.

गुरमुखि वणजु करहि परु आपु पछाणहि॥ एकस बिनु को अवरु न जाणहि॥

अर्थ : गुरुमुख नाम का वणज करते हैं और पराए-अपने की पहचान करते हैं। वे एक ईश्वर के बिना अन्य किसी को नहीं जानते।

ਸਚਾ ਸਾਹੁ ਸਚੇ ਵਣਜਾਰੇ ਪੂੰਜੀ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਹਾ ਹੇ ॥੪॥

sachaa saahu sachay vanjaaray poonjee naam visaahaa hay. ||4||

सचा साहु सचे वणजारे पूंजी नामु विसाहा हे ॥४॥ मारु महला 3

अर्थ : परमात्मा सच्चा साहूकार है, उसके भक्त सच्चे वणजारे हैं और नाम रूपी पूंजी ही खरीदते हैं।॥४॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-1059

ਕਾਇਆ ਹਰਿ ਮੰਦਰੁ ਹਰਿ ਆਪਿ ਸਵਾਰੇ ॥ ਤਿਸੁ ਵਿਚਿ ਹਰਿ ਜੀਉ ਵਸੈ ਮੁਰਾਰੇ ॥

kaa-i-aa har mandar har aap savaaray. tis vich har jee-o vasai muraaray.

काइआ हरि मंदरु हरि आपि सवारे ॥ तिसु विचि हरि जीउ वसै मुरारे ॥

अर्थ : यह शरीर ही परमात्मा का मन्दिर है और वह स्वयं ही इसे सुन्दर बनाता है। शरीर मन्दिर में परमात्मा ही रहता है।

ਗੁਰ ਕੈ ਸਬਦਿ ਵਣਜਨਿ ਵਾਪਾਰੀ ਨਦਰੀ ਆਪਿ ਮਿਲਾਇਦਾ ॥੪॥

gur kai sabad vanjan vaapaaree nadree aap milaa-idaa. ||4||

गुर कै सबदि वणजनि वापारी नदरी आपि मिलाइदा ॥४॥ मारु महला 3

अर्थ : नाम के वणजारे गुरु के शब्द द्वारा वणज करते हैं और प्रभु कृपा कर उन्हें मिला लेता है॥ ४॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-1063

ਸਤਿਗੁਰ ਨੋ ਸੇਵੇ ਤਿਸੁ ਆਪਿ ਮਿਲਾਏ ॥ ਮਮਤਾ ਕਾਟਿ ਸਚਿ ਲਿਵ ਲਾਏ ॥
satgur no sayvay tis aap milaa-ay. mamtaa kaat sach liv laa-ay.
सतिगुर नो सेवे तिसु आपि मिलाए ॥ ममता काटि सचि लिव लाए ॥
अर्थ : जो सतिगुरु की सेवा करता है, ईश्वर स्वयं ही उसे मिला लेता है। ऐसा व्यक्ति ममता को नाश करके सत्य में ही लगन लगाता है।

ਸਦਾ ਸਚੁ ਵਣਜਹਿ ਵਾਪਾਰੀ ਨਾਮੋ ਲਾਹਾ ਪਾਇਦਾ ॥੧੫॥
sadaa sach vanjahi vaapaaree naamo laahaa paa-idaa. ||15||
सदा सचु वणजहि वापारी नामो लाहा पाइदा ॥१५॥
अर्थ : वह वणजारा सदा सत्य का वणज करता रहता है और नाम रूपी लाभ हासिल करता है॥ १५॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-1064

ਸਭੁ ਕੋ ਵਣਜੁ ਕਰੇ ਵਾਪਾਰਾ ॥ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਸਭੁ ਤੋਟਾ ਸੰਸਾਰਾ ॥
sabh ko vanaj karay vaapaaraa. vin naavai sabh totaa sansaaraa.
सभु को वणजु करे वापारा ॥ विणु नावै सभु तोटा संसारा ॥
अर्थ : सभी जीव जगत् में भिन्न-भिन्न वणज करते हैं लेकिन हरि-नाम के बिना संसार में घाटा ही पड़ता है।

ਨਾਗੋ ਆਇਆ ਨਾਗੋ ਜਾਸੀ ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਦੁਖੁ ਪਾਇਦਾ ॥੧੧॥
naago aa-i-aa naago jaasee vin naavai dukh paa-idaa. ||11||
नागो आइआ नागो जासी विणु नावै दुखु पाइदा ॥११॥

अर्थ : प्रत्येक जीव नग्न अर्थात् खाली हाथ ही आया है और नग्न (खाली) ही चला जाएगा। प्रभु नाम के बिना उसे दुख ही मिलता है।११॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-1064

ਮੇਰੈ ਕਰਤੈ ਇਕ ਬਣਤ ਬਣਾਈ ॥ ਇਸੁ ਦੇਹੀ ਵਿਚਿ ਸਭ ਵਥੁ ਪਾਈ ॥

mayrai kartai ik banat banaa-ee. is dayhee vich sabh vath paa-ee.

मेरै करतै इक बणत बणाई ॥ इसु देही विचि सभ वथु पाई ॥

अर्थ : मेरे परमेश्वर ने एक ऐसी संरचना की है कि शरीर में ही सब वस्तुएँ डाल दी हैं।

ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਵਣਜਹਿ ਰੰਗਿ ਰਾਤੇ ਗੁਰਮੁਖਿ ਕੋ ਨਾਮੁ ਪਾਇਦਾ ॥੧੬॥੬॥੨੦॥

naanak naam vanjahi rang raatay gurmukh ko naam paa-idaa. ||16||6||20||

नानक नामु वणजहि रंगि राते गुरमुखि को नामु पाइदा ॥१६॥६॥२०॥ मारु महला 3

अर्थ : हे नानक ! प्रभु-रंग में लीन रहने वाले नाम का वणज करते हैं और कोई गुरुमुख ही नाम का रहस्य प्राप्त करता है॥१६॥६॥२०॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-1249

ਮਃ ੩ ॥ mehlaa 3. मः ३ ॥

ਸਚੁ ਵਣਜਹਿ ਸਚੁ ਸੇਵਦੇ ਜਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਪੈਰੀ ਪਾਹਿ ॥

ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਕੈ ਭਾਣੈ ਜੇ ਚਲਹਿ ਸਹਜੇ ਸਚਿ ਸਮਾਹਿ ॥੨॥

sach vanjahi sach sayvday je gurmukh pairee paahi. naanak gur kai bhaanai jay chaleh sehjay sach samaahi. ||2||

सचु वणजहि सचु सेवदे जि गुरमुखि पैरी पाहि ॥

नानक गुर कै भाणै जे चलहि सहजे सचि समाहि ॥२॥

अर्थ : जो गुरु के चरणों में आते हैं, वे सत्य का वणज करते हैं और परम सत्य की उपासना करते हैं। हे नानक ! गुरु की रज़ा में चलने वाले स्वाभाविक ही सत्य में विलीन हो जाते हैं।॥२॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-76

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੪ ॥

sireeraag mehlaa 4.

सिरीरागु महला ४ ॥

ਪਹਿਲੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣਿ ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਉਦਰ ਮੰਝਾਰਿ ॥

pahilai pahrai rain kai vanjaari-aa mitraa har paa-i-aa udar manjhaar.

पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा हरि पाइआ उदर मंझारि ॥

अर्थ : हे मेरे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के प्रथम प्रहर में ईश्वर प्राणी को माँ के गर्भ में डाल देता है।

ਹਰਿ ਧਿਆਵੈ ਹਰਿ ਉਚਰੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਮਾਰਿ ॥

har Dhi-aavai har uchrai vanjaari-aa mitraa har har naam samaar.

हरि धिआवै हरि उचरै वणजारिआ मित्रा हरि हरि नामु समारि ॥

अर्थ : हे वणजारे मित्र ! माँ के उदर में पड़ा प्राणी ईश्वर की आराधना करता है, वह हरि का नाम अपने मुख से उच्चरित करता रहता है। वह अपने मन द्वारा हरि नाम का सिमरन करता रहता है।

ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਪੇ ਆਰਾਧੇ ਵਿਚਿ ਅਗਨੀ ਹਰਿ ਜਪਿ ਜੀਵਿਆ ॥

har har naam japay aaraaDhay vich agnee har jap jeevi-aa.

हरि हरि नामु जपे आराधे विचि अगनी हरि जपि जीविआ ॥

अर्थ :प्राणी बार-बार हरि-नाम की स्तुति और आराधना करता है। गर्भ की अग्नि में वह परमात्मा के नाम के कारण ही जीवित रह पाता है।

ਬਾਹਰਿ ਜਨਮੁ ਭਇਆ ਮੁਖਿ ਲਾਗਾ ਸਰਸੇ ਪਿਤਾ ਮਾਤ ਥੀਵਿਆ ॥

baahar janam bha-i-aa mukh laagaa sarsay pitaa maat theevi-aa.

बाहरि जनमु भइआ मुखि लागा सरसे पिता मात थीविआ ॥

अर्थ :जब वह जन्म लेकर माँ के गर्भ में से बाहर आता है तो माता-पिता उसका मुख देखकर प्रसन्न होते हैं।

ਜਿਸ ਕੀ ਵਸਤੁ ਤਿਸੁ ਚੇਤਹੁ ਪ੍ਰਾਣੀ ਕਰਿ ਹਿਰਦੈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਬੀਚਾਰਿ ॥

jis kee vasat tis chaytahu paraanee kar hirdai gurmukh beechaar.

जिस की वसतु तिसु चेतहु प्राणी करि हिरदै गुरमुखि बीचारि ॥

अर्थ :हे प्राणी ! जिसकी यह वस्तु (बालक) है। उसे स्मरण करो। गुरु की दया से अपने हृदय में हरि-नाम का स्मरण करो।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਣੀ ਪਹਿਲੈ ਪਹਰੈ ਹਰਿ ਜਪੀਐ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰਿ ॥੧॥

kaho naanak paraanee pahilai pahrai har japee-ai kirpaa Dhaar. ||1||

कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै हरि जपीऐ किरपा धारि ॥१॥

अर्थ :हे नानक ! जीवन रूपी रात्रि के प्रथम प्रहर में तभी नाम-सिमरन किया जा सकता है। यदि भगवान अपनी कृपा धारण करें ॥१॥

ਦੂਜੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣਿ ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਮਨੁ ਲਾਗਾ ਦੂਜੈ ਭਾਇ ॥

doojai pahrai rain kai vanjaari-aa mitraa man laagaa doojai bhaa-ay.

दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा मनु लागा दूजै भाइ ॥

अर्थ :हे मेरे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के द्वितीय प्रहर में प्राणी का मन माया के आकर्षणों में लीन हो जाता है।

ਮੇਰਾ ਮੇਰਾ ਕਰਿ ਪਾਲੀਐ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਲੇ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਗਲਿ ਲਾਇ ॥

mayraa mayraa kar paalee-ai vanjaari-aa mitraa lay maat pitaa gal laa-ay.

मेरा मेरा करि पालीऐ वणजारिआ मित्रा ले मात पिता गलि लाइ ॥

अर्थ :माता-पिता उसे 'मेरा-मेरा' करके बड़े प्यार से पालन-पोषण करते हैं और उसे अपने गले से लगाते हैं।

ਲਾਵੈ ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਸਦਾ ਗਲ ਸੇਤੀ ਮਨਿ ਜਾਣੈ ਖਟਿ ਖਵਾਏ ॥

laavai maat pitaa sadaa gal saytee man jaanai khat khavaa-ay.

लावै मात पिता सदा गल सेती मनि जाणै खटि खवाए ॥

अर्थ :माता-पिता (स्वार्थवश) गले से लगाते हुए सोचते हैं कि वह बड़ा होकर उन्हें कमाकर खिलाएगा।

ਜੋ ਦੇਵੈ ਤਿਸੈ ਨ ਜਾਣੈ ਮੂੜਾ ਦਿਤੇ ਨੋ ਲਪਟਾਏ ॥

jo dayvai tisai na jaanai moorhaa ditay no laptaa-ay.

जो देवै तिसै न जाणै मूड़ा दिते नो लपटाए ॥

अर्थ :प्राणी कितना मूर्ख है कि देने वाले (दाता) को तो पहचानने का प्रयास नहीं करता और उसकी प्रदान की हुई नश्वर वस्तुओं से लिपटता फिरता है।

ਕੋਈ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹੋਵੈ ਸੁ ਕਰੈ ਵੀਚਾਰੁ ਹਰਿ ਧਿਆਵੈ ਮਨਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥

ko-ee gurmukh hovai so karai veechaar har Dhi-aavai man liv laa-ay.

कोई गुरमुखि होवै सु करै वीचारु हरि धिआवै मनि लिव लाइ ॥

अर्थ : कोई गुरमुख ही भक्ति करता है और वह अपने मन में सुरति लगाकर भगवान का ध्यान करता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਦੂਜੈ ਪਹਰੈ ਪ੍ਰਾਣੀ ਤਿਸੁ ਕਾਲੁ ਨ ਕਬਹੂੰ ਖਾਇ ॥੨॥

kaho naanak doojai pahrai paraanee tis kaal na kabahooN khaa-ay.||2||

कहु नानक दूजै पहरै प्राणी तिसु कालु न कबहूं खाइ ॥२॥

अर्थ :हे नानक ! जीवन रूपी रात्रि के द्वितीय प्रहर में जो प्राणी भगवान का ध्यान करता है, उसे काल कदापि नहीं निगलता ॥२॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-76-77

ਤੀਜੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣਿ ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਮਨੁ ਲਗਾ ਆਲਿ ਜੰਜਾਲਿ ॥

teejai pahrai rain kai vanjaari-aa mitraa man lagaa aal janjaal.

तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा मनु लगा आलि जंजालि ॥

अर्थ : हे मेरे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के तृतीय प्रहर में मनुष्य का मन दुनिया के धंधे-व्यवहार में आसक्त हो जाता है।

ਧਨੁ ਚਿਤਵੈ ਧਨੁ ਸੰਚਵੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਹਰਿ ਨ ਸਮਾਲਿ ॥

Dhan chitvai Dhan sanchvai vanjaari-aa mitraa har naamaa har na samaal.

धनु चितवै धनु संचवै वणजारिआ मित्रा हरि नामा हरि न समालि ॥

अर्थ : वह धन-दौलत का ही ध्यान करता है और धन-दौलत ही संग्रह करता है। हे मेरे वणजारे मित्र ! परन्तु हरि-नाम और हरि का चिन्तन नहीं करता।

ਹਰਿ ਨਾਮਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਕਦੇ ਨ ਸਮਾਲੈ ਜਿ ਹੋਵੈ ਅੰਤਿ ਸਖਾਈ ॥

har naamaa har har kaday na samaalai je hovai ant sakhaa-ee.

हरि नामा हरि हरि कदे न समालै जि होवै अंति सखाई ॥

अर्थ : वह कदाचित हरि-नाम और स्वामी हरि को स्मरण नहीं करता, जो अंत में उसका सहायक होना है।

ਇਹੁ ਧਨੁ ਸੰਪੈ ਮਾਇਆ ਝੂਠੀ ਅੰਤਿ ਛੋਡਿ ਚਲਿਆ ਪਛੁਤਾਈ ॥

ih Dhan sampai maa-i-aa jhoothee ant chhod chali-aa pachhutaa-ee.

इहु धनु स्मपै माइआ झूठी अंति छोडि चलिआ पछुताई ॥

अर्थ : यह धन-सम्पति और मोह-माया सब झूठे हैं। जिसे अन्तकाल त्याग कर पश्चाताप करते हुए प्राणी चला जाता है।

ਜਿਸ ਨੋ ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਗੁਰੁ ਮੇਲੇ ਸੋ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ॥

jis no kirpaa karay gur maylay so har har naam samaal.

जिस नो किरपा करे गुरु मेले सो हरि हरि नामु समालि ॥

अर्थ : जिस पर ईश्वर की कृपा होती है, उसका गुरु से मिलन होता है और वह ईश्वर की उपासना में लीन हो जाता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਤੀਜੈ ਪਹਰੈ ਪ੍ਰਾਣੀ ਸੇ ਜਾਇ ਮਿਲੇ ਹਰਿ ਨਾਲਿ ॥੩॥

kaho naanak teejai pahrai paraanee say jaa-ay milay har naal. ||3||

कहु नानक तीजै पहरै प्राणी से जाइ मिले हरि नालि ॥३॥

अर्थ : गुरु जी उद्बोधन करते हैं हे नानक ! जीवन रूपी रात्रि के तृतीय प्रहर में जो प्राणी हरि-भजन करता है, वह प्रभु में ही विलीन हो जाता है ॥३॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-59

ਚਉਥੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣਿ ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਹਰਿ ਚਲਣ ਵੇਲਾ ਆਦੀ ॥

cha-uthai pahrai rain kai vanjaari-aa mitraa har chalan vaylaa aadee.

चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा हरि चलण वेला आदी ॥

अर्थ : हे मेरे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के चतुर्थ प्रहर में ईश्वर ने मृत्यु काल निकट ला दिया है।

ਕਰਿ ਸੇਵਹੁ ਪੂਰਾ ਸਤਿਗੁਰੂ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਸਭ ਚਲੀ ਰੈਣਿ ਵਿਹਾਦੀ ॥

kar sayvhu pooraa satguroo vanjaari-aa mitraa sabh chalee rain vihaadee.

करि सेवहु पूरा सतिगुरू वणजारिआ मित्रा सभ चली रैणि विहादी ॥

अर्थ : इसलिए हे मित्र ! अपने हाथों से पूर्ण सतिगुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा कर, क्योंकि जीवन रूपी समूची रात्रि अब व्यतीत होती जा रही है।

ਹਰਿ ਸੇਵਹੁ ਖਿਨੁ ਖਿਨੁ ਢਿਲ ਮੂਲਿ ਨ ਕਰਿਹੁ ਜਿਤੁ ਅਸਥਿਰੁ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਹੋਵਹੁ ॥

har sayvhu khin khin dhil mool na karihu jit asthir jug jug hovhu.

हरि सेवहु खिनु खिनु ढिल मूलि न करिहु जितु असथिरु जुगु जुगु होवहु ॥

अर्थ : क्षण-प्रति-क्षण परमेश्वर की सेवा करो, इसमें विलम्ब उचित नहीं, क्योंकि इससे तुम युग-युग के लिए अमर हो जाओगे।

ਹਰਿ ਸੇਤੀ ਸਦ ਮਾਣਹੁ ਰਲੀਆ ਜਨਮ ਮਰਣ ਦੁਖ ਖੋਵਹੁ ॥

har saytee sad maanhu ralee-aa janam maran dukh khovhu.

हरि सेती सद माणहु रलीआ जनम मरण दुख खोवहु ॥

अर्थ : हे प्राणी ! ईश्वर के रंग में आनंद मनाओ और जन्म-मरण के दुःख को सदैव के लिए भुला दो।

ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਸੁਆਮੀ ਭੇਦੁ ਨ ਜਾਣਹੁ ਜਿਤੁ ਮਿਲਿ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਸੁਖਾਂਦੀ ॥

gur satgur su-aamee bhayd na jaanhu jit mil har bhagat sukhaa^N^dee.

गुर सतिगुर सुआमी भेदु न जाणहु जितु मिलि हरि भगति सुखांदी ॥

अर्थ : सतिगुरु एवं भगवान में कोई अन्तर मत समझो। सतिगुरु को मिलकर भगवान की भक्ति अच्छी लगती है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਣੀ ਚਉਥੈ ਪਹਰੈ ਸਫਲਿਓੁ ਰੈਣਿ ਭਗਤਾ ਦੀ ॥੪॥੧॥

kaho naanak paraanee cha-uthai pahrai safli-o rain bhagtaa dee. ||4||1||3||

कहु नानक प्राणी चउथै पहरै सफलिओ रैणि भगता दी ॥४॥१॥३॥

अर्थ : हे नानक ! जीवन रूपी रात्रि के चतुर्थ प्रहर में जो प्राणी भगवान की भक्ति करते हैं, उन भक्तों की जीवन-रात्रि सफल हो जाती है ॥४॥१॥३॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-81

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੪ ਵਣਜਾਰਾ

sireeraag mehlaa 4

सिरीरागु महला ४ वणजारा

ੴ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ik-oaNkaar sat naam gur parsaad.

ੴ सतिनामु गुरप्रसादि ॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਉਤਮੁ ਨਾਮੁ ਹੈ ਜਿਨਿ ਸਿਰਿਆ ਸਭੁ ਕੋਇ ਜੀਉ ॥

har har utam naam hai jin siri-aa sabh ko-ay jee-o.

हरि हरि उतमु नामु है जिनि सिरिआ सभु कोइ जीउ ॥

अर्थ : जिस परमात्मा ने यह सृष्टि-रचना की है, उसका नाम सबसे उत्तम है।

ਹਰਿ ਜੀਅ ਸਭੇ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਦਾ ਘਟਿ ਘਟਿ ਰਮਈਆ ਸੋਇ ॥

har jee-a sabhay partipaaldaa ghat ghat rama-ee-aa so-ay.

हरि जीअ सभे प्रतिपालदा घटि घटि रमईआ सोइ ॥

अर्थ : वह परमेश्वर समस्त जीवों का पालन-पोषण करता है और वह सर्वव्यापक है।

ਸੋ ਹਰਿ ਸਦਾ ਧਿਆਈਐ ਤਿਸੁ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥

so har sadaa Dhi-aa-ee-ai tis bin avar na ko-ay.

सो हरि सदा धिआईऐ तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥

अर्थ : इसलिए सदैव उस परमात्मा का ध्यान करना चाहिए। चूंकि उसके अतिरिक्त जीव का अन्य कोई सहारा नहीं है।

ਜੋ ਮੋਹਿ ਮਾਇਆ ਚਿਤੁ ਲਾਇਦੇ ਸੇ ਛੋਡਿ ਚਲੇ ਦੁਖੁ ਰੋਇ ॥

jo mohi maa-i-aa chit laa-iday say chhod chalay dukh ro-ay.

जो मोहि माइआ चितु लाइदे से छोडि चले दुखु रोइ ॥

अर्थ : जो व्यक्ति अपना चित्त माया के मोह में लगाकर रखते हैं, वे मृत्यु के समय दुखी होकर विलाप करते हुए सब कुछ दुनिया में छोड़कर ही चले जाते हैं।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਹਰਿ ਅੰਤਿ ਸਖਾਈ ਹੋਇ ॥੧॥

jan naanak naam Dhi-aa-i-aa har ant sakhaa-ee ho-ay. ||1||

जन नानक नामु धिआइआ हरि अंति सखाई होइ ॥१॥

अर्थ : हे नानक ! जो व्यक्ति भगवान का नाम-सिमरन करते हैं, अन्तिम समय भगवान का नाम ही उनका साथी बनता है॥ १॥

ਮੈ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨ ਕੋਇ ॥

mai har bin avar na ko-ay.

मै हरि बिनु अवरु न कोइ ॥

अर्थ : मेरे भगवान के अलावा मेरा अन्य कोई सहारा नहीं है।

ਹਰਿ ਗੁਰ ਸਰਣਾਈ ਪਾਈਐ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਵਡਭਾਗਿ ਪਰਾਪਤਿ ਹੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ॥

har gur sarnaa-ee paa-ee-ai vanjaari-aa mitraa vadbhaag paraapat ho-ay. ||1|| rahaa-o.

हरि गुर सरणाई पाईऐ वणजारिआ मित्रा वडभागि परापति होइ॥१॥रहाउ॥

अर्थ : हे मेरे वणजारे मित्र ! भगवान तो गुरु की शरण ग्रहण करने से ही मिलता है। यदि मनुष्य भाग्यशाली हो तो ही भगवान मिलता है।॥१॥ रहाउ॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-82

ਸੰਤ ਜਨਾ ਵਿਣੁ ਭਾਈਆ ਹਰਿ ਕਿਨੈ ਨ ਪਾਇਆ ਨਾਉ ॥

sant janaa vin bhaa-ee-aa har kinai na paa-i-aa naa-o.

संत जना विणु भाईआ हरि किनै न पाइआ नाउ ॥

अर्थ : हे भाई ! संतजनों (भक्तजनो) की कृपा बिना ईश्वर का नाम प्राप्त नहीं हुआ।

ਵਿਚਿ ਹਉਮੈ ਕਰਮ ਕਮਾਵਦੇ ਜਿਉ ਵੇਸੁਆ ਪੁਤੁ ਨਿਨਾਉ ॥

vich ha-umai karam kamaavday ji-o vaysu-aa put ninaa-o.

विचि हउमै करम कमावदे जिउ वेसुआ पुतु निनाउ ॥

अर्थ : ऐसे मनुष्य अहंकारवश ऐसे कर्म करते हैं, जैसे वेश्या-पुत्र पिता का नाम नहीं जानता।

ਪਿਤਾ ਜਾਤਿ ਤਾ ਹੋਈਐ ਗੁਰੁ ਤੁਠਾ ਕਰੇ ਪਸਾਉ ॥

pitaa jaat taa ho-ee-ai gur tuthaa karay pasaa-o.

पिता जाति ता होईऐ गुरु तुठा करे पसाउ ॥

अर्थ : वैसे ही ऐसे लोगों का प्रभु पिता का पता नहीं चलता। प्राणी पितृ-जाति को तभी प्राप्त करता है, यदि गुरु जी प्रसन्न होकर उस पर कृपा धारण करे।

ਵਡਭਾਗੀ ਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ਹਰਿ ਅਹਿਨਿਸਿ ਲਗਾ ਭਾਉ ॥

vadbhaagee gur paa-i-aa har ahinis lagaa bhaa-o.

वडभागी गुरु पाइआ हरि अहिनिसि लगा भाउ ॥

अर्थ : मनुष्य को बड़े सौभाग्य से गुरु प्राप्त होता है और दिन-रात वह प्रभु की प्रीति में लगा रहता है।

ਜਨ ਨਾਨਕਿ ਬ੍ਰਹਮੁ ਪਛਾਣਿਆ ਹਰਿ ਕੀਰਤਿ ਕਰਮ ਕਮਾਉ ॥੨॥

jan naanak barahm pachhaani-aa har keerat karam kamaa-o. ||2||

जन नानकि ब्रहमु पछाणिआ हरि कीरति करम कमाउ ॥२॥

अर्थ : हे नानक ! जिसने ब्रह्म को पहचान लिया है, वहीं भगवान की महिमा का कर्म करता है॥२॥

ਮਨਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਲਗਾ ਚਾਉ ॥

man har har lagaa chaa-o.

मनि हरि हरि लगा चाउ ॥

अर्थ : उसके हृदय में भगवान के सिमरन हेतु चाव उत्पन्न हो गया है।

ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਨਾਮੁ ਦ੍ਰਿੜਾਇਆ ਹਰਿ ਮਿਲਿਆ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭ ਨਾਉ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

gur poorai naam drirh-aa-i-aa har mili-aa har parabh naa-o. ||1|| rahaa-o.

गुरि पूरै नामु द्रिड़ाइआ हरि मिलिआ हरि प्रभ नाउ ॥१॥ रहाउ ॥

अर्थ : पूर्ण गुरु ने उसके हृदय में नाम बसा दिया है। जिसके कारण उसे हरि-प्रभु का नाम मिल गया है और भगवान भी मिल गया है॥१॥ रहाउ॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-82

ਜਬ ਲਗੁ ਜੋਬਨਿ ਸਾਸੁ ਹੈ ਤਬ ਲਗੁ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥
jab lag joban saas hai tab lag naam Dhi-aa-ay.
जब लगु जोबनि सासु है तब लगु नामु धिआइ ॥
अर्थ : जब तक शरीर है, स्वस्थ और उसमें प्राणों का संचार होता है, तब तक तुम हरि-नाम की आराधना करो।

ਚਲਦਿਆ ਨਾਲਿ ਹਰਿ ਚਲਸੀ ਹਰਿ ਅੰਤੇ ਲਏ ਛਡਾਇ ॥
chaldi-aa naal har chalsee har antay la-ay chhadaa-ay.
चलदिआ नालि हरि चलसी हरि अंते लए छडाइ ॥
अर्थ : तेरे नश्वर संसार से गमन करते समय ईश्वर का नाम तेरे साथ जाएगा और अंत में प्रभु तुझे मृत्यु से मुक्त कराएगा।

ਹਉ ਬਲਿਹਾਰੀ ਤਿਨ ਕਉ ਜਿਨ ਹਰਿ ਮਨਿ ਵੁਠਾ ਆਇ ॥
ha-o balihaaree tin ka-o jin har man vuthaa aa-ay.
हउ बलिहारी तिन कउ जिन हरि मनि वुठा आइ ॥
अर्थ : मैं उन पर कुर्बान जाता हूँ, जिनके हृदय में ईश्वर ने आकर वास कर लिया है।

ਜਿਨੀ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਨ ਚੇਤਿਓ ਸੇ ਅੰਤਿ ਗਏ ਪਛੁਤਾਇ ॥
jinee har har naam na chayti-o say ant ga-ay pachhutaa-ay.
जिनी हरि हरि नामु न चेतिओ से अंति गए पछुताइ ॥
अर्थ : जो लोग दुखभंजक परमात्मा के नाम का चिन्तन नहीं करते, वे अंतिम समय पश्चाताप करते हुए चले जाएँगे।

ਧੁਰਿ ਮਸਤਕਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭਿ ਲਿਖਿਆ ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇ ॥੩॥

Dhur mastak har parabh likhi-aa jan naanak naam Dhi-aa-ay. ||3||

धुरि मसतकि हरि प्रभि लिखिआ जन नानक नामु धिआइ ॥३॥

अर्थ : हे नानक ! ईश्वर ने जिसके मस्तक पर भाग्य-रेखा लिखी है, वह ईश्वर के नाम का स्मरण करते हैं।॥३॥

ਮਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗਾਇ ॥

man har har pareet lagaa-ay.

मन हरि हरि प्रीति लगाइ ॥

अर्थ : हे मेरे मन ! तू ईश्वर के नाम के साथ प्रीत लगा।

ਵਡਭਾਗੀ ਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ਗੁਰ ਸਬਦੀ ਪਾਰਿ ਲਘਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

vadbhaagee gur paa-i-aa gur sabdee paar laghaa-ay. ||1|| rahaa-o.

वडभागी गुरु पाइआ गुर सबदी पारि लघाइ ॥१॥ रहाउ ॥

अर्थ : किसी भाग्यशाली व्यक्ति को ही गुरु मिलता है और गुरु के उपदेश द्वारा मनुष्य भवसागर से पार हो जाता है ॥१॥ रहाउ॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-82

ਹਰਿ ਆਪੇ ਆਪੁ ਉਪਾਇਦਾ ਹਰਿ ਆਪੇ ਦੇਵੈ ਲੇਇ ॥

har aapay aap upaa-idaa har aapay dayvai lay-ay.

हरि आपे आपु उपाइदा हरि आपे देवै लेइ ॥

अर्थ : ईश्वर इस सृष्टि को स्वयं उत्पन्न करता है और स्वयं ही प्राण देता और लेता है।

ਹਰਿ ਆਪੇ ਭਰਮਿ ਭੁਲਾਇਦਾ ਹਰਿ ਆਪੇ ਹੀ ਮਤਿ ਦੇਇ ॥

har aapay <u>bh</u>aram <u>bh</u>ulaa-i<u>d</u>aa har aapay hee ma<u>t</u> <u>d</u>ay-ay.

हरि आपे भरमि भुलाइदा हरि आपे ही मति देइ ॥

अर्थ : हरि स्वयं ही मोह-माया के भ्रम में भुला देता है और स्वयं ही बुद्धि प्रदान करता है।

ਗੁਰਮੁਖਾ ਮਨਿ ਪਰਗਾਸੁ ਹੈ ਸੇ ਵਿਰਲੇ ਕੇਈ ਕੇਇ ॥

gurmu<u>kh</u>aa man pargaas hai say virlay kay-ee kay-ay.

गुरमुखा मनि परगासु है से विरले केई केइ ॥

अर्थ : गुरमुखों के मन में आत्मिक प्रकाश होता है और ऐसे व्यक्ति विरले ही होते हैं।

ਹਉ ਬਲਿਹਾਰੀ ਤਿਨ ਕਉ ਜਿਨ ਹਰਿ ਪਾਇਆ ਗੁਰਮਤੇ ॥

ha-o balihaaree <u>t</u>in ka-o jin har paa-i-aa gurma<u>t</u>ay.

हउ बलिहारी तिन कउ जिन हरि पाइआ गुरमते ॥

अर्थ : मैं उन पर कुर्बान जाता हैं, जिन्होंने गुरु के उपदेश द्वारा ईश्वर को प्राप्त किया है।

ਜਨ ਨਾਨਕਿ ਕਮਲੁ ਪਰਗਾਸਿਆ ਮਨਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਵੁਠੜਾ ਹੇ ॥੪॥

jan naanak kamal pargaasi-aa man har har vu<u>th</u>-<u>rh</u>aa hay. ||4||

जन नानकि कमलु परगासिआ मनि हरि हरि वुठड़ा हे ॥४॥

अर्थ : हे नानक ! मेरा हृदय प्रफुल्लित हो गया है और मेरे चित्त के अन्दर ईश्वर आकर बस गया है॥४॥

ਮਨਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਜਪਨੁ ਕਰੇ ॥

man har har japan karay.

मनि हरि हरि जपनु करे ॥

अर्थ : हे मेरे मन ! तू ईश्वर के नाम का जाप कर।

ਹਰਿ ਗੁਰ ਸਰਣਾਈ ਭਜਿ ਪਉ ਜਿੰਦੂ ਸਭ ਕਿਲਵਿਖ ਦੁਖ ਪਰਹਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

har gur sarnaa-ee bhaj pa-o jindoo sabh kilvikh dukh parharay. ||1|| rahaa-o.

हरि गुर सरणाई भजि पउ जिंदू सभ किलविख दुख परहरे ॥१॥ रहाउ ॥

अर्थ : हे मेरे मन ! तू भागकर ईश्वर रूप गुरु की शरण ग्रहण कर। वह तेरे सर्व पाप-दुःखों का निवारण कर देंगे॥१॥ रहाउ॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-82

ਘਟਿ ਘਟਿ ਰਮਈਆ ਮਨਿ ਵਸੈ ਕਿਉ ਪਾਈਐ ਕਿਤੁ ਭਤਿ ॥

ghat ghat rama-ee-aa man vasai ki-o paa-ee-ai kit bhat.

घटि घटि रमईआ मनि वसै किउ पाईऐ कितु भति ॥

अर्थ : राम प्रत्येक प्राणी के हृदय में वास करता है। कैसे और किस भेद से वह प्राप्त किया जा सकता है?

ਗੁਰੁ ਪੂਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਭੇਟੀਐ ਹਰਿ ਆਇ ਵਸੈ ਮਨਿ ਚਿਤਿ ॥

gur pooraa satgur bhaytee-ai har aa-ay vasai man chit.

गुरु पूरा सतिगुरु भेटीऐ हरि आइ वसै मनि चिति ॥

अर्थ : यदि प्राणी को भाग्यवश पूर्ण सतिगुरु मिल जाए तभी उसके हृदय में परमात्मा प्रभु आकर टिक जाता है।

ਮੈ ਧਰ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ ਹੈ ਹਰਿ ਨਾਮੈ ਤੇ ਗਤਿ ਮਤਿ ॥

mai Dhar naam aDhaar hai har naamai tay gat mat.

मै धर नामु अधारु है हरि नामै ते गति मति ॥

अर्थ : ईश्वर का नाम ही मेरा आश्रय और निर्वाह है। स्वामी के नाम से ही मुझे मोक्ष एवं मुक्ति की सूझ मिलती है।

ਮੈ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵਿਸਾਹੁ ਹੈ ਹਰਿ ਨਾਮੇ ਹੀ ਜਤਿ ਪਤਿ ॥

mai har har naam visaahu hai har naamay hee ja<u>t</u> pa<u>t</u>.

मै हरि हरि नामु विसाहु है हरि नामे ही जति पति ॥

अर्थ : ईश्वर के नाम में मेरा विश्वास है और ईश्वर का नाम ही मेरी जाति एवं प्रतिष्ठा है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਰੰਗਿ ਰਤੜਾ ਹਰਿ ਰੰਗਿ ਰਤਿ ॥੫॥

jan naanak naam <u>Dh</u>i-aa-i-aa rang ra<u>t</u>-<u>rh</u>aa har rang ra<u>t</u>. ||5||

जन नानक नामु धिआइआ रंगि रतड़ा हरि रंगि रति ॥५॥

अर्थ : नानक ने नाम की आराधना की है और यह ईश्वर-रंग में मग्न उसी का नाम स्मरण करता है॥५॥

ਹਰਿ ਧਿਆਵਹੁ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਸਤਿ ॥

har <u>Dh</u>i-aavahu har para<u>bh</u> sa<u>t</u>.

हरि धिआवहु हरि प्रभु सति ॥

अर्थ : भगवान का ध्यान करो, भगवान सदैव सत्य है।

ਗੁਰ ਬਚਨੀ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਜਾਣਿਆ ਸਭ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ਤੇ ਉਤਪਤਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

gur bachnee har para<u>bh</u> jaa<u>n</u>i-aa sa<u>bh</u> har para<u>bh</u> <u>t</u>ay u<u>t</u>pa<u>t</u>. ||1|| rahaa-o.

गुर बचनी हरि प्रभु जाणिआ सभ हरि प्रभु ते उतपति ॥१॥ रहाउ ॥

अर्थ : गुरु के शब्द द्वारा मनुष्य ईश्वर को समझता है। परमेश्वर ही सृष्टि का कर्ता है ॥१॥ रहाउ॥

ਜਿਨ ਕਉ ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਿਆ ਸੇ ਆਇ ਮਿਲੇ ਗੁਰ ਪਾਸਿ ॥

jin ka-o poorab likhi-aa say aa-ay milay gur paas.

जिन कउ पूरबि लिखिआ से आइ मिले गुर पासि ॥

अर्थ : जिन प्राणियों के भाग्य में प्राप्ति लिखी है, वे गुरु के पास आते हैं और उनको मिलते हैं।

ਸੇਵਕ ਭਾਇ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਗੁਰੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਪ੍ਰਗਾਸਿ ॥

sayvak bhaa-ay vanjaari-aa mitraa gur har har naam pargaas.

सेवक भाइ वणजारिआ मित्रा गुरु हरि हरि नामु प्रगासि ॥

अर्थ : हे मेरे वणजारे मित्र ! जो व्यक्ति श्रद्धा भावना से गुरु के पास आते हैं, गुरु उनके हृदय में भगवान के नाम का प्रकाश कर देता है।

ਧਨੁ ਧਨੁ ਵਣਜੁ ਵਾਪਾਰੀਆ ਜਿਨ ਵਖਰੁ ਲਦਿਅੜਾ ਹਰਿ ਰਾਸਿ ॥

Dhan Dhan vanaj vapaaree-aa jin vakhar ladi-arhaa har raas.

धनु धनु वणजु वापारीआ जिन वखरु लदिअड़ा हरि रासि ॥

अर्थ : वह वणज और वणजारे दोनों ही धन्य हैं, जिन्होंने ईश्वर के नाम का वणज किया है अर्थात् जो श्रद्धा की पूंजी लगाकर प्रभु नाम की सामग्री लादते हैं।

ਗੁਰਮੁਖਾ ਦਰਿ ਮੁਖ ਉਜਲੇ ਸੇ ਆਇ ਮਿਲੇ ਹਰਿ ਪਾਸਿ ॥

gurmukhaa dar mukh ujlay say aa-ay milay har paas.

गुरमुखा दरि मुख उजले से आइ मिले हरि पासि ॥

अर्थ : गुरमुख जनों के मुख प्रभु-दरबार में उज्ज्वल हैं। ईश्वर के दरबार में वह प्रभु के पास आते हैं और उसमें लीन हो जाते हैं।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਗੁਰੁ ਤਿਨ ਪਾਇਆ ਜਿਨਾ ਆਪਿ ਤੁਠਾ ਗੁਣਤਾਸਿ ॥੬॥

jan naanak gur tin paa-i-aa jinaa aap tuthaa guntaas. ||6||

जन नानक गुरु तिन पाइआ जिना आपि तुठा गुणतासि ॥६॥

अर्थ : हे नानक ! गुरु उन्हें ही मिलता है, जिन पर गुणों का भण्डार भगवान स्वयं प्रसन्न होता है।॥६॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-82

ਹਰਿ ਧਿਆਵਹੁ ਸਾਸਿ ਗਿਰਾਸਿ ॥

har Dhi-aavahu saas giraas.

हरि धिआवहु सासि गिरासि ॥

अर्थ : हे मनुष्य ! प्रत्येक श्वास एवं भोजन के ग्रास के साथ तुम ईश्वर का ध्यान करो।

ਮਨਿ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗੀ ਤਿਨਾ ਗੁਰਮੁਖਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਜਿਨਾ ਰਹਰਾਸਿ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥੧॥

man pareet lagee tinaa gurmukhaa har naam jinaa rahraas. ||1|| rahaa-o. ||1||

मनि प्रीति लगी तिना गुरमुखा हरि नामु जिना रहरासि ॥१॥ रहाउ ॥१॥

अर्थ : जिन्होंने भगवान के नाम को अपने जीवन सफर की पूंजी बनाया है, उन गुरमुखों के मन में भगवान के लिए प्रेम उत्पन्न होता है॥१॥ रहाउ॥१॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-165

ਗਉੜੀ ਬੈਰਾਗਣਿ ਮਹਲਾ ੪ ॥

ga-orhee bairaagan mehlaa 4.

गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥

ਸਾਹੁ ਹਮਾਰਾ ਤੂੰ ਧਣੀ ਜੈਸੀ ਤੂੰ ਰਾਸਿ ਦੇਹਿ ਤੈਸੀ ਹਮ ਲੇਹਿ ॥

saahu hamaaraa tooN Dhanee jaisee tooN raas deh taisee ham layhi.

साहु हमारा तूं धणी जैसी तूं रासि देहि तैसी हम लेहि ॥

अर्थ : हे ईश्वर ! तू ही मेरा शाह एवं मालिक हैं। जैसी पूँजी तुम मुझे देते हो, वैसी ही पूंजी मैं लेता हूँ।

ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵਣੰਜਹ ਰੰਗ ਸਿਉ ਜੇ ਆਪਿ ਦਇਆਲੁ ਹੋਇ ਦੇਹਿ ॥੧॥

har naam vannjah rang si-o jay aap da-i-aal ho-ay deh. ||1||

हरि नामु वणंजह रंग सिउ जे आपि दइआलु होइ देहि ॥१॥

अर्थ : यदि तुम दयालु होकर स्वयं मुझे हरि-प्रभु नाम दो तो ही मैं हरि-प्रभु नाम का वणज करूँ॥ १॥

ਹਮ ਵਣਜਾਰੇ ਰਾਮ ਕੇ ॥ ਹਰਿ ਵਣਜੁ ਕਰਾਵੈ ਦੇ ਰਾਸਿ ਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

ham vanjaaray raam kay. har vanaj karaavai day raas ray. ||1||

हम वणजारे राम के ॥ हरि वणजु करावै दे रासि रे ॥१॥ रहाउ ॥

अर्थ : हे भाई ! मैं तो राम का वणजारा हूँ और भगवान अपनी पूंजी देकर मुझसे अपने नाम का वणज करवाता है॥ १॥ रहाउ॥

ਲਾਹਾ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਧਨੁ ਖਟਿਆ ਹਰਿ ਸਚੇ ਸਾਹ ਮਨਿ ਭਾਇਆ ॥

laahaa har bhagat Dhan khati-aa har sachay saah man bhaa-i-aa.

लाहा हरि भगति धनु खटिआ हरि सचे साह मनि भाइआ ॥

अर्थ : मैंने हरि-भक्ति के नाम रूपी धन का लाभ कमाया है और सच्चे साहूकार परमेश्वर के हृदय को पसंद आ गया हूँ।

ਹਰਿ ਜਪਿ ਹਰਿ ਵਖਰੁ ਲਦਿਆ ਜਮੁ ਜਾਗਾਤੀ ਨੇੜਿ ਨ ਆਇਆ ॥੨॥

har jap har vakhar ladi-aa jam jaagaatee nayrh na aa-i-aa. ||2||

हरि जपि हरि वखरु लदिआ जमु जागाती नेड़ि न आइआ ॥२॥

अर्थ : मैंने हरि-प्रभु का नाम जपकर हरि-प्रभु नाम रूपी सौदा सत्य के दरबार में ले जाने के लिए लाद लिया है और कर लेने वाला यमदूत मेरे निकट नहीं आता॥ २ ॥

ਹੋਰੁ ਵਣਜੁ ਕਰਹਿ ਵਾਪਾਰੀਏ ਅਨੰਤ ਤਰੰਗੀ ਦੁਖੁ ਮਾਇਆ ॥

hor vanaj karahi vaapaaree-ay anant tarangee dukh maa-i-aa.

होरु वणजु करहि वापारीए अनंत तरंगी दुखु माइआ ॥

अर्थ : जो वणजारा नाम के सिवाय अन्य पदार्थों का वणज करते हैं, वह अनंत तरंगों वाली माया के मोह में फँसकर बड़ा दुखी होते हैं।

ਓਇ ਜੇਹੈ ਵਣਜਿ ਹਰਿ ਲਾਇਆ ਫਲੁ ਤੇਹਾ ਤਿਨ ਪਾਇਆ ॥੩॥

o-ay jayhai vanaj har laa-i-aa fal tayhaa tin paa-i-aa. ||3||

ओइ जेहै वणजि हरि लाइआ फलु तेहा तिन पाइआ ॥३॥

अर्थ : जिस तरह का वणज ईश्वर ने उनके लिए लगाया है, वैसा ही फल वे प्राप्त करते हैं। ३॥

ਹਰਿ ਹਰਿ ਵਣਜੁ ਸੋ ਜਨੁ ਕਰੇ ਜਿਸੁ ਕ੍ਰਿਪਾਲੁ ਹੋਇ ਪ੍ਰਭੁ ਦੇਈ ॥

har har vanaj so jan karay jis kirpaal ho-ay parabh day-ee.

हरि हरि वणजु सो जनु करे जिसु क्रिपालु होइ प्रभु देई ॥

भगवान के नाम का वणज वहीं व्यक्ति करते हैं, जिन्हें प्रभु कृपालु होकर नाम का वणज करने के लिए देता है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਾਹੁ ਹਰਿ ਸੇਵਿਆ ਫਿਰਿ ਲੇਖਾ ਮੂਲਿ ਨ ਲੇਈ ॥੪॥੧॥੭॥੪੫॥

jan naanak saahu har sayvi-aa fir laykhaa mool na lay-ee. ||4||1||7||45||

जन नानक साहु हरि सेविआ फिरि लेखा मूलि न लेई ॥४॥१॥७॥४५॥

अर्थ : हे नानक ! जो व्यक्ति साहूकार भगवान की सेवा करता है, भगवान फिर उससे बिल्कुल ही कर्मों का लेखा नहीं माँगता ॥४॥१॥७॥४५॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-169

ਆਪੇ ਸਾਹ ਵਡੇ ਪ੍ਰਭ ਸੁਆਮੀ ਹਮ ਵਣਜਾਰੇ ਹਹਿ ਤਾ ਚੇ ॥

aapay saah vaday parabh su-aamee ham vanjaaray heh taa chay.

आपे साह वडे प्रभ सुआमी हम वणजारे हहि ता चे ॥

अर्थ : हे मेरे स्वामी प्रभु ! तू स्वयं ही बड़ा साहूकार है और मैं तेरा वणजारा हूँ।

ਮੇਰਾ ਮਨੁ ਤਨੁ ਜੀਉ ਰਾਸਿ ਸਭ ਤੇਰੀ ਜਨ ਨਾਨਕ ਕੇ ਸਾਹ ਪ੍ਰਭ ਸਾਚੇ ॥੪॥੩॥੧੭॥੫੫॥

mayraa man tan jee-o raas sabh tayree jan naanak kay saah parabh saachay. ||4||3||17||55||

मेरा मनु तनु जीउ रासि सभ तेरी जन नानक के साह प्रभ साचे ॥४॥३॥१७॥५५॥ गउड़ी पुरबी महला ४

अर्थ : मेरा मन, तन एवं जीवन सब कुछ तेरी ही पूंजी है। हे सच्चे प्रभु ! तुम नानक के साहूकार हो॥४॥३॥१७॥५५॥

रु ग्रंथ साहिब अंग-308

ਪਉੜੀ ॥ pa-orhee. पउड़ी ॥

ਤੂ ਸਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਆਪਿ ਹੈ ਸਚੁ ਸਾਹ ਹਮਾਰੇ ॥

too sachaa saahib aap hai sach saah hamaaray.

तू सचा साहिबु आपि है सचु साह हमारे ॥

अर्थ : हे मेरे सच्चे शाह ! तू स्वयं ही सच्चा मालिक है।

ਸਚੁ ਪੂਜੀ ਨਾਮੁ ਦ੍ਰਿੜਾਇ ਪ੍ਰਭ ਵਣਜਾਰੇ ਥਾਰੇ ॥
sach poojee naam drirh-aa-ay parabh vanjaaray thaaray.
सचु पूजी नामु द्रिड़ाइ प्रभ वणजारे थारे ॥
अर्थ : हे प्रभु ! हमें सत्य नाम रूपी पूँजी द्रढ़ करवाओ, चूंकि हम तेरे ही वणजारे हैं।

ਸਚੁ ਸੇਵਹਿ ਸਚੁ ਵਣੰਜਿ ਲੈਹਿ ਗੁਣ ਕਥਹ ਨਿਰਾਰੇ ॥
sach sayveh sach vananj laihi gun kathah niraaray.
सचु सेवहि सचु वणंजि लैहि गुण कथह निरारे ॥
अर्थ : जो व्यक्ति सत्य नाम को जपते हैं, सत्य नाम का वणज करते हैं, वह गुणों का कथन करते हैं, वे दुनिया से निराले हैं।

ਸੇਵਕ ਭਾਇ ਸੇ ਜਨ ਮਿਲੇ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਸਵਾਰੇ ॥
sayvak bhaa-ay say jan milay gur sabad savaaray.
सेवक भाइ से जन मिले गुर सबदि सवारे ॥
अर्थ : जिन्होंने गुरु के शब्द द्वारा मन को संवार लिया है, वही व्यक्ति सेवक भावना वाले बनकर परमात्मा से जा मिले हैं।

ਤੂ ਸਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਅਲਖੁ ਹੈ ਗੁਰ ਸਬਦਿ ਲਖਾਰੇ ॥੧੪॥
too sachaa saahib alakh hai gur sabad lakhaaray. ||14||
तू सचा साहिबु अलखु है गुर सबदि लखारे ॥१४॥
अर्थ : हे प्रभु ! तू सच्चा साहिब अलक्ष्य है (परन्तु) गुरु के शब्द द्वारा ही तेरी सूझ होती है॥ १४॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-308

ਪਉੜੀ ॥ pa-orhee. पउड़ी ॥

ਕਾਇਆ ਕੋਟੁ ਅਪਾਰੁ ਹੈ ਅੰਦਰਿ ਹਟਨਾਲੇ ॥
kaa-i-aa kot apaar hai andar hatnaalay.
काइआ कोटु अपारु है अंदरि हटनाले ॥
अर्थ : काया रूपी किला अपार है, जिसके भीतर इन्द्रियां रूपी बाज़ार है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਉਦਾ ਜੋ ਕਰੇ ਹਰਿ ਵਸਤੁ ਸਮਾਲੇ ॥
gurmukh sa-udaa jo karay har vasat samaalay.
गुरमुखि सउदा जो करे हरि वसतु समाले ॥
अर्थ : जो गुरमुख इन्द्रियों रूपी बाजार में से नाम रूपी सौदा खरीदते हैं, वे भगवान की नाम रूपी वस्तु संभाल लेते हैं।

ਨਾਮੁ ਨਿਧਾਨੁ ਹਰਿ ਵਣਜੀਐ ਹੀਰੇ ਪਰਵਾਲੇ ॥
naam niDhaan har vanjee-ai heeray parvaalay.
नामु निधानु हरि वणजीऐ हीरे परवाले ॥
अर्थ : काया रूपी किले में ही ईश्वर के नाम के खजाने का वणज किया जा सकता है, यही सौदे साथ-साथ निभने वाले हीरे तथा मूंगे हैं।

ਵਿਣੁ ਕਾਇਆ ਜਿ ਹੋਰ ਥੈ ਧਨੁ ਖੋਜਦੇ ਸੇ ਮੂੜ ਬੇਤਾਲੇ ॥
vin kaa-i-aa je hor thai Dhan khojday say moorh baytaalay.
विणु काइआ जि होर थै धनु खोजदे से मूड़ बेताले ॥
अर्थ : जो व्यक्ति इस सौदे को काया के बिना किसी दूसरे स्थान पर खोजते हैं, वे मूर्ख हैं और मनुष्य काया में आए हुए भूत-प्रेत हैं।

ਸੇ ਉਝੜਿ ਭਰਮਿ ਭਵਾਈਅਹਿ ਜਿਉ ਝਾੜ ਮਿਰਗੁ ਭਾਲੇ ॥੧੫॥
say ujharh bharam bhavaa-ee-ah ji-o jhaarh mirag bhaalay. ||15||
से उझड़ि भरमि भवाईअहि जिउ झाड़ मिरगु भाले ॥१५॥
अर्थ : जैसे मृग कस्तूरी की सुगन्धि हेतु झाड़ियों को खोजता फिरता है, वैसे ही ऐसे मनुष्य भ्रम में फँसे हुए वनों में भटकते रहते हैं।॥ १५॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-313

ਮਃ ੪ ॥ mehlaa 4. मः ४ ॥

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵੀਐ ਆਪਣਾ ਪਾਈਐ ਨਾਮੁ ਅਪਾਰੁ ॥
satgur sayvee-ai aapnaa paa-ee-ai naam apaar.
सतिगुरु सेवीऐ आपणा पाईऐ नामु अपारु ॥
अर्थ : अपने सतिगुरु की सेवा करने से मनुष्य अपार नाम प्राप्त करता है।

ਭਉਜਲਿ ਡੁਬਦਿਆ ਕਢਿ ਲਏ ਹਰਿ ਦਾਤਿ ਕਰੇ ਦਾਤਾਰੁ ॥
bha-ojal dubdi-aa kadh la-ay har daat karay daataar.
भउजलि डुबदिआ कढि लए हरि दाति करे दातारु ॥
अर्थ : दाता गुरदेव ईश्वर के नाम की देन प्रदान करता है और डूबते हुए मनुष्य को भयानक संसार-सागर में से निकाल लेता है।

ਧੰਨੁ ਧੰਨੁ ਸੇ ਸਾਹ ਹੈ ਜਿ ਨਾਮਿ ਕਰਹਿ ਵਾਪਾਰੁ ॥
Dhan Dhan say saah hai je naam karahi vaapaar.
धंनु धंनु से साह है जि नामि करहि वापारु ॥
अर्थ : वह शाह धन्य-धन्य हैं जो ईश्वर के नाम का वणज करते हैं।

ਵਣਜਾਰੇ ਸਿਖ ਆਵਦੇ ਸਬਦਿ ਲਘਾਵਣਹਾਰੁ ॥

vanjaaray sikh aavday sabad laghaavanhaar.

वणजारे सिख आवदे सबदि लघावणहारु ॥

अर्थ : सिक्ख वणजारे आते हैं और सतिगुरु उन्हें शब्द द्वारा भवसागर से पार करवा देता है।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਜਿਨ ਕਉ ਕ੍ਰਿਪਾ ਭਈ ਤਿਨ ਸੇਵਿਆ ਸਿਰਜਣਹਾਰੁ ॥੨॥

jan naanak jin ka-o kirpaa bha-ee tin sayvi-aa sirjanhaar. ||2||

जन नानक जिन कउ क्रिपा भई तिन सेविआ सिरजणहारु ॥२॥

हे नानक ! सृजनहार प्रभु की सेवा-भक्ति वही मनुष्य करते हैं, जिस पर वह स्वयं कृपा करता है।२॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-442

ਮੇਰਾ ਠਾਕੁਰੋ ਠਾਕੁਰੁ ਨੀਕਾ ਅਗਮ ਅਥਾਹਾ ਰਾਮ ॥

mayraa thaakuro thaakur neekaa agam athaahaa raam.

मेरा ठाकुरो ठाकुरु नीका अगम अथाहा राम ॥

अर्थ : मेरा ठाकुर प्रभु सुन्दर है लेकिन वह अगम्य एवं अथाह सागर की भाँति है।

ਹਰਿ ਪੂਜੀ ਹਰਿ ਪੂਜੀ ਚਾਹੀ ਮੇਰੇ ਸਤਿਗੁਰ ਸਾਹਾ ਰਾਮ ॥

har poojee har poojee chaahee mayray satgur saahaa raam.

हरि पूजी हरि पूजी चाही मेरे सतिगुर साहा राम ॥

अर्थ : हे मेरे साहूकार सतिगुरु ! मैं तुझसे हरिप्रभु नाम की पूंजी माँगता हूँ। मैं हरिप्रभु-नाम की पूँजी को खरीदता हूँ और हरि-नाम का वणज करता हूँ।

ਹਰਿ ਪੂਜੀ ਚਾਹੀ ਨਾਮੁ ਬਿਸਾਹੀ ਗੁਣ ਗਾਵੈ ਗੁਣ ਭਾਵੈ ॥

har poojee chaahee naam bisaahee gun gaavai gun bhaavai.

हरि पूजी चाही नामु बिसाही गुण गावै गुण भावै ॥

अर्थ : मैं हरिप्रभु के गुण ही गाता रहता हूँ और हरिप्रभु के गुण ही मुझे भाते हैं।

ਨੀਦ ਭੂਖ ਸਭ ਪਰਹਰਿ ਤਿਆਗੀ ਸੁੰਨੇ ਸੁੰਨਿ ਸਮਾਵੈ ॥

need bhookh sabh parhar ti-aagee sunnay sunn samaavai.

नीद भूख सभ परहरि तिआगी सुंने सुंनि समावै ॥

अर्थ : मैंने निद्रा एवं भूख सब कुछ त्याग दिया है परन्तु एकाग्रता के साथ निर्गुण प्रभु में समाया रहता हूँ।

ਵਣਜਾਰੇ ਇਕ ਭਾਤੀ ਆਵਹਿ ਲਾਹਾ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਲੈ ਜਾਹੇ ॥

vanjaaray ik bhaatee aavahi laahaa har naam lai jaahay.

वणजारे इक भाती आवहि लाहा हरि नामु लै जाहे ॥

अर्थ : जब हरि-नाम के व्यापारी सत्संगति में बैठते हैं तो वे हरिप्रभु-नाम का लाभ कमा कर ले जाते हैं।

ਨਾਨਕ ਮਨੁ ਤਨੁ ਅਰਪਿ ਗੁਰ ਆਗੈ ਜਿਸੁ ਪ੍ਰਾਪਤਿ ਸੋ ਪਾਏ ॥੩॥

naanak man tan arap gur aagai jis paraapat so paa-ay. ||3||

नानक मनु तनु अरपि गुर आगै जिसु प्रापति सो पाए ॥३॥ रागु आसा छंत महला ४ घरु १

अर्थ : हे नानक ! अपना मन-तन गुरु के समक्ष अर्पित कर दे, जिस पर प्रभु किरपा करे तो वही प्रभु-नाम को प्राप्त करता है॥ ३॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-449

ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੪ ॥

aasaa mehlaa 4.

आसा महला ४ ॥

ਹਰਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਭਗਤਿ ਭੰਡਾਰ ਹੈ ਗੁਰ ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਸੇ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥

har amrit bhagat bhandaar hai gur satgur paasay raam raajay.

हरि अम्रित भगति भंडार है गुर सतिगुर पासे राम राजे ॥

अर्थ : गुरु सतिगुरु के पास अमृतमयी हरि-भक्ति का भण्डार विद्यमान है।

ਗੁਰੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਚਾ ਸਾਹੁ ਹੈ ਸਿਖ ਦੇਇ ਹਰਿ ਰਾਸੇ ॥

gur satgur sachaa saahu hai sikh day-ay har raasay.

गुरु सतिगुरु सचा साहु है सिख देइ हरि रासे ॥

अर्थ : गुरु सतिगुरु सच्चा साहूकार है, वही अपने सिक्खों को हरि-नाम रूपी पूंजी प्रदान करता है।

ਧਨੁ ਧੰਨੁ ਵਣਜਾਰਾ ਵਣਜੁ ਹੈ ਗੁਰੁ ਸਾਹੁ ਸਾਬਾਸੇ ॥

Dhan Dhan vanjaaraa vanaj hai gur saahu saabaasay.

धनु धंनु वणजारा वणजु है गुरु साहु साबासे ॥

अर्थ : वणजारे सिक्ख एवं उसका वणज धन्य-धन्य है, गुरु साहूकार को शाबाश है।

ਜਨੁ ਨਾਨਕੁ ਗੁਰੁ ਤਿਨ੍ਹੀ ਪਾਇਆ ਜਿਨ ਧੁਰਿ ਲਿਖਤੁ ਲਿਲਾਟਿ ਲਿਖਾਸੇ ॥੧॥

jan naanak gur tin[H]ee paa-i-aa jin Dhur likhat lilaat likhaasay.||1||

जनु नानकु गुरु तिन्ही पाइआ जिन धुरि लिखतु लिलाटि लिखासे ॥१॥

अर्थ : हे नानक ! गुरु को उन्होंने ही पाया है, जिनके मस्तक पर आदि से ही लेख लिखा होता है। १ ।

ਸਚੁ ਸਾਹੁ ਹਮਾਰਾ ਤੂੰ ਧਣੀ ਸਭੁ ਜਗਤੁ ਵਣਜਾਰਾ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥

ਸਚੁ ਸਾਹੁ ਹਮਾਰਾ ਤੂੰ ਧਣੀ ਸਭੁ ਜਗਤੁ ਵਣਜਾਰਾ ਰਾਮ ਰਾਜੇ ॥

सचु साहु हमारा तूं धणी सभु जगतु वणजारा राम राजे ॥

अर्थ : हे मेरे मालिक ! एक तू ही हमारा सच्चा साहूकार है। समूचा जगत तेरा वणजारा है।

ਸਭ ਭਾਂਡੇ ਤੁਧੈ ਸਾਜਿਆ ਵਿਚਿ ਵਸਤੁ ਹਰਿ ਥਾਰਾ ॥

sabh bhaaNday tuDhai saaji-aa vich vasat har thaaraa.

सभ भांडे तुधै साजिआ विचि वसतु हरि थारा ॥

अर्थ : हे प्रभु ! सभी जीव रूपी बर्तन तेरे द्वारा ही उत्पादित हैं। इनके भीतर तेरी ही आत्मा व्यापक है।

ਜੋ ਪਾਵਹਿ ਭਾਂਡੇ ਵਿਚਿ ਵਸਤੁ ਸਾ ਨਿਕਲੈ ਕਿਆ ਕੋਈ ਕਰੇ ਵੇਚਾਰਾ ॥

jo paavahi bhaaNday vich vasat saa niklai ki-aa ko-ee karay vaychaaraa.

जो पावहि भांडे विचि वसतु सा निकलै किआ कोई करे वेचारा ॥

अर्थ : जिस वस्तु को तुम बर्तन में डालते हो, केवल वही बाहर निकलती है अर्थात् जो पदार्थ तुम शरीरों में डालते हो, वही प्रगट होता है। कोई जीव बेचारा क्या कर सकता है ?

ਜਨ ਨਾਨਕ ਕਉ ਹਰਿ ਬਖਸਿਆ ਹਰਿ ਭਗਤਿ ਭੰਡਾਰਾ ॥੨॥

jan naanak ka-o har bakhsi-aa har bhagat bhandaaraa. ||2||

जन नानक कउ हरि बखसिआ हरि भगति भंडारा ॥२॥

अर्थ : हे हरि ! नानक को भी तूने अपनी भक्ति का भण्डार प्रदान किया है॥२॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-604

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੪ ਘਰੁ ੧

sorath mehlaa 4 ghar 1.

सोरठि महला ४ घरु १

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ik-oa^N^kaar satgur parsaad.

ੴ सतिगुर प्रसादि॥

अर्थ : अर्थ : ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਆਪੇ ਆਪਿ ਵਰਤਦਾ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਆਪਿ ਅਪਾਹੁ ॥

aapay aap varatdaa pi-aaraa aapay aap apaahu.

आपे आपि वरतदा पिआरा आपे आपि अपाहु ॥

अर्थ : प्यारा प्रभु स्वयं ही सब जीवों में व्याप्त है और स्वयं ही निर्लिप्त रहता है।

ਵਣਜਾਰਾ ਜਗੁ ਆਪਿ ਹੈ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਸਾਚਾ ਸਾਹੁ ॥

vanjaaraa jag aap hai pi-aaraa aapay saachaa saahu.

वणजारा जगु आपि है पिआरा आपे साचा साहु ॥

अर्थ : वह स्वयं ही जगत रूपी वणजारा है और स्वयं ही सच्चा साहूकार है।

ਆਪੇ ਵਣਜੁ ਵਾਪਾਰੀਆ ਪਿਆਰਾ ਆਪੇ ਸਚੁ ਵੇਸਾਹੁ ॥੧॥

aapay vanaj vapaaree-aa pi-aaraa aapay sach vaysaahu. ||1||

आपे वणजु वापारीआ पिआरा आपे सचु वेसाहु ॥१॥

अर्थ : वह प्यारा प्रभु स्वयं ही वाणिज्य एवं वणजारा है और स्वयं ही सच्ची रास-पूंजी है॥१॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-605

ਸੋਰਠਿ ਮਹਲਾ ੪ ॥

sora<u>th</u> mehlaa 4.

सोरठि महला ४ ॥

ਆਪੇ ਕੰਡਾ ਆਪਿ ਤਰਾਜੀ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪੇ ਤੋਲਿ ਤੋਲਾਇਆ ॥

aapay kandaa aap <u>t</u>araajee parab<u>h</u> aapay <u>t</u>ol <u>t</u>olaa-i-aa.

आपे कंडा आपि तराजी प्रभि आपे तोलि तोलाइआ ॥

अर्थ : प्रभु आप ही (तराजू का) कांटा है, आप ही तराजू है और उसने आप ही बाटों से जगत को तोला है।

ਆਪੇ ਸਾਹੁ ਆਪੇ ਵਣਜਾਰਾ ਆਪੇ ਵਣਜੁ ਕਰਾਇਆ ॥

aapay saahu aapay va<u>n</u>jaaraa aapay va<u>n</u>aj karaa-i-aa.

आपे साहु आपे वणजारा आपे वणजु कराइआ ॥

अर्थ : वह स्वयं ही साहूकार हैं, स्वयं ही वणजारा है और स्वयं ही वाणिज्य करवाता है।

ਆਪੇ ਧਰਤੀ ਸਾਜੀਅਨੁ ਪਿਆਰੈ ਪਿਛੈ ਟੰਕੁ ਚੜਾਇਆ ॥੧॥

aapay <u>Dh</u>ar<u>t</u>ee saajee-an pi-aarai pi<u>chh</u>ai tank char<u>h</u>aa-i-aa. ||1||

आपे धरती साजीअनु पिआरै पिछै टंकु चड़ाइआ ॥१॥

अर्थ : उस प्रियतम प्रभु ने आप ही धरती का निर्माण किया है और एक चार माशे के बाट से इसका वजन किया है॥१॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-720

ਹਰਿ ਆਪੇ ਸਾਹੁ ਸਰਾਫੁ ਰਤਨੁ ਹੀਰਾ ਹਰਿ ਆਪਿ ਕੀਆ ਪਾਸਾਰਾ ॥

har aapay saahu saraaf ratan heeraa har aap kee-aa paasaaraa.

हरि आपे साहु सराफु रतनु हीरा हरि आपि कीआ पासारा ॥

अर्थ : परमात्मा स्वयं ही साहूकार, स्वयं ही सर्राफ, स्वयं ही रत्न एवं स्वयं ही अनमोल हीरा है और उसने स्वयं ही सृष्टि का प्रसार किया हुआ है।

ਨਾਨਕ ਜਿਸੁ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰੇ ਸੁ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਵਿਹਾਝੇ ਸੋ ਸਾਹੁ ਸਚਾ ਵਣਜਾਰਾ ॥੨॥੪॥

naanak jis kirpaa karay so har naam vihaajhay so saahu sachaa vanjaaraa. ||2||4||

नानक जिसु क्रिपा करे सु हरि नामु विहाझे सो साहु सचा वणजारा ॥२॥४॥

अर्थ : हे नानक ! जिस पर वह अपनी कृपा करता है, वही हरि-नाम को खरीदता है और वही सच्चा साहूकार एवं सच्चा वणजारा है।२।४॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-1295

ਤੁਮ੍ਹ ਹਰਿ ਸਾਹ ਵਡੇ ਪ੍ਰਭ ਸੁਆਮੀ ਹਮ ਵਣਜਾਰੇ ਰਾਸਿ ਦੇਨ ॥

tumH har saah vaday parabh su-aamee ham vanjaaray raas dayn.

तुम्ह हरि साह वडे प्रभ सुआमी हम वणजारे रासि देन ॥

अर्थ : हे प्रभु ! एकमात्र तुम ही बड़े सौदागर हो, हम वणजारो को तुम ही राशि देते हो।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਕਉ ਦਇਆ ਪ੍ਰਭ ਧਾਰਹੁ ਲਦਿ ਵਾਖਰੁ ਹਰਿ ਹਰਿ ਲੇਨ ॥੪॥੨॥

jan naanak ka-o da-i-aa parabh Dhaarahu lad vaakhar har

har layn. ||4||2||

जन नानक कउ दइआ प्रभ धारहु लदि वाखरु हरि हरि लेन ॥४॥२॥ कानड़ा महला 4

अर्थ : नानक विनती करते हैं कि हे प्रभु ! दया करो, हम नाम का सौदा लाद कर ले जाएँ॥४॥२॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-1314

ਪਉੜੀ ॥ pa-orhee. पउड़ी ॥

ਰਾਮ ਨਾਮੁ ਵਖਰੁ ਹੈ ਊਤਮੁ ਹਰਿ ਨਾਇਕੁ ਪੁਰਖੁ ਹਮਾਰਾ ॥

raam naam vakhar hai ootam har naa-ik purakh hamaaraa.

राम नामु वखरु है ऊतमु हरि नाइकु पुरखु हमारा ॥

अर्थ : राम का नाम ही उत्तम वस्तु है और समूची सृष्टि का नायक ईश्वर हमारा मालिक है।

ਹਰਿ ਖੇਲੁ ਕੀਆ ਹਰਿ ਆਪੇ ਵਰਤੈ ਸਭੁ ਜਗਤੁ ਕੀਆ ਵਣਜਾਰਾ ॥

har <u>kh</u>ayl kee-aa har aapay var<u>t</u>ai sa<u>bh</u> jaga<u>t</u> kee-aa va<u>n</u>jaaraa.

हरि खेलु कीआ हरि आपे वरतै सभु जगतु कीआ वणजारा ॥

अर्थ : यह जगत-तमाशा ईश्वर ने रचा है, वह स्वयं ही कार्यशील है और समूचे जगत को उसने वणजारा बनाया हुआ है।

ਸਭ ਜੋਤਿ ਤੇਰੀ ਜੋਤੀ ਵਿਚਿ ਕਰਤੇ ਸਭੁ ਸਚੁ ਤੇਰਾ ਪਾਸਾਰਾ ॥

sabh jot tayree jotee vich kartay sabh sach tayraa paasaaraa.

सभ जोति तेरी जोती विचि करते सभु सचु तेरा पासारा ॥

अर्थ : हे कर्ता पुरुष ! सब में तेरी ज्योति विद्यमान है और सब ओर तेरा ही

सत्य रूप में प्रसार है।

ਸਭਿ ਧਿਆਵਹਿ ਤੁਧੁ ਸਫਲ ਸੇ ਗਾਵਹਿ ਗੁਰਮਤੀ ਹਰਿ ਨਿਰੰਕਾਰਾ ॥

sabh Dhi-aavahi tuDh safal say gaavahi gurmatee har nirankaaraa.

सभि धिआवहि तुधु सफल से गावहि गुरमती हरि निरंकारा ॥

अर्थ : हे निराकार ! सभी तेरा ध्यान करते हैं, गुरु-मतानुसार तेरा गुणगान कर अपना जीवन सफल करते हैं।

ਸਭਿ ਚਵਹੁ ਮੁਖਹੁ ਜਗੰਨਾਥੁ ਜਗੰਨਾਥੁ ਜਗਜੀਵਨੋ ਜਿਤੁ ਭਵਜਲ ਪਾਰਿ ਉਤਾਰਾ ॥੪॥

sabh chavahu mukhahu jagannaath jagannaath jagjeevano jit bhavjal paar utaaraa. ||4||

सभि चवहु मुखहु जगंनाथु जगंनाथु जगजीवनो जितु भवजल पारि उतारा ॥४॥

अर्थ : हे सभी भक्तजनो ! मुख से परमात्मा का भजन करो, वह जगत का मालिक, जगत का जीवन है, वही संसार-सागर से पार उतारने वाला है॥ ४॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-77

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੫ ॥

sireeraag mehlaa 5.

सिरीरागु महला ५ ॥

ਪਹਿਲੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣਿ ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਧਰਿ ਪਾਇਤਾ ਉਦਰੈ ਮਾਹਿ ॥

pahilai pahrai rain kai vanjaari-aa mitraa Dhar paa-itaa udrai maahi.

पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा धरि पाइता उदरै माहि ॥

अर्थ : हे मेरे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के प्रथम प्रहर में ईश्वर प्राणी की माता के उदर में डाल देता है।

ਦਸੀ ਮਾਸੀ ਮਾਨਸੁ ਕੀਆ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਕਰਿ ਮੁਹਲਤਿ ਕਰਮ ਕਮਾਹਿ ॥

dasee maasee maanas kee-aa vanjaari-aa mitraa kar muhlat karam kamaahi.

दसी मासी मानसु कीआ वणजारिआ मित्रा करि मुहलति करम कमाहि ॥

अर्थ : माता के उदर में ही प्रभु दस माह में उसे मनुष्य बना देता है। प्रभु उसे जीवन रूपी समय देता है और इस समय में प्राणी शुभ-अशुभ कर्म करता है।

ਮੁਹਲਤਿ ਕਰਿ ਦੀਨੀ ਕਰਮ ਕਮਾਣੇ ਜੈਸਾ ਲਿਖਤੁ ਧੁਰਿ ਪਾਇਆ ॥

muhlat kar deenee karam kamaanay jaisaa likhat Dhur paa-i-aa.

मुहलति करि दीनी करम कमाणे जैसा लिखतु धुरि पाइआ ॥

अर्थ : प्रभु यह जीवन-अवधि निर्धारित कर देता है। जीव के पूर्व जन्म के कर्मो अनुसार उसके माथे पर ऐसी किस्मत लिख दी जाती

है, जैसे वह कर्म करता है।

ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਭਾਈ ਸੁਤ ਬਨਿਤਾ ਤਿਨ ਭੀਤਰਿ ਪ੍ਰਭੂ ਸੰਜੋਇਆ ॥
maat pitaa bhaa-ee sut banitaa tin bheetar parabhoo sanjo-i-aa.
मात पिता भाई सुत बनिता तिन भीतरि प्रभू संजोइआ ॥
अर्थ : परमात्मा प्राणी को माता-पिता, भाई, पुत्र-पत्नी इत्यादि के संबंधों में बांध देता है।

ਕਰਮ ਸੁਕਰਮ ਕਰਾਏ ਆਪੇ ਇਸੁ ਜੰਤੈ ਵਸਿ ਕਿਛੁ ਨਾਹਿ ॥
karam sukaram karaa-ay aapay is jantai vas kichh naahi.
करम सुकरम कराए आपे इसु जंतै वसि किछु नाहि ॥
अर्थ : हरि स्वयं ही शुभ अथवा अशुभ कर्म प्राणी से करवाता है तथा प्राणी के अपने वश में कुछ नहीं।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਣੀ ਪਹਿਲੈ ਪਹਰੈ ਧਰਿ ਪਾਇਤਾ ਉਦਰੈ ਮਾਹਿ ॥੧॥
kaho naanak paraanee pahilai pahrai Dhar paa-itaa udrai maahi. ||1||
कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै धरि पाइता उदरै माहि ॥१॥
अर्थ : हे नानक ! जीवन रूपी रात्रि के प्रथम प्रहर में भगवान प्राणी को माता के उदर में डाल देता है ॥१॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-77

ਦੂਜੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣਿ ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਭਰਿ ਜੁਆਨੀ ਲਹਰੀ ਦੇਇ ॥
doojai pahrai rain kai vanjaari-aa mitraa bhar ju-aanee

lahree day-ay.

दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा भरि जुआनी लहरी देइ ॥

अर्थ : हे मेरे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के द्वितीय प्रहर में प्राणी की भरी जवानी नदी के समान काम, मोह और तृष्णा की तरंगों में बहती है।

ਬੁਰਾ ਭਲਾ ਨ ਪਛਾਣਈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਮਨੁ ਮਤਾ ਅਹੰਮੇਇ ॥

buraa bhalaa na pachhaan-ee vanjaari-aa mitraa man mataa ahamay-ay.

बुरा भला न पछाणई वणजारिआ मित्रा मनु मता अहमेइ ॥

अर्थ : हे मेरे वणजारे मित्र ! अहंकार में मदमस्त होने के कारण प्राणी बुरा-भला पहचानने में असमर्थ होता है।

ਬੁਰਾ ਭਲਾ ਨ ਪਛਾਣੈ ਪ੍ਰਾਣੀ ਆਗੈ ਪੰਥੁ ਕਰਾਰਾ ॥

buraa bhalaa na pachhaanai paraanee aagai panth karaaraa.

बुरा भला न पछाणै प्राणी आगै पंथु करारा ॥

अर्थ : प्राणी अच्छे-बुरे की पहचान नहीं करता और आगे बढ़ने का मार्ग उसके लिए अधिक कठोर है।

ਪੂਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਕਬਹੂੰ ਨ ਸੇਵਿਆ ਸਿਰਿ ਠਾਢੇ ਜਮ ਜੰਦਾਰਾ ॥

pooraa satgur kabahooN na sayvi-aa sir thaadhay jam jandaaraa.

पूरा सतिगुरु कबहूं न सेविआ सिरि ठाढे जम जंदारा ॥

अर्थ : वह सतिगुरु को पहचानकर उसकी सेवा में लीन नहीं होता और निर्दयी यमदूत उसके सिर पर (मृत्यु रूपी) दण्ड धारण किए खड़ा रहता है।

ਧਰਮ ਰਾਇ ਜਬ ਪਕਰਸਿ ਬਵਰੇ ਤਬ ਕਿਆ ਜਬਾਬੁ ਕਰੇਇ ॥

Dharam raa-ay jab pakras bavray tab ki-aa jabaab karay-i.

धरम राइ जब पकरसि बवरे तब किआ जबाबु करेइ ॥

अर्थ : हे मूर्ख मनुष्य ! जब धर्मराज तुझे पकड़कर पूछेगा? तुम उसको अपने कर्मों का क्या उत्तर दोगे?

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਦੂਜੈ ਪਹਰੈ ਪ੍ਰਾਣੀ ਭਰਿ ਜੋਬਨੁ ਲਹਰੀ ਦੇਇ ॥੨॥

kaho naanak doojai pahrai paraanee bhar joban lahree day-ay. ||2||

कहु नानक दूजै पहरै प्राणी भरि जोबनु लहरी देइ ॥२॥

अर्थ : हे नानक ! जीवन रूपी रात्रि के द्वितीय प्रहर में प्राणी की भरी जवानी नदी के समान काम, मोह एवं तृष्णा की तरंगों में बहती है॥२॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-77

ਤੀਜੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣਿ ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਬਿਖੁ ਸੰਚੈ ਅੰਧੁ ਅਗਿਆਨੁ ॥

teejai pahrai rain kai vanjaari-aa mitraa bikh sanchai anDh agi-aan.

तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा बिखु संचै अंधु अगिआनु ॥

अर्थ : हे मेरे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के तृतीय प्रहर में ज्ञानहीन, मुर्ख प्राणी विषय-वासनाओं का विष संग्रह करता है।

ਪੁਤ੍ਰਿ ਕਲਤ੍ਰਿ ਮੋਹਿ ਲਪਟਿਆ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਅੰਤਰਿ ਲਹਰਿ ਲੋਭਾਨੁ ॥

putir kaltir mohi lapti-aa vanjaari-aa mitraa antar lahar lobhaan.

पुत्रि कलत्रि मोहि लपटिआ वणजारिआ मित्रा अंतरि लहरि लोभानु ॥

अर्थ : वह अपने पुत्र एवं पत्नी के मोह में फँसा हुआ है और उसके मन में लोभ की लहरें उठती हैं।

ਅੰਤਰਿ ਲਹਰਿ ਲੋਭਾਨੁ ਪਰਾਨੀ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵੈ ॥

antar lahar lobhaan paraanee so parabh chit na aavai.

अंतरि लहरि लोभानु परानी सो प्रभु चिति न आवै ॥

अर्थ : मन में आकर्षक पदार्थों के लोभ की लहरें विद्यमान हैं। यह ईश्वर की ओर चित्त नहीं लगाता और ईश्वर-उपासना नहीं करता।

ਸਾਧਸੰਗਤਿ ਸਿਉ ਸੰਗੁ ਨ ਕੀਆ ਬਹੁ ਜੋਨੀ ਦੁਖੁ ਪਾਵੈ ॥

saaDhsangat si-o sang na kee-aa baho jonee dukh paavai.

साधसंगति सिउ संगु न कीआ बहु जोनी दुखु पावै ॥

अर्थ : वह सत्संग के साथ मेल-मिलाप नहीं करता और विभिन्न योनियों के अन्दर कष्ट सहन करता है।

ਸਿਰਜਨਹਾਰੁ ਵਿਸਾਰਿਆ ਸੁਆਮੀ ਇਕ ਨਿਮਖ ਨ ਲਗੋ ਧਿਆਨੁ ॥

sirjanhaar visaari-aa su-aamee ik nimakh na lago Dhi-aan.

सिरजनहारु विसारिआ सुआमी इक निमख न लगो धिआनु ॥

अर्थ : जगत् के सृजनहार स्वामी को उसने विस्मृत कर दिया है और वह एक क्षण मात्र भी अपनी वृत्ति प्रभु की तरफ नहीं लगाता।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਣੀ ਤੀਜੈ ਪਹਰੈ ਬਿਖੁ ਸੰਚੇ ਅੰਧੁ ਅਗਿਆਨੁ ॥੩॥

kaho naanak paraanee teejai pahrai bikh sanchay anDh agi-aan. ||3||

कहु नानक प्राणी तीजै पहरै बिखु संचे अंधु अगिआनु ॥३॥

अर्थ : हे नानक ! जीवन रूपी रात्रि के तृतीय प्रहर में अज्ञान में अंधा हुआ प्राणी विषय-वासनाओं का विष संचित करता रहता है।॥३॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-77-78

ਚਉਥੈ ਪਹਰੈ ਰੈਣਿ ਕੈ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਦਿਨੁ ਨੇੜੈ ਆਇਆ ਸੋਇ ॥

cha-uthai pahrai rain kai vanjaari-aa mitraa din nayrhai aa-i-aa so-ay.

चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा दिनु नेड़ै आइआ सोइ ॥

अर्थ : हे मेरे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के चतुर्थ प्रहर में मृत्यु का दिन निकट आ रहा है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ਤੂੰ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਤੇਰਾ ਦਰਗਹ ਬੇਲੀ ਹੋਇ ॥

gurmukh naam samaal too^N vanjaari-aa mitraa tayraa dargeh baylee ho-ay.

गुरमुखि नामु समालि तूं वणजारिआ मित्रा तेरा दरगह बेली होइ ॥

अर्थ : हे मेरे वणजारे मित्र ! तू सतिगुरु की शरण लेकर ईश्वर का नाम स्मरण कर, वह परलोक में तेरा एकमात्र सहारा होगा।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਮੁ ਸਮਾਲਿ ਪਰਾਣੀ ਅੰਤੇ ਹੋਇ ਸਖਾਈ ॥

gurmukh naam samaal paraanee antay ho-ay sakhaa-ee.

गुरमुखि नामु समालि पराणी अंते होइ सखाई ॥

अर्थ : हे प्राणी ! गुरु-उपदेशानुसार नाम को स्मरण कर और अंत में यही तेरा सखा होगा।

ਇਹੁ ਮੋਹੁ ਮਾਇਆ ਤੇਰੈ ਸੰਗਿ ਨ ਚਾਲੈ ਝੂਠੀ ਪ੍ਰੀਤਿ ਲਗਾਈ ॥

ih moh maa-i-aa tayrai sang na chaalai jhoothee pareet lagaa-ee.

इहु मोहु माइआ तेरै संगि न चालै झूठी प्रीति लगाई ॥

अर्थ : जिस मोह-माया के साथ तुमने लगन लगा रखी है, यह मिथ्या है, मृत्यु के समय यह तुम्हारा साथ नहीं देगी।

ਸਗਲੀ ਰੈਣਿ ਗੁਦਰੀ ਅੰਧਿਆਰੀ ਸੇਵਿ ਸਤਿਗੁਰੁ ਚਾਨਣੁ ਹੋਇ ॥

saglee rain gudree anDhi-aaree sayv satgur chaanan ho-ay.

सगली रैणि गुदरी अंधिआरी सेवि सतिगुरु चानणु होइ ॥

अर्थ : तेरी जीवन रूपी समूह रात्रि अज्ञानता के अंधेरे में बीत गई है, अब भी यदि सतिगुरु की शरण लेकर उनकी सेवा करोगे तो तेरे अंतर्मन में ज्ञान का प्रकाश उदय हो जाएगा।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਾਣੀ ਚਉਥੈ ਪਹਰੈ ਦਿਨੁ ਨੇੜੈ ਆਇਆ ਸੋਇ ॥੪॥

kaho naanak paraanee cha-uthai pahrai din nayrhai aa-i-aa so-ay. ||4||

कहु नानक प्राणी चउथै पहरै दिनु नेड़ै आइआ सोइ ॥४॥

अर्थ : हे नानक ! जीवन रूपी रात्रि के चतुर्थ प्रहर में मृत्यु-काल निकट आ रही है॥४॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-78

ਲਿਖਿਆ ਆਇਆ ਗੋਵਿੰਦ ਕਾ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਉਠਿ ਚਲੇ ਕਮਾਣਾ ਸਾਥਿ ॥

likhi-aa aa-i-aa govind kaa vanjaari-aa mitraa uth chalay

kamaanaa saath.

लिखिआ आइआ गोविंद का वणजारिआ मित्रा उठि चले कमाणा साथि ॥

अर्थ : हे मेरे वणजारे मित्र ! जब भगवान का सन्देश आ जाता है तो प्राणी इस दुनिया को छोड़कर चल देता है। उसके किए कर्म उसके साथ जाते हैं।

ਇਕ ਰਤੀ ਬਿਲਮ ਨ ਦੇਵਨੀ ਵਣਜਾਰਿਆ ਮਿਤ੍ਰਾ ਓਨੀ ਤਕੜੇ ਪਾਏ ਹਾਥ ॥

ik ratee bilam na dayvnee vanjaari-aa mitraa onee takrhay paa-ay haath.

इक रती बिलम न देवनी वणजारिआ मित्रा ओनी तकड़े पाए हाथ ॥

अर्थ : हे मेरे वणजारे मित्र ! वह एक क्षण की भी देरी नहीं करने देते। यमदूत नश्वर प्राणी को मजबूत हाथों से पकड़कर ले जाते हैं।

ਲਿਖਿਆ ਆਇਆ ਪਕੜਿ ਚਲਾਇਆ ਮਨਮੁਖ ਸਦਾ ਦੁਹੇਲੇ ॥

likhi-aa aa-i-aa pakarh chalaa-i-aa manmukh sadaa duhaylay.

लिखिआ आइआ पकड़ि चलाइआ मनमुख सदा दुहेले ॥

अर्थ : प्रभु का लिखित आदेश मिलते ही प्राणी को यमदूत संसार से अलग कर देते हैं। ऐसे में मनमुखी प्राणी सदा कष्ट सहन करते हैं।

ਜਿਨੀ ਪੂਰਾ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸੇਵਿਆ ਸੇ ਦਰਗਹ ਸਦਾ ਸੁਹੇਲੇ ॥

jinee pooraa satgur sayvi-aa say dargeh sadaa suhaylay.

जिनी पूरा सतिगुरु सेविआ से दरगह सदा सुहेले ॥

अर्थ : जो प्राणी पूर्ण सतिगुरु की भरपूर सेवा करते हैं, वे परमात्मा के दरबार में सदैव सुखी रहते हैं।

ਕਰਮ ਧਰਤੀ ਸਰੀਰੁ ਜੁਗ ਅੰਤਰਿ ਜੋ ਬੋਵੈ ਸੋ ਖਾਤਿ ॥

karam Dhartee sareer jug antar jo bovai so khaat.

करम धरती सरीरु जुग अंतरि जो बोवै सो खाति ॥

अर्थ : इस कलियुग में शरीर धरती रूप है। इस शरीर रूपी धरती में मनुष्य जो कर्म रूपी बीज बोता है, वह उसका वही फल प्राप्त करता है।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਭਗਤ ਸੋਹਹਿ ਦਰਵਾਰੇ ਮਨਮੁਖ ਸਦਾ ਭਵਾਤਿ ॥੫॥੧॥੪॥

kaho naanak bhagat soheh darvaaray manmukh sadaa bhavaat. ||5||1||4||

कहु नानक भगत सोहहि दरवारे मनमुख सदा भवाति ॥५॥१॥४॥

अर्थ : हे नानक ! भगवान के भक्त उसके दरबार में सुन्दर लगते हैं और मनमुख हमेशा ही जन्म-मरण के चक्र में पड़कर भटकते रहते हैं ॥५॥१॥४॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-181

ਮਹਲੁ ਸਾਹ ਕਾ ਕਿਨ ਬਿਧਿ ਪਾਵੈ ॥ ਕਵਨ ਸੁ ਬਿਧਿ ਜਿਤੁ ਭੀਤਰਿ ਬੁਲਾਵੈ ॥

mahal saah kaa kin biDh paavai. kavan so biDh jit bheetar bulaavai.

महलु साह का किन बिधि पावै ॥ कवन सु बिधि जितु भीतरि बुलावै ॥

अर्थ : किस विधि से मैं उस वणजारे के मन्दिर पहुँच सकता हूँ। वह कौन-सी विधि है जिस द्वारा वह मुझे अन्दर बुलवा ले ?

ਤੂੰ ਵਡ ਸਾਹੁ ਜਾ ਕੇ ਕੋਟਿ ਵਣਜਾਰੇ ॥ ਕਵਨੁ ਸੁ ਦਾਤਾ ਲੇ ਸੰਚਾਰੇ ॥੩॥

tooN vad saahu jaa kay kot vanjaaray. kavan so daataa lay sanchaaray. ||3||

तूं वड साहु जा के कोटि वणजारे ॥ कवनु सु दाता ले संचारे ॥३॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५

अर्थ : हे प्रभु! तू बड़ा वणजारा है, जिसके करोड़ों ही दुकानदार हैं। वह कौन-सा दाता है जो मुझे हाथ से पकड़ कर उसके मन्दिर में पहुँचा दे।३॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-217

ਰਤਨ ਪਦਾਰਥ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਤੁਮਾਰਾ ਜੀਉ ॥ ਤੂੰ ਸਚਾ ਸਾਹੁ ਭਗਤੁ ਵਣਜਾਰਾ ਜੀਉ ॥

ratan padaarath har naam tumaaraa jee-o. tooN sachaa saahu bhagat vanjaaraa jee-o.

रतन पदारथ हरि नामु तुमारा जीउ ॥ तूं सचा साहु भगतु वणजारा जीउ ॥

अर्थ : हे प्रभु ! तेरा नाम रत्नों का खजाना है तू सच्चा साहूकार है और तेरा भक्त तेरे नाम का वणजारा है।

ਹਰਿ ਧਨੁ ਰਾਸਿ ਸਚੁ ਵਾਪਾਰਾ ਜੀਉ ॥ ਜਨ ਨਾਨਕ ਸਦ ਬਲਿਹਾਰਾ ਜੀਉ ॥੪॥੩॥੧੬੮॥

har Dhan raas sach vaapaaraa jee-o. jan naanak sad balihaaraa jee-o. ||4||3||168||

हरि धनु रासि सचु वापारा जीउ ॥ जन नानक सद बलिहारा जीउ ॥४॥३॥१६८॥ गउड़ी माझ महला ५

अर्थ : जिस व्यक्ति के पास हरि-प्रभु नाम रूपी धन है उसका वणज ही सच्चा है। जन नानक सदैव ही प्रभु पर बलिहारी जाता है ॥४॥३॥१६८॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-399

ਨਾਮੁ ਧਨੁ ਗੁਣ ਗਾਉ ਲਾਭੁ ਪੂਰੈ ਗੁਰਿ ਦਿਤਾ ॥

naam Dhan gun gaa-o laabh poorai gur ditaa.

नामु धनु गुण गाउ लाभु पूरै गुरि दिता ॥

अर्थ : मैं नाम धन प्राप्त करने के लिए प्रभु के गुण गाता हूँ। पूर्ण गुरु ने मुझे नाम-धन का लाभ दिया है।

ਵਣਜਾਰੇ ਸੰਤ ਨਾਨਕਾ ਪ੍ਰਭੁ ਸਾਹੁ ਅਮਿਤਾ ॥੪॥੧੩॥੧੧੫॥

vanjaaray sant naankaa parabh saahu amitaa. ||4||13||115||

वणजारे संत नानका प्रभु साहु अमिता ॥४॥१३॥११५॥ आसा महला ५

अर्थ : हे नानक ! संतजन वणज हैं और अनन्त प्रभु उनका साहूकार है॥ ४॥ १३॥ ११५॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-430

ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਾਹੁ ਸਿਖ ਵਣਜਾਰੇ ॥ ਪੂੰਜੀ ਨਾਮੁ ਲੇਖਾ ਸਾਚੁ ਸਮ੍ਹਾਰੇ ॥੭॥

satgur saahu sikh vanjaaray. poonjee naam laykhaa saach sam^Haaray. ||7||

सतिगुरु साहु सिख वणजारे ॥ पूंजी नामु लेखा साचु सम्हारे ॥७॥ आसा काफी महला १, घरु ८ असटपदीआ

अर्थ : सतिगुरु नाम धन का शाह है और उसके शिष्य वणजारे हैं। पूँजी प्रभु का ही नाम है और परमात्मा की आराधना लेखा-जोखा है। ७ ॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-803

ਰਾਗੁ ਬਿਲਾਵਲੁ ਮਹਲਾ ੫ ਘਰੁ ੪
raag bilaaval mehlaa 5 ghar 4
रागु बिलावलु महला ५ घरु ४

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ik-oNkaar satgur parsaad. ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

ਏਕ ਰੂਪ ਸਗਲੋ ਪਾਸਾਰਾ ॥ ਆਪੇ ਬਨਜੁ ਆਪਿ ਬਿਉਹਾਰਾ ॥੧॥
ayk roop saglo paasaaraa. aapay banaj aap bi-uhaaraa. ||1||
एक रूप सगलो पासारा ॥ आपे बनजु आपि बिउहारा ॥१॥

अर्थ : यह समूचा जगत्-प्रसार एक ईश्वर का ही रूप है। वह स्वयं ही वाणिज्य है और स्वयं ही व्यवहार है॥ १ ॥

ਐਸੋ ਗਿਆਨੁ ਬਿਰਲੋ ਈ ਪਾਏ ॥ ਜਤ ਜਤ ਜਾਈਐ ਤਤ ਦ੍ਰਿਸਟਾਏ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
aiso gi-aan birlo ee paa-ay. jat jat jaa-ee-ai tat daristaa-ay. ||1|| rahaa-o.
ऐसो गिआनु बिरलो ई पाए ॥ जत जत जाईऐ तत द्रिसटाए ॥१॥ रहाउ ॥

अर्थ : ऐसा ज्ञान कोई विरला ही प्राप्त करता है। जहाँ-जहाँ भी जाते हैं, उधर ही वह नजर आता है ॥१॥ रहाउ ॥

ਅਨਿਕ ਰੰਗ ਨਿਰਗੁਨ ਇਕ ਰੰਗਾ ॥ ਆਪੇ ਜਲੁ ਆਪ ਹੀ ਤਰੰਗਾ ॥੨॥
anik rang nirgun ik rangaa. aapay jal aap hee tarangaa. ||2||
अनिक रंग निरगुन इक रंगा ॥ आपे जलु आप ही तरंगा ॥२॥

अर्थ : निर्गुण ईश्वर का एक रंग है किन्तु यह अनेक रंगों वाला बन गया है। वह स्वयं ही जल है और स्वयं ही तरंग है॥ २ ॥

ਆਪ ਹੀ ਮੰਦਰੁ ਆਪਹਿ ਸੇਵਾ ॥ ਆਪ ਹੀ ਪੂਜਾਰੀ ਆਪ ਹੀ ਦੇਵਾ ॥੩॥

aap hee mandar aapeh sayvaa. aap hee poojaaree aap hee dayvaa. ||3||

आप ही मंदरु आपहि सेवा ॥ आप ही पूजारी आप ही देवा ॥३॥

अर्थ : वह स्वयं ही मन्दिर है और स्वयं ही पूजा-अर्चना व स्तुति है। वह स्वयं ही पुजारी है और स्वयं ही देव है॥ ३॥

ਆਪਹਿ ਜੋਗ ਆਪ ਹੀ ਜੁਗਤਾ ॥ ਨਾਨਕ ਕੇ ਪ੍ਰਭ ਸਦ ਹੀ ਮੁਕਤਾ ॥੪॥੧॥੬॥

aapeh jog aap hee jugtaa. naanak kay parabh sad hee muktaa. ||4||1||6||

आपहि जोग आप ही जुगता ॥ नानक के प्रभ सद ही मुकता ॥४॥१॥६॥

अर्थ : वह स्वयं ही योग-विद्या है और स्वयं ही विधि है। नानक का प्रभु सदैव सब बन्धनों से मुक्त है॥ ४॥ १॥ ६ ॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-1211

ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥

saarag mehlaa 5.

सारग महला ५ ॥

ਅਬ ਮੋਹਿ ਧਨੁ ਪਾਇਓ ਹਰਿ ਨਾਮਾ ॥

ab mohi Dhan paa-i-o har naamaa.

अब मोहि धनु पाइओ हरि नामा ॥

अर्थ : अब हमने हरिनाम रूपी धन पा लिया है,

ਭਏ ਅਚਿੰਤ ਤ੍ਰਿਸਨ ਸਭ ਬੁਝੀ ਹੈ ਇਹੁ ਲਿਖਿਓ ਲੇਖੁ ਮਥਾਮਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

bha-ay achint tarisan sabh bujhee hai ih likhi-o laykh

mathaamaa. ||1|| rahaa-o.

भए अचिंत त्रिसन सभ बुझी है इहु लिखिओ लेखु मथामा ॥१॥ रहाउ ॥

अर्थ : अब हम बेफिक्र हो गए हैं, सारी तृष्णा बुझ गई है और यही भाग्य में लिखा हुआ था ॥१॥रहाउ॥।

ਖੋਜਤ ਖੋਜਤ ਭਇਓ ਬੈਰਾਗੀ ਫਿਰਿ ਆਇਓ ਦੇਹ ਗਿਰਾਮਾ ॥

khojat khojat bha-i-o bairaagee fir aa-i-o dayh giraamaa.

खोजत खोजत भइओ बैरागी फिरि आइओ देह गिरामा ॥

अर्थ : खोजते-खोजते वैराग्यवान हो गया था तो फिर शरीर रूपी गांव में भ्रमण किया।

ਗੁਰਿ ਕ੍ਰਿਪਾਲਿ ਸਉਦਾ ਇਹੁ ਜੋਰਿਓ ਹਥਿ ਚਰਿਓ ਲਾਲੁ ਅਗਾਮਾ ॥੧॥

gur kirpaal sa-udaa ih jori-o hath chari-o laal agaamaa. ||1||

गुरि क्रिपालि सउदा इहु जोरिओ हथि चरिओ लालु अगामा ॥१॥

अर्थ : गुरु की कृपा से यह सौदा किया और अमूल्य नाम रूपी हीरा मिल गया ॥१॥

ਆਨ ਬਾਪਾਰ ਬਨਜ ਜੋ ਕਰੀਅਹਿ ਤੇਤੇ ਦੂਖ ਸਹਾਮਾ ॥

aan baapaar banaj jo karee-ah taytay dookh sahaamaa.

आन बापार बनज जो करीअहि तेते दूख सहामा ॥

अर्थ : अन्य जितने भी वाणिज्य किए जाएँ, इनसे उतने दुख ही नसीब होते हैं।

ਗੋਬਿਦ ਭਜਨ ਕੇ ਨਿਰਭੈ ਵਾਪਾਰੀ ਹਰਿ ਰਾਸਿ ਨਾਨਕ ਰਾਮ ਨਾਮਾ ॥੨॥੧੨॥੩੫॥

gobid bhajan kay nirbhai vaapaaree har raas naanak raam naamaa. ||2||12||35||

गोबिद भजन के निरभै वापारी हरि रासि नानक राम नामा ॥२॥१२॥३५॥

अर्थ : नानक का मत है कि गोविन्द भजन का वणज करने वाले निर्भय हैं

और राम नाम ही उनकी जीवन राशि है ॥२॥ १२॥ ३५ ॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-1219

ਸਾਰਗ ਮਹਲਾ ੫ ॥

saarag mehlaa 5.

सारग महला ५ ॥

ਧਨਵੰਤ ਨਾਮ ਕੇ ਵਣਜਾਰੇ ॥

Dhanvant naam kay vanjaaray.

धनवंत नाम के वणजारे ॥

अर्थ : असल में हरिनाम के वणजारे ही धनवान हैं।

saa^N jhee karahu naam Dhan khaatahu gur kaa sabad veechaaray. ||1|| rahaa-o.

ਸਾਂਝੀ ਕਰਹੁ ਨਾਮ ਧਨੁ ਖਾਟਹੁ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਵੀਚਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

सांझी करहु नाम धनु खाटहु गुर का सबदु वीचारे ॥१॥ रहाउ ॥

अर्थ : इनके साथ मेल-मिलाप बनाकर हिस्सेदारी करो; और गुरु के उपदेश का चिन्तन करते हुए हरिनाम धन की कमाई करो।॥१॥रहाउ॥।

ਛੋਡਹੁ ਕਪਟੁ ਹੋਇ ਨਿਰਵੈਰਾ ਸੋ ਪ੍ਰਭੁ ਸੰਗਿ ਨਿਹਾਰੇ ॥

chhodahu kapat ho-ay nirvairaa so parabh sang nihaaray.

छोडहु कपटु होइ निरवैरा सो प्रभु संगि निहारे ॥

अर्थ : जो छल-कपट छोड़कर निर्वैर सज्जन बनकर रहता है, वह प्रभु को आसपास ही देखता है।

sach Dhan vanjahu sach Dhan sanchahu kabhoo na aavhu haaray. ||1||

ਸਚੁ ਧਨੁ ਵਣਜਹੁ ਸਚੁ ਧਨੁ ਸੰਚਹੁ ਕਬਹੂ ਨ ਆਵਹੁ ਹਾਰੇ ॥੧॥

सचु धनु वणजहु सचु धनु संचहु कबहू न आवहु हारे ॥१॥

अर्थ : वह सच्चे नाम धन का वणज करता है, सच्चा धन ही संचित करता, इस तरह कभी हार का मुँह नहीं देखता ॥१॥

ਖਾਤ ਖਰਚਤ ਕਿਛੁ ਨਿਖੁਟਤ ਨਾਹੀ ਅਗਨਤ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰੇ ॥

khaat kharchat kichh nikhutat naahee agnat bharay bhandaaray.

खात खरचत किछु निखुटत नाही अगनत भरे भंडारे ॥

अर्थ : हरिनाम के असंख्य ही भण्डार भरे हुए हैं, इसे खाने अथवा खर्च करने से कभी कमी नहीं आती।

ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਸੋਭਾ ਸੰਗਿ ਜਾਵਹੁ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਕੈ ਦੁਆਰੇ ॥੨॥੫੭॥੮੦॥

kaho naanak sobhaa sang jaavhu paarbarahm kai du-aaray. ||2||57||80||

कहु नानक सोभा संगि जावहु पारब्रहम कै दुआरे ॥२॥५७॥८०॥

अर्थ : हे नानक ! इस तरह शोभा प्राप्त कर परमात्मा के दर पर प्रवाण होते है ॥२॥५७॥८०॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-1426

ਤਿਹਟੜੇ ਬਾਜਾਰ ਸਉਦਾ ਕਰਨਿ ਵਣਜਾਰਿਆ ॥

ਸਚੁ ਵਖਰੁ ਜਿਨੀ ਲਦਿਆ ਸੇ ਸਚੜੇ ਪਾਸਾਰ ॥੧੭॥

tihtarhay baajaar sa-udaa karan vanjaari-aa.
sach vakhar jinee ladi-aa say sachrhay paasaar. ||17||

तिहटड़े बाजार सउदा करनि वणजारिआ ॥

सचु वखरु जिनी लदिआ से सचड़े पासार ॥१७॥ सलोक महला 5

अर्थ : लोग त्रिगुणात्मक माया के बाजार में जीवन का सौदा करते हैं। दरअसल वही सच्चे वणजारे कहलाने के हकदार हैं, जिन्होंने सच्च रूपी सच्चा सौदा लाद लिया है॥17॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-345

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ik-oNkaar satgur parsaad.

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अर्थ : ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਗਉੜੀ ਬੈਰਾਗਣਿ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀਉ ॥

ga-orhee bairaagan ravidaas jee-o.

गउड़ी बैरागणि रविदास जीउ ॥

अर्थ : गउड़ी बैरागणि रविदास जीउ ॥

ਘਟ ਅਵਘਟ ਡੂਗਰ ਘਣਾ ਇਕੁ ਨਿਰਗੁਣੁ ਬੈਲੁ ਹਮਾਰ ॥

ghat avghat doogar ghanaa ik nirgun bail hamaar.

घट अवघट डूगर घणा इकु निरगुणु बैलु हमार ॥

अर्थ : प्रभु का मार्ग बड़ा विषम एवं पहाड़ी है और मेरा बैल निर्गुण (छोटा-सा) है।

ਰਮਈਏ ਸਿਉ ਇਕ ਬੇਨਤੀ ਮੇਰੀ ਪੂੰਜੀ ਰਾਖੁ ਮੁਰਾਰਿ ॥੧॥

ram-ee-ay si-o ik bayntee mayree poonjee raakh muraar. ||1||

रमईए सिउ इक बेनती मेरी पूंजी राखु मुरारि ॥१॥

अर्थ : प्रियतम प्रभु के समक्ष मेरी वन्दना है-हे मुरारी ! मेरी पूँजी की तुम स्वयं रक्षा करना॥ १॥

ਕੋ ਬਨਜਾਰੋ ਰਾਮ ਕੋ ਮੇਰਾ ਟਾਂਡਾ ਲਾਦਿਆ ਜਾਇ ਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥

ko banjaaro raam ko mayraa taaNdaa laadi-aa jaa-ay ray. ||1|| rahaa-o.

को बनजारो राम को मेरा टांडा लादिआ जाइ रे ॥१॥ रहाउ ॥

अर्थ : क्या कोई राम का व्यापारी है, जो मेरे साथ मिलकर चले ? मेरा माल (नाम-धन) भी लदा हुआ जा रहा है॥ १॥ रहाउ॥

ਹਉ ਬਨਜਾਰੋ ਰਾਮ ਕੋ ਸਹਜ ਕਰਉ ਬੵਾਪਾਰੁ ॥

ha-o banjaaro raam ko sahj kara-o ba-yaapaar.

हउ बनजारो राम को सहज करउ ब्यापारु ॥

अर्थ : मैं राम का व्यापारी हूँ और सहज ही ज्ञान का व्यापार करता हूँ।

ਮੈ ਰਾਮ ਨਾਮ ਧਨੁ ਲਾਦਿਆ ਬਿਖੁ ਲਾਦੀ ਸੰਸਾਰਿ ॥੨॥

mai raam naam Dhan laadi-aa bikh laadee sansaar. ||2||

मै राम नाम धनु लादिआ बिखु लादी संसारि ॥२॥

अर्थ : मैंने राम के नाम का पदार्थ लादा है परन्तु संसार ने माया-रूपी विष का व्यापार किया है ॥ २ ॥

ਉਰਵਾਰ ਪਾਰ ਕੇ ਦਾਨੀਆ ਲਿਖਿ ਲੇਹੁ ਆਲ ਪਤਾਲੁ ॥

urvaar paar kay daanee-aa likh layho aal pataal.

उरवार पार के दानीआ लिखि लेहु आल पतालु ॥

अर्थ : प्राणियों के लोक–परलोक के सभी कर्म जानने वाले हे चित्रगुप्त ! मेरे बारे में जो तुम्हारा मन करे लिख लेना अर्थात् यमराज के पास उपस्थित करने हेतु मेरे कार्यों में तुम्हें कुछ भी नहीं मिलेगा,

ਮੋਹਿ ਜਮ ਡੰਡੁ ਨ ਲਾਗਈ ਤਜੀਲੇ ਸਰਬ ਜੰਜਾਲ ॥੩॥

mohi jam dand na laag-ee tajeelay sarab janjaal. ||3||

मोहि जम डंडु न लागई तजीले सरब जंजाल ॥३॥

अर्थ : क्योंकि ईश्वर की दया से मैंने समस्त जंजाल छोड़ दिए हुए हैं,

इसलिए मुझे यम का दण्ड नहीं मिलेगा ॥ ३॥

ਜੈਸਾ ਰੰਗੁ ਕਸੁੰਭ ਕਾ ਤੈਸਾ ਇਹੁ ਸੰਸਾਰੁ ॥

jaisaa rang kasumbh kaa taisaa ih sansaar.

जैसा रंगु कसुमभ का तैसा इहु संसारु ॥

अर्थ : हे चमार रविदास ! कहो-जैसे जैसे मैं प्रभु-नाम का व्यापार कर रहा हूँ, मेरी आस्था हो रही है कि यह दुनिया ऐसे है जैसे कुसुंभड़े का रंग

ਮੇਰੇ ਰਮਈਏ ਰੰਗੁ ਮਜੀਠ ਕਾ ਕਹੁ ਰਵਿਦਾਸ ਚਮਾਰ ॥੪॥੧॥

mayray ram-ee-ay rang majeeth kaa kaho ravidaas chamaar. ||4||1||

मेरे रमईए रंगु मजीठ का कहु रविदास चमार ॥४॥१॥

अर्थ : और मेरे प्रियतम प्रभु का नाम रंग इस तरह है जिस तरह मजीठ का रंग॥ ४॥ १ ॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-333

ਗਉੜੀ ॥ ga-orhee. गउड़ी ॥

ਪਾਪੁ ਪੁੰਨੁ ਦੁਇ ਬੈਲ ਬਿਸਾਹੇ ਪਵਨੁ ਪੂਜੀ ਪਰਗਾਸਿਓ ॥
paap punn du-ay bail bisaahay pavan poojee pargaasi-o.
पापु पुंनु दुइ बैल बिसाहे पवनु पूजी परगासिओ ॥
अर्थ : पाप एवं पुण्य दोनों से शरीर रूपी बैल मूल्य लिया गया है और प्राण पूंजी के तौर पर प्रकट हुए हैं।

ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਗੂਣਿ ਭਰੀ ਘਟ ਭੀਤਰਿ ਇਨ ਬਿਧਿ ਟਾਂਡ ਬਿਸਾਹਿਓ ॥੧॥
tarisnaa goon bharee ghat bheetar in biDh taaNd bisaahi-o. ||1||
त्रिसना गूणि भरी घट भीतरि इन बिधि टांड बिसाहिओ ॥१॥
अर्थ : इस विधि से बैल खरीदा गया है। बैल की पीठ पर हृदय की बोरी तृष्णाओं से भरी हुई है॥ १॥

ਐਸਾ ਨਾਇਕੁ ਰਾਮੁ ਹਮਾਰਾ ॥ ਸਗਲ ਸੰਸਾਰੁ ਕੀਓ ਬਨਜਾਰਾ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
aisaa naa-ik raam hamaaraa. sagal sansaar kee-o banjaaraa. ||1|| rahaa-o.
ऐसा नाइकु रामु हमारा ॥ सगल संसारु कीओ बनजारा ॥१॥ रहाउ ॥
अर्थ : हमारा राम ऐसा धनी साहूकार है, जिसने सारी दुनिया को अपना व्यापारी बनाया हुआ है॥ १॥ रहाउ॥

ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਦੁਇ ਭਏ ਜਗਾਤੀ ਮਨ ਤਰੰਗ ਬਟਵਾਰਾ ॥
kaam kroDh du-ay bha-ay jagaatee man tarang batvaaraa.
कामु क्रोधु दुइ भए जगाती मन तरंग बटवारा ॥
अर्थ : काम और क्रोध दोनों (प्राणियों के पथ पर चुंगी वसूलने वाले हैं)

अर्थात् श्वासों की पूंजी का कुछ भाग काम एवं क्रोध में फॅसने से नष्ट होता जा रहा है और प्राणियों के मन की तरंगें लुटेरे हैं।

ਪੰਚ ਤਤੁ ਮਿਲਿ ਦਾਨੁ ਨਿਬੇਰਹਿ ਟਾਂਡਾ ਉਤਰਿਓ ਪਾਰਾ ॥੨॥
panch tat mil daan nibayreh taaNdaa utri-o paaraa. ||2||
पंच ततु मिलि दानु निबेरहि टांडा उतरिओ पारा ॥२॥

अर्थ : पाँच विकार (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) मिलकर लूट के माल को आपस में बाँट लेते हैं। इस प्रकार बैल पार हो जाता है।॥ २॥

ਕਹਤ ਕਬੀਰੁ ਸੁਨਹੁ ਰੇ ਸੰਤਹੁ ਅਬ ਐਸੀ ਬਨਿ ਆਈ ॥
kahat kabeer sunhu ray santahu ab aisee ban aa-ee.
कहत कबीरु सुनहु रे संतहु अब ऐसी बनि आई ॥

अर्थ : कबीर जी कहते हैं-हे संतजनों! सुनो, अब ऐसी अवस्था आ बनी है कि

ਘਾਟੀ ਚਢਤ ਬੈਲੁ ਇਕੁ ਥਾਕਾ ਚਲੋ ਗੋਨਿ ਛਿਟਕਾਈ ॥੩॥੫॥੪੯॥
ghaatee chadhat bail ik thaakaa chalo gon chhitkaa-ee. ||3||5||49||
घाटी चढत बैलु इकु थाका चलो गोनि छिटकाई ॥३॥५॥४९॥

अर्थ : (प्रभु-स्मरण-रूपी) ऊँची पहाड़ी पर चढ़ते एक बैल थक गया है और तृष्णा का सौदा फॅककर वह अपनी यात्रा पर चलता बना है॥ ३॥ ५॥ ४६॥

गुरु ग्रंथ साहिब अंग-1194

ਨਾਇਕੁ ਏਕੁ ਬਨਜਾਰੇ ਪਾਚ ॥ ਬਰਧ ਪਚੀਸਕ ਸੰਗੁ ਕਾਚ ॥
naa-ik ayk banjaaray paach. baraDh pacheesak sang kaach.
नाइकु एकु बनजारे पाच ॥ बरध पचीसक संगु काच ॥

अर्थ : जीवात्मा रूपी एक मुखिया के ज्ञानेन्द्रियाँ रूपी पाँच व्यापारी हैं। बैल

रूप में प्रकृतियाँ हैं, जिनका साथ कच्चा है।

ਨਉ ਬਹੀਆਂ ਦਸ ਗੋਨਿ ਆਹਿ ॥ ਕਸਨਿ ਬਹਤਰਿ ਲਾਗੀ ਤਾਹਿ ॥੧॥
na-o bahee-aaN das gon aahi. kasan bahtar laagee taahi. ||1||
नउ बहीआं दस गोनि आहि ॥ कसनि बहतरि लागी ताहि ॥१॥
गोलकों के रूप में नौ बहियाँ हैं, दस इन्द्रियाँ बोरियाँ हैं और इसको कसने के लिए बहतर नाड़ियाँ भी जुड़ी हुई हैं।॥१॥

ਮੋਹਿ ਐਸੇ ਬਨਜ ਸਿਉ ਨਹੀਨ ਕਾਜੁ ॥ ਜਿਹ ਘਟੈ ਮੂਲੁ ਨਿਤ ਬਢੈ ਬਿਆਜੁ ॥ ਰਹਾਉ ॥
mohi aisay banaj si-o naheen kaaj.jih ghatai mool nit badhai bi-aaj. rahaa-o.
मोहि ऐसे बनज सिउ नहीन काजु ॥ जिह घटै मूलु नित बढै बिआजु॥रहाउ॥
अर्थ : मेरा ऐसा व्यापार करने से कोई वास्ता नहीं, जिसे करने से मूलधन घट जाए और ब्याज में नित्य बढ़ौत्तरी हो।॥रहाउ॥।

ਸਾਤ ਸੂਤ ਮਿਲਿ ਬਨਜੁ ਕੀਨ ॥ ਕਰਮ ਭਾਵਨੀ ਸੰਗ ਲੀਨ ॥
saat soot mil banaj keen. karam bhaavnee sang leen.
सात सूत मिलि बनजु कीन ॥ करम भावनी संग लीन ॥
अर्थ : दरअसल इन व्यापारियों ने साथ मिलकर बहुत प्रकार के सूतों (विकारों) का व्यापार कर लिया है और अपने कृत कर्मो को साथ ले लिया है।

ਤੀਨਿ ਜਗਾਤੀ ਕਰਤ ਰਾਰਿ ॥ ਚਲੋ ਬਨਜਾਰਾ ਹਾਥ ਝਾਰਿ ॥੨॥
teen jagaatee karat raar. chalo banjaaraa haath jhaar. ||2||
तीनि जगाती करत रारि ॥ चलो बनजारा हाथ झारि ॥२॥
अर्थ : तीन गुण भी बहुत हंगामा करते हैं, अंततः पाँच व्यापारी हाथ झाड़कर चल पड़ते हैं।॥२॥

ਪੂੰਜੀ ਹਿਰਾਨੀ ਬਨਜੁ ਟੂਟ ॥ ਦਹ ਦਿਸ ਟਾਂਡੋ ਗਇਓ ਫੂਟਿ ॥
poonjee hiraanee banaj toot. dah dis taaNdo ga-i-o foot.

पूंजी हिरानी बनजु टूट ॥ दह दिस टांडो गइओ फूटि ॥

अर्थ : जब साँसों की पूंजी छीन ली जाती है, तब व्यापार टूट जाता है और मनुष्य का काफिला दसों दिशाओं में तितर वितर हो जाता है।

ਕਹਿ ਕਬੀਰ ਮਨ ਸਰਸੀ ਕਾਜ ॥ ਸਹਜ ਸਮਾਨੋ ਤ ਭਰਮ ਭਾਜ ॥੩॥੬॥

kahi kabeer man sarsee kaaj. sahj samaano ta bharam bhaaj. ||3||6||

कहि कबीर मन सरसी काज ॥ सहज समानो त भरम भाज ॥३॥६॥

अर्थ : कबीर जी कहते हैं कि हे मन ! तेरा काम तभी सिद्‌ध होगा, अगर तू सहजावस्था में लीन होगा, इस तरह तेरा भ्रम भी दूर हो जाएगा ॥ ३ ॥ ६ ॥

अरदास

गुरु अर्जन साहिब

गउड़ी सुखमनी म:-5

तू ठाकुरु तुम पहि अरदासि॥
जीउ पिंडु सभु तेरी रासि॥
तुम मात पिता हम बारिक तेरे॥
तुमरी क्रिपा महि सूख घनेरे॥
कोइ न जानै तुमरा अंतु॥
ऊचे ते ऊचा भगवंत॥
सगल समग्री तुमरै सूत्रि धारी॥
तुम ते होइ सु आगिआकारी॥
तुमरी गति मिति तुम ही जानी॥
नानक दास सदा कुरबानी॥

(अंग साहिब-268)

हरियाणा पंजाबी साहित्य अकादमी
आई. पी. 16, सैक्टर 14, पंचकूला (हरियाणा)
0172–2972071, 2577798, ईमेल : hpsaa55@gmail.com
वेबसाइट : haryanapunjabisahityaacademy.com
9788195500079
Rs. 100